वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

जुलाई 2017

अंदर पढ़े ...

- निरीश्वरवाद और अन्य निकटवर्ती सिद्धांत
- प्रेत देवता...
- धर्म और पहचान
- धरती की कहानी
- एवं अन्य स्थाई सतम्भ

20/-

हम किसी के पांवों पर गिर कर जीने की बजाय, अपने पांवों पर खडें होकर मरना पसंद करेंगे ... फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट

अंधी वतन परस्ती हमको किस रस्ते ले जायेगी

गौहर रज़ा

धर्म में लिपटी वतन परस्ती क्या क्या स्वांग रचायेगी
मसली कलियां, झुलसा गुलशन, ज़र्द खिज़ां दिखलायेगी

यूरोप तो जिस वहशत से अब भी सहमा–सहमा रहता है
खतरा है यह वहशत मेरे मुल्क में आग लगायेगी

जर्मन गैसकदों से अब तक खून की बदबू आती है
अंधी वतन परस्ती हम को उस रस्ते ले जायेगी

अंधे कुंए मे झूठ की नाव तेज़ चली थी मान लिया
लेकिन बाहर रौशन दुनिया तुम से सच बुलवायेगी

नफ़रत में जो पले बढ़े हैं, नफरत में जो खेले हैं
नफ़रत देखी आग–आगे, उनसे क्या करवायेगी

फ़नकारों से पूछ रहे हो क्यों लौटा आये हैं सम्मान
पूछो, कितने चुप बैठे हैं, शर्म उन्हें कब आयेगी

यह मत खाओ, वह मत पहनो, इश्क तो बिल्कुल करना मत
देश द्रोह की छाप तुम्हारे ऊपर भी लग जायेगी

यह मत भूलो अगली नस्ल रौशन शोला होती हैं
आग कुरेदोगे चिंगारी दामन तक तो आयेगी

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क जमा कराते समय 1000 रूपये तक 50 रूपये अतिरिक्त जमा करवायें। और अपना पता मोबाईल 9416036203 पर एस.एम.एस करें।

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

Email: baldevmehrok@gmail.com

संपादक :

आर.पी. गांधी - 93154-46140

संपादक सहयोग :-

बलवन्त सिंह - 94163-24802

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203

अनुपम राजपुरा - 94683-89373

बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला

Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पताः

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं. 1062, आदर्श नगर,

नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।

जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)

Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

http://tarksheelblog.wordpress.com

पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:

www.tarksheel.org

Tarksheel on Whatsapp : 9416036203

Tarksheel Mobile App :

Readwhere.com

Tarksheel on Twitter:

@gurmeeteditor

अंधी वतन परस्ती हमको किस रस्ते ले जायेगी

-गौहर रज़ा

धर्म में लिपटी वतन परस्ती क्या क्या स्वांग रचायेगी
मसली कलियां, झुलसा गलशन, ज़र्द खिज़ां दिखलायेगी
यूरोप तो जिस वहशत से अब भी सहमा-सहमा रहता है
खतरा है यह वहशत मेरे मुल्क में आग लगायेगी
जर्मन गैसकदों से अब तक खून की बदबू आती है
अंधी वतन परस्ती हम को उस रस्ते ले जायेगी
अंधे कुंए मे झूठ की नाव तेज़ चली थी मान लिया
लेकिन बाहर रौशन दुनिया तुम से सच बुलवायेगी
नफ़रत में जो पले बढ़े हैं, नफरत में जो खेले हैं
नफ़रत देखी आग-आगे, उनसे क्या करवायेगी
फ़नकारों से पूछ रहे हो क्यों लौटा आये हैं सम्मान
पूछो, कितने चुप बैठे हैं, शर्म उन्हें कब आयेगी
यह मत खाओ, वह मत पहनो, इश्क तो बिल्कुल करना मत
देश द्रोह की छाप तुम्हारे ऊपर भी लग जायेगी
यह मत भूलो अगली नस्ल रौशन शोला होती हैं
आग कुरेदोगे चिंगारी दामन तक तो आयेगी

●●●

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. **30191855465 IFSC: SBIN 0002420** में जमा करा सकते है। शुल्क कैश रूप में जमा कराते समय 1000 रूपये तक 50 रूपये अतिरिक्त जमा करवायें। और अपना पता मोबाईल 9416036203 पर एस.एम.एस करें।

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंगः

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

Email: baldevmehrok@gmail.com

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक :
आर.पी. गांधी- 93154-46140

संपादक सहयोग :-
बलवन्त सिंह- 94163-24802
गुरमीत सिंह अम्बाला- 94160-36203
बलबीर चंद लोंगोवाल-98153-17028
हेम राज स्टेनो- 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-
वार्षिक : 100/- रू.
विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :
गुरमीत अम्बाला
Email:tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पताः
बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं. 1062, आदर्श नगर, नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली ।
जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)
Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिएः
www.facebook.com/tarksheelindia
Tarksheel on twitter@gurmeeteditor
Tarksheel on Whatsapp, : 94160 36203

पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉगऑन करेंः www.tarksheel.org, http://tarksheelblog.wordpress.com
Tarksheel on Mobile App: Readwhere.com

संकेतिका

विशेष लेख : **पृष्ठ संख्या**

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक बैठक करनाल में दिनांक **10-09-2017**, दिन रविवार को प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

डा.परमानन्दः 9813789363
बलबीर नरूखेड़ी- 8950483855

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

संपादकीय

10वीं और 12वीं श्रेणी के नतीजों की घोषणा के पश्चात् फेल होने वाले विद्यार्थियों में से कुछ ने फांसी लगाकर या गाड़ी के नीचे आकर या जहरीली वस्तु निगल कर खुदकशियों ने हमारे समूचे शिक्षा प्रबंध को स्वालों के घेरे में ला खड़ा किया है। ये मौतें अत्यंत दुखदायी हैं। इन आत्महत्याओं ने समाज, संवेदनशील अध्यापकों और अभिभावकों को बुरी तरह से झंझोड़ कर रख दिया है। ..और साथ ही शुरू हुआ है एक आरोपों का सिलिसिला। अभिभावको पर यह ऊँगली उठ रही है कि वे अपनी बड़ी-बड़ी इच्छाएं जैसे कि 'उनका बच्चा डॉक्टर, इंजीनियर या बड़ा अफसर बने' बच्चों की रुचियों और सामर्थ्यो को दरकिनार करके उन पर लाद रहे हैं। दूसरी ओर अध्यापकों को कोसा जा रहा है कि वे सारे पाठ्यक्रम को भी ईमानदारी से नहीं पढ़ाते, बच्चों को एक अच्छा इनसान तो क्या बनाना है। बहुत सारे अध्यापकों के सहृदय होना या कुछ का इस तरह होना कोई अनोखा व्यवहार नहीं।

जिस व्यवस्था में हम जी रहे हैं, उससे उत्पन्न समस्याओं से अनेक व्यक्ति शिकार हुए हैं जिनमें अध्यापक भी शामिल हैं। वास्तव में दोषी वह व्यवस्था है जो विद्यार्थियों में लगतार बढ़ रही ऐसी प्रवृतियों के लिये जिम्मेवार है। इस व्यवस्था का अन्य कोई सामाजिक सरोकार नहीं, केवल और केवल 'मुनाफा' है। विद्यार्थियों को बड़े-बड़े 'पैकेज' के सपने दिखाये जाते हैं। जिनके पीछे बच्चे भी दौड़ रहे हैं, और अभिभावक भी। विशलेषण करके देखा जाये तो ऐसे बड़े पैकेज ये कंपनियां कितने को देती हैं। एक प्रतिशत से भी कम और वह भी केवल उनको जो कंपनी के लिए करोड़ों कमा कर दे सकते हैं। बाकी के लिए वेतन हजार के अंकों में ही होता है। पाठ्यक्रमों में कुछ भी ऐसा नहीं जो जीवन की प्रश्न सामने रखता हो, और जो हर व्यवहार बारे वैज्ञानिक ढंग से सोचने बारे बताता हो। परीक्षा में प्राप्त अंको को जीवन की सफलता/असफलता का मापदंड मानना तर्कसंगत नही है। इतिहास ऐसे अनगिनत उदाहरणों से भरा पड़ा है जब औपचारिक शिक्षा में फेल हुए विद्याथियों ने किसी विशेष क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखाई और अपना नाम विश्व पटल पर रौशन किया।

औपचारिक शिक्षा तो हमें देती ही कुछ नहीं। हां रोटी तक पहुंचने के लिए इसकी प्रप्ति विवश जरूर करती है। विद्यार्थियो के 'सर्वागीण विकास' के प्रश्न से शिक्षा भटका दी गई है और विद्यार्थियों को 'नंबरो की दौड़' में उलझाया जा रहा है। शिक्षा से अभिभावक/विद्यार्थियों का लाखों का खर्च करवा कर रोजगार के लिए विवश किया जाता है।

हमारे बंटे हुए समाज में सत्तासीन वर्ग अपने हितों के अनुकूल ही कक्षाओं में शिक्षा देती है। वर्तमान शिक्षा विद्यार्थियों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के योग्य नहीं बना रही और न ही सही अर्थो में उनका बौद्धिक विकास कर रही है। उनको केवल एक 'मशीन' में तबदील कर रही है। शिक्षा का पूरी तरह से हो रहा व्यवसायीकरण बचे-खुचे, छोटे-मोटे

शेष पृष्ठ 35 पर देखें....

निरीश्वरवाद और अन्य निकटवर्ती सिद्धांत

–डा. रणजीत

निरीश्वरवाद के निकट के इन सिद्धांतों में संशयवाद, अज्ञेयतावाद, प्रकृतिवाद, भौतिकवाद, प्रत्यक्षवाद, विवेकवाद, इहलोकवाद और मानववाद मुख्य हैं।

निरीश्वरवाद और संशयवाद

संशयवाद या स्कॅपटिसिज्म उस सिद्धांत को कहा जाता है, जो आशिंक या पूर्ण रूप से मानवजाति की ज्ञान प्राप्ति की क्षमता में संदेह या संशय करता है। कुछ संशयवादियों का मत है कि तात्कालिक अनुभव से परे कोई ज्ञान संभव नहीं है, जबकि अतिशय संशयवादियो ने इसमें भी संदेश किया है कि इतना भी निश्चित रूप से जाना जा सकता है। प्राचीन यूनान के अनेक दार्शनिक संशयवादी थे। सुकरात का यह कथन प्रसिद्ध है कि मैं इतना ही जानता हूं कि मैं कुछ नहीं जानता। आधुनिक युग में डेविड के दर्शन में संशयवाद का चरम विकास हुआ। वे मानते थे कि धर्म, विज्ञान आदि से संबंधित हमारे सारे विश्वास बौद्धिक युक्तियों पर नहीं, हमारी नैसर्गिक मूल प्रवृत्तियों पर ही आधारित हैं। अतः इन्हें तर्को द्वारा सत्य प्रमाणित नहीं किया जा सकता। ह्यूम के इस संशयवाद का कांट पर भी पर्याप्त प्रभाव पड़ा। उन्होंने भी अनेक प्रबल तर्को द्वारा यह सिद्ध किया है कि ईश्वर के अस्तित्व संबंधी सभी परंपरागत प्रमाण अविश्वसनीय है। **संशयवाद कहता है कि हम ईश्वर के अस्तित्व और स्वरूप के संबंध में कुछ नहीं जान सकते, इसलिए उसकी सत्ता में विश्वास करने का हमारे पास तर्कपूर्ण आधार नहीं रह जाता**। ऐसी स्थिति में यह कहना सर्वथा अनुचित है कि संशयवाद अंततः निरीश्वरवाद का ही मार्ग प्रशस्त करता है। निरीश्वरवाद ही उसकी तार्किक परिणति है।

निरीश्वरवाद और अज्ञेयतावाद

अज्ञेयतावाद के समानार्थी 'ऐगनॉस्टिसिज्म' शब्द का सबसे पहला प्रयोग टी अैच हक्सले ने 1869 में किया था। अपने इस मत के लिए मनुष्य को तर्को द्वारा निश्चित रूप से प्रमाणित विचार मत या मान्यता को ही स्वीकार करना चाहिए। ऐसे किसी सिद्धांत का समर्थन नहीं करना चाहिए, जिसके लिए पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध न हों। पर डा. वेद प्रकाश वर्मा के अनुसार हक्सले से अलग अधिकतर दार्शनिक यह मानते हैं कि **अज्ञेयतावाद यह विचार है कि हम नहीं जानते कि ईश्वर है या नहीं? मानव बुद्धि की अनिवार्य सीमाओं के कारण ईश्वर संबंधी ज्ञान असंभ्भव है।** उदाहरण के रूप में जार्ज स्मिथ का कथन है–'ईश्वरवाद और निरीश्वरवाद ईश्वर में विश्वास की उपस्थिति या अनुपस्थिति को व्यक्त करते हैं, अज्ञेयतावाद ईश्वर अथवा अति प्राकृतिक सत्ता के विषय में ज्ञान की असंभावना को व्यक्त करता है।'

पर तथ्य यह भी है कि कई वैज्ञानिकों और विचारकों ने निरीश्वरवाद या नास्तिकतावाद से जुड़े हुए निन्दा भाव से बचने के लिए अपने–आप को सीधे नास्तिक कहने से संकोच करते हुए अज्ञेयतावादी ही माना है। चार्ल्स डार्विन और अलबर्ट आइन्सटाइन भी उनमें शामिल हैं। प्रतिष्ठित पत्रकार और लेखक खुशवंत सिंह की तो एक पुस्तक का नाम ही है–अैगनास्टिक खुशवंत : देयर इस नो गॉड। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इंटरनेट की 'सेलिब्रिटी एथीइइस्ट लिस्ट' में भी अथीइस्ट्स को तीन वर्गो में बांट कर प्रस्तुत किया गया है–नास्तिक, भौतिकवादी, अज्ञेतावादी और अस्पष्ट या एम्बीगुअस तथा इस तीसरे वर्ग के उप शीर्षक में लिखा गया है–'स्पष्ट ही ईश्वर और धर्म के प्रति संदेहशील'।

निरीश्वरवाद और प्रकृतिवाद

एक तत्व मीमांसीय सिद्धांत के रूप में प्रकृतिवाद वह सिद्धांत है, जिनके अनुसार इस दुनिया में ऐसी कोई सत्ता अथवा घटना नहीं हो सकती, जिसकी

व्याख्या प्राकृतिक नियमों के आधार पर न की जा सके। दूसरे शब्दों में यह सिद्धांत मानता है कि सिद्धांततः भी किसी अलौकिक या अति-प्राकृतिक शक्ति का अस्तित्व संभव नहीं है। समस्त प्राणियों, वस्तुओं, घटनाओं और शक्तियों की व्याख्या केवल प्राकृतिक नियमों द्वारा ही की जा सकती है। स्पष्ट है कि इस सिद्धांत के समर्थक किसी अति प्राकृतिक सत्ता-ईश्वर, आत्मा या देवी-देवता पर विश्वास नहीं करते। अतः इसे पूर्णतः निरीश्वरवादी सिद्धांत माना जा सकता है। यह भी कहा जा सकता है कि प्रत्येक प्रकृतिवादी के लिए निरीश्वरवादी होना अनिवार्य है। प्राचीन भारतीय स्वभाववादी या प्रकृतिवादी दार्शनिक चार्वाक आदि तथा पाश्चात्य दार्शनिकों में डेमोक्रेटस, ल्यूक्रेशियस, ब्रेडलाफ, हॉलियोख, कार्ल मार्क्स आदि को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रकृतिवादी माना जाता है। वे सभी स्पष्ट रूप से निरीश्वरवादी हैं। इससे स्पष्ट है कि निरीश्वरवाद प्रकृतिवाद का अनिवार्य तार्किक परिणाम है।

पर जहां प्रत्येक प्रकृतिवादी का निरीश्वरवादी होना अनिवार्य है। प्रत्येक निरीश्वरवादी का प्रकृतिवादी होना जरूरी नहीं है। उदाहरण के लिए भारतीय दर्शन के बौद्ध, जैन, सांख्य तथा मीमांसा निरीश्वरवादी हैं, पर इनमें से कोई भी प्रकृतिवादी नहीं है।

निरीश्वरवादी तथा प्रत्यक्षवाद

प्रत्यक्षवाद (पॉजिटिविज्म) शब्द का प्रथम प्रयोग हॅनरी कूम्ट डी सेंट साइमन ने किया था। बाद में फ्रांस के महान् दार्शनिक ऑगस्ट कूम्ट ने इस शब्द का प्रयोग अपनी उस वैज्ञानिक विचारधारा को व्यक्त करने के लिए किया, जिसका विशेष प्रभाव पश्चिम के सभी देशों में 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध से बीसवीं के पूर्वार्ध तक रहा। इस सिद्धांत में उन्हीं वस्तुओं, घटनाओं एवं तथ्यों के ज्ञान वास्तविक माना जाता है, जिनका एन्द्रिक अनुभव द्वारा प्रत्यक्ष निरीक्षण संभव हो। माइकेल मार्टन के अनुसार प्रत्यक्षवाद ऑगस्ट कूम्ट का यह सिद्धांत है कि निरीक्षणीय वस्तुओं का वर्णन ही ज्ञान का उच्चतम रूप है। स्पष्ट है कि यह सिद्धांत विज्ञान और उसकी विधि को ही विशेष महत्व देता है और निरीक्षण, इंद्रियजन्य अनुभव एवं प्रयोग द्वारा प्राप्त ज्ञान को ही वास्तविक ज्ञान मानता है। अतः इसमें अलौकिक शक्तियों, चमत्कारों तथा अति प्राकृतिक सत्ताओं का कोई स्थान नहीं है। प्रकृतिवाद की तरह प्रत्यक्षवाद भी मूलतः अनुभवाश्रित सिद्धांत है, जो अलौकिक और अति प्राकृतिक सत्ताओं का पूर्णतः निषेध करता है।

निरीश्वरवाद और इहलोकवाद

इहलोकवाद (सेकुलरिज्म) या जिसे हिन्दी में आमतौर पर धर्म निरपेक्षता कहा जाता है का प्रवर्तक, ब्रिटेन के भौतिकवादी विचारक और श्रमिक वर्ग के अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले समाजकर्मी, जार्ज जेकब होलियोक को माना जाता है। यह सिद्धांत मनुष्य की सांसारिक समस्याओं के समाधान में ईश्वर सहित किसी भी अलौकिक सत्ता के हस्तक्षेप अथवा उसकी प्रासंगिकता को स्वीकार नहीं करता। इसलिए यह सिद्धांत अलौकिक सत्ताओं पर अनिवार्य रूप से आधारित धर्म के, मनुष्य के सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक समस्याओं में, हस्तक्षेप का भी पूर्ण निषेध करता है। कुछ विद्वानों का मत है कि स्वयं होलियोक ने ही सेकुलरिज्म शब्द का निर्माण किया था, जिसके द्वारा वे निरीश्वरवाद को अधिक सम्मान दिलवाना चाहते थे (जैसे मार्डन स्टीन का) परन्तु इसके विपरीत कुछ अन्य विद्वानों का मत है (जैसे डेविट बरमन का) कि होलियोक ने यह शब्द ऑगस्ट कूम्ट से प्राप्त किया था, किन्तु उन्होंने व्यापक प्रचार द्वारा इसे विशेष रूप से लोकप्रिय बनाया। प्रो.वेद प्रकाश वर्मा होलियाक को ही इहलोकवाद के प्रवर्तक तथा प्रचारक मानते हैं। डी.एस. मार्गोलियथ के अनुसार निरीश्वरवाद शब्द का प्रयोग उस समय प्रायः उस व्यक्ति के लिए किया जाता था, जो न केवल ईश्वर को अस्वीकार करता है, अपितु नैतिकता को भी अस्वीकार करता है। इसलिए अनैतिकता के आरोप से बचने के लिए ही होलियाक ने निरीश्वरवादी की जगह अपने-आपको इहलोकवादी कहना पसंद किया।

निरीश्वरवाद और भौतिकवाद

भौतिकवाद भूत तत्व, पदार्थ अथवा पुद्‌गल को ही विश्व मंडल की एकमात्र सत्ता मानता है और अभौतिक या अति प्राकृतिक कही जाने वाली समस्त शक्तियों या सत्ताओं का निषेध करता है। इस सिद्धांत के अनुसार अभौतिक ईश्वर, आत्मा, देवी-देवता, स्वर्ग-नरक, भूत-प्रेत और शैतान आदि केवल काल्पनिक वस्तुएं हैं, जिनकी कोई वास्तविक सत्ता नहीं है। केवल उन्हीं वस्तुओं और प्राणियों की वास्तविक सत्ता है, जिनका निर्माण पृथ्वी, जल, वायु एवं अग्नि इन चार भौतिक तत्वों के परमाणुओं के संयोगों से हुआ है और जिनका हम अनुभव तथा ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। एफ.आर. टेनेन्ट के अनुसार भौतिकवाद विस्तार-युक्त, अभेद्य, शाश्वत रूप से स्वतः अस्तित्वमान तथा गतिशील पदार्थ को ही विश्व मंडल का एकमात्र मूल तत्व मानता है। मनस या चेतना इसी तत्व के रूपांतरण अथवा गुण हैं और सभी मानसिक प्रक्रियाओं को शारीरिक प्रक्रियाओं में समानीत (reduce) किया जा सकता है। अर्थात् उनके आधार पर समझा और व्याख्यायित किया जा सकता है। प्राचीन भारतीय और यूनानी दार्शनिकों ने अपने भौतिकवाद को परमाणुवाद के रूप में प्रस्तुत किया है। यानी वे भूत तत्व को सूक्ष्म परमाणुओं से बना हुआ मानते थे। आधुनिक विज्ञान का विकास परमाणुवाद के आधार पर हुआ, पर अब परमाणुओं को अंतिम और अविभाज्य इकाई नहीं माना जाता-उन्हें इलेक्ट्रोन, न्यूट्रोन और प्रोटोन कणों में विभाजित माना जाता है। इसी प्रकार इन सूक्ष्म कणों को पहले की तरह ठोस नहीं, ऊर्जा के रूप में भी देखा जाता है और कण-तरंग कहा जाता है। पदार्थ के मूल स्वरूप में वैज्ञानिक शोध कितना भी परिवर्तन करें, उसे अभौतिक और अति प्राकृतिक सिद्ध नहीं किया जा सकता।

यहां यह तथ्य ध्यातव्य है कि भौतिकवाद और प्रकृतिवाद लगभग समानार्थक हैं। दोनों में आधिभौतिक या अति प्राकृतिक ईश्वर आत्मा आदि का कोई स्थान नहीं है। यानी दोनों निरीश्वरवादी हैं। पर जहां प्रत्येक भौतिकवादी का निरीश्वरवादी होना अनिवार्य है, सभी निरीश्वरवादी भौतिकवादी नहीं होते। भारतीय दर्शन की बौद्ध, जैन, सांख्य और मीमांसा और सरिणियां निरीश्वरवादी हैं, पर इनमें से कोई भी भौतिकवादी नहीं है।

निरीश्वरवाद और सर्वेश्वरवाद

'स्टनफोर्ड एनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलास्फी के अनुसार सर्वेश्वरवाद (पॅनथीइज्म) उस दृष्टिकोण को कहा जाता है जो ईश्वर को पूरे विश्व मंडल का अभिन्न और एकात्म रूप मानता है। इस सिद्धांत के अनुसार दुनिया में कुछ भी ऐसा नहीं है जो ईश्वर से बाहर हो, जो भी है, सब ईश्वर ही ईश्वर है। यानी यह सिद्धांत इस कायनात से अलग, ईश्वर को उसके व्यक्तित्ववान रचयिता, स्वामी या सर्वोच्च न्यायाधीश के रूप में कल्पित नहीं करता। इस संसार, इस प्रकृति से अलग उसकी सत्ता को नहीं मानता।

यह दृष्टिकोण भारतीय अद्वैत वेदान्त, सूफी रहस्यवाद और यहूदी धर्म के एक सम्प्रदाय में मुखर है। सर्वेश्वरवाद का एक प्रमुख स्रोत साहित्य भी है। गेटे, कॉलरिज, वर्ड्‌सवर्थ, एमर्सन, वाल्ट व्हिट्‌मॅन और डी.एच, लारेन्स के साहित्य में यह दिखाई देता है। स्पिनोजा कार्ल रोगने और न्यूटन सर्वेश्वरवादी कहे जाते हैं। अनेक ईश्वरवादी विचारकों ने इसकी कड़ी आलोचना की है। शापनहावर की आलोचना है कि इस विश्व को ही ईश्वर कह देना, उसकी कोई व्याख्या नहीं करता। यह केवल एक अतिरिक्त पर्यायवाची शब्द से भाषा को सम्पन्न करता है। इसलिए सर्वेश्वरवाद निरीश्वरवाद का ही एक कर्ण मधुर संस्करण है।

वास्तव में पूरे भौतिक जगत् को, पूरे विश्व मंडल को ईश्वर नाम देना और किसी व्यक्तित्व पूर्ण ईश्वर को न मानना, जहां एक ओर इस संसार के हर रूप रंग के साथ एकात्मकता अनुभव करने की एक व्यापक संवेदनशीलता, विश्व प्रेम की एक विराट अनुभूति का द्योत्तक है, वहीं यह परंपरागत, पिष्ठपेषित, दकियानूसी ईश्वरवाद का स्पष्ट निषेध भी है। यह मनुष्य की आदि रहस्य भावना की, उसके भय मिश्रित आश्चर्यचकित की, उसके सम्भ्रम की तृप्ति

भी है।

पिछले कुछ वर्षों में सर्वेश्वरवाद का पुनरोदय (रिवाइवल) बहुत से पर्यावरणविदों, प्रकृति-प्रेमियों, वैज्ञानिकों और अनीश्वरवादियों के विचारों में दिखाई देता है। विश्व सर्वेश्वरवादी आंदोलन के अनुसार इस आंदोलन के बुनियादी सिद्धांत हैं-

1. प्रकृति और सम्पूर्ण विश्वमंडल के प्रति सम्मान, श्रद्धायुक्त विस्मय या सम्भ्रम और उसी का होने की अनुभति।

2. सभी मनुष्यों और जीवों के अधिकारों का सम्मान और उनके प्रति सक्रिय परवाह (चिंता)।

3. इस सुंदर संसार में अपने जीवन और शीरों का प्रसन्नतापूर्वक उत्सवीकरण।

4. प्रकृतिवाद-किसी अति प्राकृतिक तत्व, शक्ति, क्षेत्र आदि में अविश्वास के साथ, मजबूत प्रकृतिवाद, परलोक, पुनर्जन्म आदि में विश्वास।

5. तर्क, विवेक, साक्ष्य और वैज्ञानिक पद्धति और विश्व को समझने के श्रेष्ठ साधनों के रूप में सम्मान।

6. सभी प्रकार के भेदभावों की समाप्ति के लिए धार्मिक संघर्ष, धार्मिक सहिष्णुता, धार्मिक स्वतंत्रता और धर्म से स्वतंत्रता के अधिकारों की रक्षा, राज्य और धर्म का सम्पूर्ण विलगाव।

निरीश्वरवाद और विवेकवाद

अंग्रेजी के 'रेशनलिज्म' शब्द के लिए हिन्दी में बुद्धिवाद और विवेकवाद, ये दोनों शब्द प्रचलित हैं। पर मैं व्यक्तिगत रूप से 'विवेकवाद' शब्द को पसंद करता हूं 'वेब्स्टर न्यू वर्ड डिक्शनरी' के अनुसार विवेकवाद वह सिद्धांत और उसका व्यवहार है, जो तर्क या बुद्धि को ही ज्ञान का एकमात्र स्रोत मानता है और उसी के आधार पर अपनी राय, विश्वास और कार्यपथ निर्धारित करता है। इस सिद्धांत में पहले तर्क को, और केवल तर्क को ही ज्ञान का स्रोत माना गया अर्थात् संवेदना-अनुभवों की उपेक्षा की गई, पर बीसवीं सदी तक आते-आते इसमें भौतिक अनुभव को भी ज्ञान के एक स्रोत के रूप में स्वीकृति दी गई। अर्थात् आज के प्रचलित अर्थों में विवेकवाद ऐन्द्रिक प्रत्यक्षीकरण (आंखों की देखी) अनुमान और तर्क, इन तीनों को ज्ञान का स्रोत मानता है और अन्तर्दृष्टि, अपौरूषेय प्रकटन विश्वास और ग्रंथ-प्रमाण जैसे सभी अतर्कसंगत स्रोतों को अमान्य घोषित करता है।

स्पष्ट है कि विवेकवाद केवल विवेक को ही ज्ञान का एकमात्र स्रोत नहीं मानता, वह जीवनानुभवों, सूक्ष्म निरीक्षण और वैज्ञानिक प्रयोगों को भी ज्ञान के स्रोत मानता है पर ग्रंथ-प्रामाण्य, बाबा-वाक्य, अंधविश्वास, अमानुषय अति प्राकृतिक तत्वों, चमत्कारों तथा रहस्यवादी अनुभवों को खुले तौर पर नकारता है।

यह लगभग वही वैचारिक स्थिति है जो ढाई हज़ार साल पहले गौतम बुद्ध की इस प्रसिद्ध शिक्षा में व्यक्त हुई थी- *किसी बात को इसलिए सच मत मान लो कि वह परंपरा से चली आ रही है। इसलिए भी नहीं है कि वह वेद, शास्त्रादि में लिखी हुई है। इसलिए भी नहीं कि उसको कोई विख्यात व्यक्ति, आचार्य या गुरु कह रहा है। इसलिए भी नहीं कि मैं गौतम बुद्ध उसे कह रहा हूं। केवल जब तुम आत्मानुभव सेही जानो कि ये बातें हितकर हैं या अहितकर, ये बातें निंदनीय है या नहीं, इनको करने से दुख होगा या नहीं, तभी तुम उन्हें स्वीकार या अस्वीकार करो।*

भारतीय दार्शनिक बन्दिष्टे ने अपने-आपको विवेकवादी घोषित करते हुए कहा है कि विवेकवाद का केंद्रीय संदेश है कि हमें अपने विश्वासों और मान्यताओं को लगातार अनुभव से प्राप्त साक्ष्यों के प्रकाश में परीक्षण करते रहना चाहिए।

निरीश्वरवाद और मानववाद

यूरोप में मानववाद 14वीं से 16वीं सदी में ग्रीक और रोमन वांङमय के अध्ययन से निकले उस बौद्धिक सांस्कृतिक आंदोलन को कहा था, जो दिव्य शक्तियों और अति प्राकृत तत्वों के प्रति शंकाशील और धर्मनिरपेक्ष था तथा जिसने एक नवजागरण (रिनेशां) को जन्म दिया था। 'एन्साइक्लोपीडिया एवं फिलॉस्फी' के अनुसार इसके अतिरिक्त मानववाद वह दर्शन है जो मनुष्य की गरिमा और मूल्यवत्ता को स्वीकृति देते हुए उसे ही सभी अन्य वस्तुओं के मूल्यांकन का मापदंड बनाता है और मानव-प्रकृति,

उसकी सीमाओं और उसके हितों को अपने अध्ययन की विषय-वस्तु बनाता है।

स्पष्ट है कि जब हम मनुष्य को ही अन्य वस्तुओं का मापदंड मानते हैं तो उसी तथ्य पर पहुंचते हैं जिस पर चण्डीदास पहुंचे थे-

सबार ऊपर मानुष सत्य, तहार ऊपर नाहीं

यानी ईश्वर या दिव्य शक्तियों की तुलना में मनुष्य को महत्व देना।

बीसवीं सदी में मानववाद शब्द अधिकाधिक धर्मनिरपेक्षवाद मानववाद के अर्थ में ही प्रयुक्त किया जाने लगा और उसके साथ 'धर्मनिरपेक्ष' विशेषण लगाने की जरूरत कभी-कभार ही महसूस की गई इस विशेषण को उसमें अंतर्निहित मान लिया गया। इस अर्थ में वह विवेकवाद और निरीश्वरवाद से घनिष्ठ रूप से जुड़ जाता है। डा. रमेन्द्र ने बीसवीं सदी के अंतिम दशक के तीन शब्दकोशों में दिए गए मानववाद शब्द के अर्थ को उद्धृत किया है। लिटिल आक्सफोर्ड डिक्शनरी 1995 के अनुसार 'मानववाद एक अधार्मिक दर्शन है जो उदार मानवीय मूल्यों पर आधारित है।' कॉलिन्स कनसाइज्ड डिक्शनरी 1995 के अनुसार 'मानववाद मानवजाति के अपने ही प्रयत्नों से विकास के समक्ष धर्म का अस्वीकार है।' और चम्बर्स डिक्शनरी, 1995 के अनुसार मानववाद, वह सिद्धांत है जो मनुष्य के हितों और मनुष्य के मस्तिष्क को सर्वोपरि मानता है और ईश्वर आदि के प्राकृतिक विश्वा को नकारता है।

विश्व के मानववादियों के परिसंघ, अंतर्राष्ट्रीय मानववादी एवं नैतिक संघ (IHEU) के अनुसार 'मानववाद एक जनतांत्रिक और नैतिक जीवन अवस्थिति है, जो यह मानती है कि मानवजाति का यह अधिकार भी है और दायित्व भी कि वह अपने जीवन को वांछित आकार और अर्थ दे। यह मानवीय और प्राकृतिक मूल्यों पर आधारित नीति द्वारा विवेक और मुक्त जांच के माध्यम से एक वास्तव में मानवीय समाज की रचना करना चाहता है। यह ईश्वर नहीं है और किसी अति प्राकृतिक दृष्टि को स्वीकार नहीं करता।'

इस विचार-विमर्श से स्पष्ट है कि अपने समकालीन अर्थ में मानववाद विवेकवादी ही नहीं, धर्म निरपेक्ष और निरीश्वरवादी भी है। अर्थात उसमें नवजागरण से अद्‌भुत विवेकवाद, धर्मनिरपेक्ष, इहलौकिकवाद और मानववाद की तीनों धाराएं एकमेक हो गई हैं। यह अधिकतम संभव जनतंत्र, मानवाधिकारों की रक्षा और मनुष्य मात्र की स्वतंत्रता, समता और भाईचारे के लिए संघर्ष के लिए संघर्ष करता है। वह सभी अंधविश्वासों और सभी धर्मो की रूढ़ियों का विरोधी है। वह ईशनिन्दा-विरोधी सभी देशों के कालातीत और मूर्खतापूर्ण कानूनों को समाप्त करने के लिए संघर्ष करता है, जो व्यक्ति की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बाधित करते हैं।

1. हिन्दी की लगभग सभी दर्शन संबंधी पुस्तकें 'अज्ञेयवाद' शब्द का प्रयोग करती है, पर कहीं इसे हिन्दी के कालजयी लेखक 'अज्ञेय' का दर्शन न मान लिया जाए, इसलिए मैं अज्ञेयतावाद का प्रयोग करता हूं।

2. जार्ज एच. स्मिथ, अथीज़्म : द केस अगेन्स्ट गॉड, पृष्ठ-9

3. पॉजिविटिज्म, आन साइक्लोपीडिया ऑव फिलोस्फी, खंड-6, पृष्ठ 414

4. एफ आर टेनेन्ट : ऑन साइक्लोपीडिया आफ रेलिजन एंड एथीक्स, खंड-8, पृष्ठ-488

5. इस आलेख की यहां तक की अधिकांश स्री प्रो. वेद प्रकाश वर्मा की उत्कृष्ठ रचना 'भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शन में निरीश्वरवाद' से ली गई है और लेखक इसके लिए उनका अत्यंत आभारी है।

6. डा. रमेन्द्र रेशनेलिज्म, ह्यूमेनिज्म एंड अथीज़्म इन टवंटियथ सेंचुरी इंडियन थॉट पृष्ठ-19

7. बुद्ध और उनका धम्म, अम्बेडकर, तृतीय कांड, पृष्ठ-121

8. बन्दिष्टे, अंडरस्टैंडिंग रेशनेलिज्म, इंदौर, 1999, पृ.-11

9. पॉल एडवर्डस, एन साइक्लोपीडिया एवं फिलास्फी, 1992, जिल्द-4, पृ. 69-70

10. डा. रमेन्द्र, वही, पृ. 27

11. IHEU : Statement of Humanism.

M: 9019303518

2094- शोभा डहलिया, बेलन्दूर, बैंगलौर 560103

जब परछाईं भी आपका साथ छोड़ देती है

संजीव खुदशाह

आमतौर पर यह माना जाता है कि परछाईं कभी आपका पीछा नहीं छोड़ती, लेकिन दिलचस्प बात यह है कि साल में अमूमन दो बार परछाईं कुछ पलों के लिए आपका पीछा छोड़ देती है । हम इस दिवस को शून्य परछाईं दिवस zero shadow day कहते हैं। मुझे याद है मां कहती थी कि बाहर के काम जल्दी निपटा लो नहीं तो 12-00 बज जाएंगे. यहां 12-00 बजने से तात्पर्य सिर के गर्म हो जाने से है जो कि सूर्य के ठीक सिर के ऊपर आने से ताल्लुक रखता है। कुछ लोग यह भी मानते है कि 12-00 बजे सिर के ऊपर सूरज आ जाता है और हमारी परछाई नहीं बनती। लेकिन यह भी धारणा गलत है।

जीरो शैडो-डे क्या है ?

कर्क रेखा से भूमध्य रेखा के बीच तथा भूमध्य रेखा से मकर रेखा के बीच आने वाले स्थानों में शून्य परछाईं दिवस आता है। दरअसल यह शून्य परछाई दिवस का वह क्षण, दिन भर के लिए नहीं बल्कि कुछ ही पलों के लिए दोपहर के 12-00 बजे के आस पास होता है। इस समय दुनिया के तमाम वैज्ञानिक, जिज्ञासु विद्यार्थी, तर्कशील लोग कई अनोखे प्रयोग करते हैं। वह इस खास पल में खड़े होकर अपनी परछाईं को ढूंढते हैं। गिलास को उल्टा रखकर यह देखते हैं कि उसकी परछाईं किस तरफ आ रही है। कई कई तरह के रोचक प्रयोग इस दौरान किए जाते हैं। आइए इस दिवस को हम एक विज्ञान के चश्मे से समझने की कोशिश करें और इस खगोलीय घटना को यादगार पल में बदले।

दरअसल सूर्य के उत्तरायण और दक्षिणायण होने के दौरान 23.5 अंश दक्षिण पर स्थित मकर रेखा से 23.5 अंश उत्तर की कर्क रेखा की ओर सूर्य जैसे-जैसे दक्षिण से उत्तर दिशा की ओर बढ़ता है वैसे-वैसे दक्षिण से उत्तर की ओर गर्मी की तपन दक्षिणी गोलार्ध में कम होती जाती है, और उत्तरी गोलार्ध में बढ़ती जाती है। सूर्य की किरणे पृथ्वी पर जहा-जहाँ सीधी पड़ती जाती है वहां वहाँ उन खास स्थानों पर ठीक दोपहर में शून्य परछाईं पल निर्मित होता जाता है। ठीक इसी प्रकार उत्तर से दक्षिण की ओर सूर्य, वापस आते समय ठीक मध्यान में उसी अक्षांश पर फिर से शून्य परछाई बनाता है। यानी कर्क रेखा से मकर रेखा के बीच दक्षिणायण होते सूर्य से यह दुलर्भ खगोलीय घटना होते दुबारा देख सकते है। कन्याकुमारी से कर्क रेखा तक मध्य भारत के तमाम स्थानों में अप्रेल से जून तक और वापसी में जून से अगस्त तक किसी खास दिन वास्तविक मध्यान्ह में इस खगोलीय घटना को हर वर्ष दो बार देखा जा सकता है।

इस सम्बन्ध में छत्तीसगढ़ विज्ञान सभा के श्रीविश्वास मेश्राम बताते है मध्य प्रदेश, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ के विज्ञान कार्यकर्ताओं के लिए एक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन शीघ्र ही किया जा रहा है जिसमे वरिष्ठ खगोल भौतिकविदों तथा वैज्ञानिकों द्वारा हमारे अक्षांश के ठीक उपर जेनिथ से सूर्य कब गुजरेगा तथा इसे हम विद्यार्थियों के साथ क्यों, किस प्रकार और कैसे अवलोकन कर सकेंगे, इसे प्रयोगों द्वारा बताया जायेगा।

आईये देखे कि कुछ खास स्थानों में ये शून्य परछाई दिवस कब कब पडने वाला है-

उत्तरायण में शून्य परछाई दिवस	दक्षिणायण में शून्य परछाई दिवस	स्थान
11 मई	1 अगस्त	कोटा
13 मई	30 जुलाई	सुकमा
14 मई	29 जुलाई	किरंदुल, बचेली बीजापुर
15 मई	28 जुलाई	दंतेवाडा
16 मई	27 जुलाई	जगदलपुर
18 मई	25 जुलाई	कोंडागांव, नारायणपुर
21 मई	22 जुलाई	कांकेर नगरी
23 मई	20 जुलाई	दिल्ली-राजहरा, धमतरी
24 मई	19 जुलाई	बालोद

25 मई	18 जुलाई	कसेकेरा, राजनांदगांव
26 मई	17 जुलाई	भिलाई, डोंगरगढ़, महासमुंद, पिथौरा
27 मई	16 जुलाई	बसना, रायपुर
29 मई	14 जुलाई	बलोदा-बाजार
30 मई	13 जुलाई	बालाघाट, भाटापारा
31 मई	12 जुलाई	कवर्धा, रायगढए चाम्पा
1 जून	11 जुलाई	बिलासपुर, मुंगेली
3 जून	9 जुलाई	कोरबा
6 जून	6 जुलाई	कुनकुरी
8 जून	4 जुलाई	जशपुर
12 जून	30 जून	चिरमिरी, सूरजपुर

भारत में सूर्य की इस गति को एक खास नाम दिया गया है। सूर्य की उत्तर की ओर यात्रा को उत्तरायण कहा जाता है और दक्षिण की ओर यात्रा को दक्षिणायण कहा जाता है।

यदि आप उत्सुक है ये जानने के लिए कि आपके शहर में ये शून्य परछाईं दिवस कब आएगा तो आप आपने मोबाइल से इस लिंक को क्लिक कर सकते है।

परछाईं गायब होने के पीछे क्या है राज?

परछाईं गायब होने के पीछे कोई जादू नहीं बल्कि यह हर साल होता है। यह धरती की परिभ्रमण गति की सामान्य प्रक्रिया है। धरती सूर्य का चक्कर लगाने के साथ अपनी जगह पर भी घूमती है। वह अपने अक्ष में 23.5 डिग्री झुकी हुई है, जिस कारण सूर्य का प्रकाश धरती पर सदा एक समान नहीं पड़ता और दिन रात की अवधि में अंतर आता है। 21 जून (आपके भोगौलिक स्थिति के अनुसार ये तारीख बदल जाती है) के दिन दोपहर में कर्क रेखा सूर्य पर होता है, जिस कारण हमारी छायाएं भी वहां पर साल की सबसे छोटी होती हैं। जब सूर्य भूमध्य रेखा से कर्क रेखा की ओर उत्तरायण में होता है तो उत्तरी गोलार्ध में सूर्य का प्रकाश अधिक व दक्षिणी गोलार्ध में कम पड़ता है। जिस कारण उत्तरी गोलार्ध में गर्मी होती है जबकि दक्षिणी गोलार्ध में ठीक इसी समय सर्दी। ठीक यही कारण है कि अन्टार्कटिका अभियान नवंबर-दिसम्बर में जाते हैं क्योंकि तब दक्षिणी गोलार्ध में गर्मी की ऋतु होती है। इसके बाद 21 सितंबर के आसपास दिन व रात की अवधि बराबर हो जाती है। धीरे-धीरे दिन की अवधि रात के मुकाबले बड़ी होने लगती है। यह प्रक्रिया 21 दिसंबर (आपके भौगोलिक स्थिति के अनुसार ये तारीख बदल जाती है) तक जारी रहती है। इस दिन उत्तरी गोलार्ध में रात वर्ष की सबसे लंबी होती है, जबकि दिन सबसे छोटा होता है। धरती पर $23\frac{1}{2}^o$ उत्तर और $23\frac{1}{2}^o$ दक्षिण अक्षांशों के बीच साल में ऐसे दो दिन आते हैं, जब हमारी परछाईं एक पल के लिए शून्य हो जाती है। यह घटना कर्क रेखा से भूमध्य रेखा पर आने वाले भूभाग में ही होती है। 21 जून को जब सूर्य ठीक कर्क रेखा के ऊपर होता है तब वहां दोपहर को हमारी परछाईं शून्य होती है जबकि उसके उत्तर में स्थित सभी स्थानों के लिए यह दिन सबसे छोटी परछाईं वाला दिन होता है। ज्ञात हो कि कर्क रेखा के उत्तर में तथा मकर रेखा के दक्षिण में शुन्य परछाईं दिवस नहीं होते। यह बात स्थिर रूप से सीधी खड़ी रहने वाली वस्तु पर ही लागू होती है. आपको यकीन नहीं हो आप इस दिवस को जरुर आजमाए चाहे आप घर पर हो या अपने कार्यस्थ्ल पर।

(लेखक तर्कशील सोसाईटी एवं भारतीय विज्ञान सभा के सदस्य हैं।)

उन्होंने कहा था....

'मुझे नहीं पता कि मैं दूसरों को कैसा लगता हूं परन्तु मुझे स्वयं को ऐसा लगता है कि मैं एक छोटा सा बालक ज्ञान के विशाल सागर के किनारे पर घूम रहा हूं, कभी -कभी कोई छोटा सा चमकीला पत्थर का टुकड़ा मेरे हाथ लग जाता है, जिससे मैं अपना दिल खुश कर लेता हूं, जब कि सच्चाई का विशाल सागर मेरेसामने अभी अनजाना पड़ा है।'

-आईज़ैक न्यूटन (1642-1727)

(बर्तानवी दार्शिनिक, भैतिक विज्ञानी, गणितज्ञ एवं तारा विज्ञानी)

स्वतंत्र चिंतन

प्रेत देवता

–कर्नल इंगरसोल

पिछले अंक का शेष....

मैंने आपको कुछ ही हद तक यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि जब आदमी मिथ्या-विश्वास और भय से शासित होते हैं, जब वे तर्क का श्रेष्ठ आधार छोड़ देते हैं तथा जब वे स्वयं बिना खोज किए दूसरों के शबदों को यों ही मान लेते हैं, तब उसके परिणामस्वरूप आज तक क्या कुछ होता रहा है और भविष्य में भी क्या कुछ हो सकता है।

इस मामले में उन दिनों के महान् पुरुष भी सबसे अज्ञजनों जैसे ही कमजोर थे। केपलर एक महान ज्योतिषी था, संसार के महान आदमियों में से एक। उसने तारों से विश्व के रहस्यों का पता लगाया। लेकिन वह फलित-ज्योतिष में भी विश्वास करता था। वह मानता था कि जान लेने से कि आदमी के जन्म के समय कौन सा नक्षत्र किस राशि में था, आदमी के जीवन के बारे में भविष्यवाणी की जा सकती है। यह कहना होगा कि यह महापुरुष अपने युग के मिथ्या-विश्वास का शिकार था।

टाइचो ब्राहे नाम का एक और नक्षत्रज्ञ था। उसने एक जड़भरत को अपने पास रखा था और उसके मुंह से जो अंट-शंट निरर्थक शब्द निकलते वह उन्हें बड़े ध्यान से लिखता और तब उन्हें ऐसे क्रम में रखता कि कोई न कोई भविष्यवाणी बन जाए और तब बड़े सब्र के साथ बैठा हुआ उस भविष्यवाणी की पूर्ति की प्रतीक्षा किया करता। लूथर का विश्वास था कि उसकी शैतान से वास्तविक भेंट हुई थी और उसने उससे धर्मशास्त्र की कुछ बातों को लेकर बहस की थी। मानव-मस्तिष्क बेड़ियों से जकड़ा हुआ था। हर कल्पना ने भूत का रूप धारण कर लिया था। विचार कुरूप हो गया था, वास्तविक बातें बेकार समझी जाती थीं, उनका कुछ भी मूल्य न आंका जाता था। जो बात आश्चर्यजनक होती, उसी को सुरक्षित रखना उचित माना जाता। जो घटनाएं वास्तव में घटतीं, वे लिख रखने योग्य ही मानी जातीं-वास्तविक बातें अतिसामान्य थीं। प्रत्येक व्यक्ति कोई चमत्कार देखना चाहता था।

इसकी भी परवाह न करके कि मेरी बातें सुनते-सुनते आप उकता जाएंगे। मैंने आपको यह बताने की कोशिश की है कि आदमी का दिमाग जब अज्ञान ओर भय से जकड़ जाता है, तब वह कैसी-कैसी चीजें उत्पन्न कर सकता है।

मैं आपको यह निश्चय करा देना चाहता हूं कि दासता का प्रत्येक रूप एक भयानक सर्प है, जो कभी न कभी आदमी को अपने विषैले दांतों से अवश्य डसता है।

उन्नति की ओर पहला महान कदम जो आदमी उठा सकता है, वह यही है कि आदमी-आदमी का दास न रहे और दूसरा यह है कि वह अपने ही पैदा किए हुए राक्षसों-भूतों और आकाश के अन्य अदृश्य प्राणियों का दास न रहे।

युगों तक आदमी बंधनों में बंधा रहा। लोहे के सीखचों में से प्रकाश की चंद किरणें आई। विज्ञान को अपना पीला और चिंताशील चेहरा इन्हीं सीखचों से रगड़ना पड़ा। उसका मानव-प्रगति के पवित्र उषाकाल के साथ गठबंधन हो गया।

आदमी को पता लग गया कि जो वास्तविक है, वही उपयोगी है और किसी प्रेतात्मा के कथन की अपेक्षा आदमी का ज्ञान श्रेयस्कर और एक भविष्यवाणी की अपेक्षा एक घटी हुई घटना का अधिक मूल्य है। उसे मालूम हो गया कि प्रेतात्माएं रोग का कारण नहीं हैं और उन्हें डराकर भगा देना किसी रोग की चिकित्सा भी नहीं है। उसे पता लगा कि मृत्यु जीवन जितनी ही स्वाभाविक है। उसने मानव-शरीर की रचना और उसके कार्य करने के ढंग का अध्ययन किया है। उसे पता लगा कि सब कुछ प्राकृतिक है और प्रकृति के नियम के बाहर नहीं।

जादू-टोना और मंत्र करने वालों को छुट्टी दे दी गई और उनकी जगह डाक्टरों तथा शल्य-चिकित्सकों ने ले ली। उसे पता लगा कि पृथ्वी चपटी नहीं है और तारागण 'आकाश के धब्बे' मात्र नहीं हैं। उसे पता लगा कि नक्षत्र विशेष में जन्म लेने का मनुष्य के भाग्य से कोई संबंध नहीं। नजूमी को छुट्टी दे दी गई और उसकी जगह गणित ज्योतिषी ने ली।

उन्हें पता लगा कि पृथ्वी तारामण्डल में करोड़ों वर्षों से चक्कर काट रही है। उन्हें पता लगा कि प्राकृतिक कारणों से भलाई और बुराई पैदा होती है न कि प्रेत-आत्माओं से। कोई आदमी कितना ही अच्छा क्यों न हो, वह अपनी अच्छाई से पानी नहीं बरसा सकता और कोई आदमी कितना भी बुरा क्यों न हो, वह अपनी बुराई से बरसते पानी को रोक नहीं सकता। बीमारी की उत्पत्ति उतनी ही प्राकृतिक है, जितनी घास की। वह किसी खास मत को न मान सकने के कारण किसी की ओर से दिया गया दण्ड नहीं है। उन्हें पता लगा कि आदमी बुद्धि से प्रकृति की शक्तियों से लाभ उठा सकता है, वह चाहे तो पानी की लहरों को, हवाओं को, आग को और बिजली को अपनी आज्ञा मानने के लिए मजबूर कर सकता है। उन्हें पता लगा कि प्रेत-आत्माओं को किसी ऐसी चीज की जानकारी नहीं थी जो आदमी के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके। न उन्हें भूगर्भ-शास्त्र की जानकारी थी, न गणित-ज्योतिषि की, न भूगोल की और न इतिहास की। उन्हें खराब डाक्टर और उससे भी खराब शल्य चिकित्सक मानना चाहिए। उन्हें कानून की जानकारी न थी और उससे भी कम 'न्याय' की। उन्हें न दिमाग थे और न दिल। उन्हें आदमियों के अधिकारों का कुछ पता न था। उन्हें स्त्रियों से नफरत थी, उन्नति से घृणा थी, विज्ञान से शत्रुता थी और स्वतंत्रता के तो वे विध्वंसक थे।

इस अंधेरे युग में संसार की स्थिति ऐसी ही थी, जैसी आदमियों के शरीर और मन को गुलाम बना देने के फलस्वरूप हो सकती थी। उन दिनों किसी को किसी तरह की स्वतंत्रता नहीं थी। श्रम से घृणा की जाती थी और एक श्रमिक को पशु से कुछ ही अच्छा समझा जाता था। एक बड़े अजदहे सांप की तरह अज्ञान ने आदमी की बुद्धि पर अधिकार पा लिया था और मिथ्या-विश्वास मानव की कल्पना के साथ खेल रहे थे। आकाश देवताओं, दैत्यों और राक्षसों से भरा था। अदमी के मन पर अंधविश्वास का राज्य था और तर्क एक देश-निर्वासित राज्य था। आदमी को विशिष्ट बनने के लिए या तो सैनिक बनना पड़ता था या पादरी। लड़ना और धर्मशास्त्र अर्थात आदमियों की हत्या करना और ढोंग-यही दो आदमी के प्रधान पेशे थे। कला-कौशल्य पराधीन थे, चोरी ही व्यापार था, हत्या करना ही युद्ध था और ढोंग ही धर्म था।

पंद्रहवीं शताब्दी में इंग्लैंडर में निम्नलिखित कानून था-

'जो आदमी अपनी मातृभाषा में धर्म-ग्रंथ को पढ़ेगा, उसकी भूमि, उसके पशु, उसका जीवन सब उससे छीन लिए जाएंगे, उसके उत्तराधिकारों का भी सर्वस्व अपहरण कर लिया जाएगा और वह परमात्मा का द्रोही, राज्य का द्रोही तथा देश का द्रोही घोषित कर दिया जाएगा।'

यह कनून लागू होने के प्रथम वर्ष में 32 आदमियों को इस कानून का पालन न करने के अपराध में फांसी दे दी गई और उनके शरीर जला दिए गए।

सोलहवीं शताब्दी के कुछ आदमियों को इसलिए जला दिया गया, क्योंकि वे पादरियों के सामने घुटने टेककर नमस्कार करना भूल गए थे।

यदि किसी ने उस युग के मिथ्या-विश्वासों के विरुद्ध एक भी शब्द कहा, तो उसे प्राण-दण्ड ही मिलता था।

उस समय के तथाकथित सुधारकों को भी मानसिक स्वतंत्रता की कुछ कल्पना न थी। लूथर, नाक्स, काल्विन तभी तक धार्मिक-स्वतंत्रता में विश्वास करते रहे, जब तक वे अल्प मत में थे। ज्यों ही उनके हाथ में शक्ति आई, उन्होंने तलवर और आग से दूसरों को मिटाना आरंभ किया।

मौनतेन, जिसमें इतनी सामान्य बुद्धि थी कि वह अपने समय का सबसे अधिक असामान्य आदमी सिद्ध हुआ, पहला आदमी था, जिसने फ्रांस में जन-पीड़न के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई लेकिन करोड़ों अज्ञानी, मूर्ख, मिथ्या-विश्वासी तथा दूसरों की बुराई चाहने

वाले लोगों की आवाज के मुकाबले में एक आदमी की आवाज का क्या मूल्य? यह निर्दय समुद्र के भयानक घोष के आगे डूबते हुए एक आदमी का क्षीण-स्वर था।

कुछ वीर-आत्माओं के प्रयत्नों के बावजूद आदमी के स्वातंत्र्य के विरुद्ध यह गंदी लड़ाई तब तक जारी रही, जब तक कम से कम दस करोड़ मानव-माता, पिता, भाई, बहन-जिनकी इच्छाएं और आकांक्षाएं ठीक वैसी ही थी, जैसी हमारी आपकी-एक अंध मिथ्या-विश्वास की बलि-वेदी पर बलिदान नहीं हो गए।

जहां तक मेरी बात है, मुझे इस बात का अभिमान है कि उस नए संसार में सबसे पहले अमेरिका में ही आदमी की स्वतंत्रता की घोषणा की गई। अमेरिका के ही विधान में सर्वप्रथम मानवता की समानता की अदालत में धर्म और राज्य को एक-दूसरे से पृथक करके, मानवता के पक्ष में डिग्री दी गई थी। मानवता ने उन्नति-पथ पर जितने महान कदम उठाए हैं, उनमें यह एक है।

तुम पूछोगे कि तीन सौ साल में यह आश्चर्यजनक परिवर्तन कैसे हुआ? मेरा उत्तर है-कुछ लोगों द्वारा किए गए आविष्कारों के कारण, कुछ लोगों के निर्भय-चिंतन और तदनुरूप कथनों के कारण, कुछ नई बातों की जानकारी के कारण।

इसके अतिरिक्त यह बात भी याद रखने की है कि हर बुराई में उसके विनाश का बीज भी छिपा रहता है। यह आसान नहीं है कि असत्य सदैव जीवित रहे। असत्य का वास्तविक घटना से कभी मेल नहीं बैठ सकता। असत्य का मेल किसी दूसरे, इसी उद्देश्य में घड़े गए, असत्य से ही बैठ सकता है। असत्य का जीवन केवल समय का प्रश्न है। एकमात्र सत्य ही अविनाशी है।

1441 में प्रेस का आविष्कार हुआ। उस समय तक अतीत एक विशाल श्मशान था, जिसमें किसी समाधि पर कुछ नहीं लिखा था। जिन दिमागों ने आदमियों के विचारों को जन्म दिया, उनके साथ वे विचार भी प्रायः नष्ट हो गए। मानव-जाति के होंठ सिले हुए थे। प्रेस ने विचारों को पर दिए। उसने विचारों की रक्षा की। उसने आदमियों के लिए यह संभव बना दिया कि वह भावी पीढ़ियों को अपने विचार रूपी धन का उत्तराधिकारी बना जाए। आरंभ में तो प्रेस का उपयोग पुराने लोगों की गलतियों की ही बाढ़ से दुनिया को पाट देने में हुआ, किन्तु उसके बाद से अब प्रेस दुनिया में प्रकाश फैल रहा है।

जब आदमी पढ़ते हैं, तो वे तर्क करना आरंभ करते हैं। जब वे तर्क करते हैं, तो वे प्रगति करते हैं। प्रगति की दिशा में यह दूसरा महान कदम था।

बारूद के आविष्कार ने भी किसान को राज कुमार के मुकाबले पर ला खड़ा किया। उसने तथाकथित वीरता के युग को समाप्त कर दिया। इसी के परिणामस्वरूप मनुष्यों की एक बड़ी संख्या सेनाओं से मुक्ति पा गई। अब पशुबल के साथ साहस, सूझ-बूझ और स्नायु बल ने भी अपना स्थान ग्रहण किया।

हर वास्तविक घटना की जानकारी ने आदमी के किसी न किसी मिथ्या-विश्वास को और आकाश में से किसी न किसी देवता को मार भगाया है। मशीन से संबंध रखने वाली हर कला अपने में एक शिक्षक है। हर करघा, हर धान्य काटने की मशीन है, हर पानी का अग्निपोत (जहाज), हर रेल का इंजन, हर दूसरी तरह का इंजन, हर प्रेस तथा हर तारघर, विज्ञान और प्रगति का एक प्रचारक है। हर कारखाना, हर भट्टी तथा हर भवन जहां आदमी की आसानी, उपयोग, आराम और उसको ऊपर उठाने की कोई भी चीज बनती है, एक गिरजाघर है। हर स्कूल-भवन एक मंदिर है।

संसार की शिक्षा ही सबसे अधिक परिवर्तन ललाने वाली वस्तु है।

किसी को वर्ण-माला सिखाने का मतलब है एक क्रांति को आह्वान देना।

एक स्कूल-भवन का बनाना एक किले का निर्माण करना है।

हर पुस्तकालय एक शास्त्रागार है, जोकि 'प्रगति' के अस्त्र-शस्त्रों और गोला-बारूद से भरा हुआ है।

मैं आविष्कार को धन्यवाद देता हूं और ध
ान्यवाद देता हूं नई बातों का पता लगाने वालों को तथा विचारकों को। मैं कोलम्बस और मेगेलन को

धन्यवाद देता हूं। मैं गैलीलियो और कॉपरनिक्स, केपलर और डेसरटीस तथा न्यूटन औा लेपलेस को धन्यवाद देता हूं। मैं लॉक, हयूम, बेकन, शेक्सपीयर, कांट, फिचे, लिबनिज और गेटे को धन्यवाद देता हूं। मै। फलटन, बाट्स, वोल्टा, गालबनी, फ्रेंकलिन और मोर्स को धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने बिजली को आदमी का संदेशवाह बनाया। मैं क्रोम्पटन और कर्कराइट को धन्यवाद देता हूं कि जिनके दिमाग से वे करघे और तकवे निकले जो संसार को कपड़ों से ढांकते हैं। मैं लूथर को गिरजों की बुराइयों के विरुद्ध प्रोटेस्ट करने के लिए धन्यवाद देता हूं, किंतु साथ ही उसकी निंदा भी करता हूं क्योंकि वह स्वतंत्रता का शत्रु था। मैं थॉमस पेन को धन्यवाद देता हूं, क्योंकि वह स्वतंत्रता में विश्वास करता था और क्योंकि उसने मेरे देश को स्वतंत्र बनाने में उतना ही बड़ा काम किया है, जितना किसी भी दूसरे आदमी ने। मैं वॉल्टेयर को धन्यवाद देता हूं, उस महान आदमी को जो पूरी आधी शताब्दी तक यूरोप का बौद्धिक बादशाह रहा औ जो एल्पस पर्वत के नीचे अपने सिंहासन पर बैठा रहा, किंतु ईसाइयत का कोई एक भी ढोंगी ऐसा नहीं था, जिसकी ओर उसने अपनी घृणा की उंगली न उठाई हो।

मैं निर्भय विचार रखने वाले बहादुर आदमियों को धन्यवाद देता हूं। ये वे ही हैं, जिन्होंने मिथ्या-विश्वासों की जंजीरों को तोड़ा है अैर अब भी तोड़ रहे हैं।

आदमी का सुख ही एकमात्र संभव कल्याण है। जो भी चीज आदमी को सुखी बनाने का कारण बनती है, वह उचित है और मूल्यवान है। वे तमाम बातें जो आदमी के शरीर और मन के विकास का कारण होती हैं, वे तमाम बातें जो हमें अच्छे घर, अच्छे कपड़े, अच्छा भोजन, अच्छी फिल्में, बढ़िया संगीत, बढ़िया दिमाग और बढ़िया दिल देती हैं, वे तमाम बातें जो हमें अधिक बुद्धिमान और अधिक स्नेही बनाती हैं, वे तमाम बातें जो हमें अच्छे पति-पत्नी, अच्छे बच्चे और अच्छे नागरिक बनाती हैं-ये सभी चीजें मिलकर उस चीज को जन्म देती हैं, जिसे मैं 'प्रगति' कहता हूं।

आदमी उसी मात्रा में विजय प्राप्त करता है, जिस मात्रा में वह प्रकृति की बाधाओं पर विजय प्राप्त करता है। यह कार्य केवल श्रम और विचारों से ही हो सकता है। श्रम ही सबका आधार है। बिना श्रम के, बिना महान श्रम के प्रगति असंभव है।

श्रम से पैदा हुए अतिक्ति धन से ही स्कूल और विश्वविद्यालय बने और चालू हुए। इस धन से चित्रकार अपने चित्रों के लिए, मूर्तिकार अपनी सुंदर मूर्तियों के लिए और कवि अपने आशा, प्रेम तथा आकांक्षाओं के गीत गाने के लिए मजदूरी पाता है। इसी अतिरिक्त-धन ने हमें पुस्तकें दी हैं, जिनसे हम मानव-जाति के मृत और जीवित राजाओं से संबंध बनाए रख सकते हैं।

मैं जानता हूं कि इस बारे में बड़ा मतभेद है कि वास्तविक प्रगति किसे माना जाए? बहुत से लोग वर्तमान विचारों को समस्त सुख तथा सारी भलाई का विघातक मानते हैं। मैं जानता हूं कि बहुत से लोग अतीत के ही पुजारी हैं। वे प्राचीन पूजा केवल इसलिए करते है, क्योंकि वह प्राचीन हैं। उन्हें किसी ऐसी चीज में कुछ भी सौंदर्य नहीं दिखाई देता, जिस पर युगों से पड़ी हुई धूल को उन्हें अपनी प्रशंसा और स्तुति की सांसों से उड़ाना न पड़े। उनका कहना है कि पुराने राजाओं के समान राजा नहीं, धर्म नहीं, कारीगर नहीं, वक्ता नहीं, कवि नहीं, नीति का जानकार नहीं। दो हजार वर्ष से जो धूल में मिल गए हैं, उनके समान उन्हें कोई दिखाई नहीं देता। कुछ दूसरे लोग हैं, जो एकमात्र आधुनिक होने के कारण ही आधुनिक से प्रेम करते हैं।

इसमें इतनी कृतज्ञता अवश्य होनी चाहिए कि हम अपने पूर्वजों की महानता और शौर्य के लिए उनके आभारी बने रह सकें और इतनी स्वतंत्रता भी होनी चाहिए कि हम किसी बात को केवल इसीलिए न मानें, क्योंकि यह हमारे पूर्वजों की कही हुई है।

श्रम को प्रगति का आधार मानने के साथ ही यह सत्य भी जुड़ा हुआ है कि श्रमिक स्वतंत्र मानव हो।

अपने स्त्री और बच्चों के लिए कार्य करने वाला स्वतंत्र मानव, अपने दिमाग और हाथों के कार्य में समन्वय स्थापित करता है।

थोड़े से समय में अधिक से अधिक कार्य कर सकता ही स्वतंत्र श्रम की सबसे बड़ी समस्या है।

गुलाम अधिक से अधिक समय में कम से कम काम करता है।

श्रम के स्वतंत्र होने से हमें धन मिलेगा। विचार के स्वतंत्र होने से हमें सत्य की प्राप्ति होगी। प्रेत-आत्माओं में विश्वास करने वाले लोगों की यह घोषणा है कि पृथ्वी पर एकमात्र वे ही बुद्धिमान और शीलवान हैं। वे अब भी यह मानते हैं कि उनमें और अविश्वासियों में इतना अधिक भेद है कि वे अनंतरूप में पुरस्कृत होंगे और दूसरे अनंतरूप में दंडित।

मैं आज आपसे पूछता हूं कि क्या इन सांप्रदायिक लोगों के सिद्धांत 19वीं शताब्दी के लि और दिमाग को संतुष्ट करते हैं?

क्या लोग इन सांप्रदायिक लोगों का विश्वास करते हैं? क्या कोई व्यापारी किसी को भी केवल इसलिए उधार देगा कि वह संप्रदाय-विशेष का आदमी है?

क्या पादरी-पुरोहित सामूहिक रूप से अपने परिवार के लोगों के प्रति डाक्टरों, वकीलों, व्यापारियों तथा किसानों की अपेक्षा अधिक दयावान होते हैं, अधिक अच्छा व्यवहार करते हैं?

जब हमारे यहां ही अपराधों की भरमार है, तो हम दूसरे देशों में पादरियों को धर्म-प्रचारक बनाकर क्यों भेजें।

क्या आरंभिक पाप-कर्म के बारे में झगड़ते रहने में कुछ सार है, जबकि इतना अधिक पाप-कर्म विद्यमान है?

क्या सांप्रदायिक सिद्धांतवादी लोग नवीन सत्यों का स्वागत करने वाले होते हैं? क्या वे अपनी स्पष्टवादिता के लिए प्रसिद्ध हैं? क्या वे अपने विरोधी के साथ सज्जनता का व्यवहार करते हैं? क्या वे खोज-कार्य करते हैं? क्या वे हमें आगे बढ़ाते हैं, अथवा पीछे खींचते हैं?

क्या सांप्रदायिकता ने विज्ञान को कोई एक भी वास्तविक जानकारी देकर अपना कृतज्ञ बनाया है?

किस संप्रदाय ने किस पीड़ित सत्यवादी की रक्षा की है?

किस संप्रदाय ने बड़े सुधार का प्रारंभ किया है?

क्या ईसाइयत ने दास-प्रथा को नष्ट किया?

क्या ईसाइयत ने युद्ध के विरुद्ध घोषणा की?

मैं सोचा करता था कि मजहब किसी को कुछ करने से रोक नहीं सकता। इस विषय में मेरा विचार बदल गया है। मजहब आदमी को बनावटी अपराध और मर्यादाओं का उल्लंघन करने से रोक सकता है।

क्या आदमी ने दूसरे ही हत्या कर दी। उसके विरुद्ध प्रमाण इतना पक्का और स्पष्ट था कि उसने अपराध स्वीकार कर लिया।

उससे पूछा गया कि उसने अपने एक भाई को क्यों मार डाला?

'रुपए के लिए।'

'क्या कुछ मिला?'

'हां।'

'कितना?'

'पंद्रह पैसे (सैंट)'

'तुमने उन पैसों का क्या किया?'

'खर्च कर दिया।'

'किसलिए?'

'शराब के लिए?'

'मृत आदमी के पास और तुम्हें क्या मिला?'

'एक बालटी मे उसके पास उसका भोजन था, कुछ रोटी और मांस।'

'उसका तुमने क्या किया?'

'मैंने रोटी खा ली।'

'मांस का तुमने क्या किया?'

'मैंने उसे फैंक दिया।'

'क्यों?'

'उस दिन शुक्रवार था।'

जान के साथ, आज्ञाकारी होना समझदारी पूर्ण स्वीकृति मात्र रह जाता है। इससे किसी प्रकार का पतन नहीं होता। जो समझ में आ गया है, जो ज्ञात है, उसके संबंध में स्वीकृति स्वामी का काम है, किसी दास का नहीं। यह आदमी को ऊपर उठाता है, नीचे नहीं गिराता।

आदमी यह जान गया है कि स्वयं स्वतंत्र रहने के लिए उसे दूसरों को स्वतंत्रता देनी चाहिए। वह जान गया है कि जो मालिक होता है, वह भी दास होता है। जो अत्याचारी है, वह स्वयं गुलाम है। वह जान गया है कि सरकार की व्यवस्था आदमियों द्वारा

होनी चाहिए और आदमियों द्वारा होनी चाहिए और आदमियों के लिए, सभी के अधिकार समान हैं। किसी को ईश्वर की ओर से कोई अधिकार नहीं मिला, स्त्री का दर्जा कम से कम पुरुष के बराबर अवश्य है, क्योंकि आदमी धर्म-ग्रंथों के अस्तित्व में आने के पहले से है। मजहब विचार की एक अवस्था मात्र है, जिसमें से संसार गुजर रहा है। सभी मत आदमी के बनाए हुए हैं। इसलिए सभी कुछ प्राकृतिक है और चमत्कार अथवा करिश्मा एक असंभव घटना है। हम संसार के आदि-अंत के बारे में कुछ नहीं जानते कि अज्ञेय के संबंध में हम सभी समान रूप से अज्ञानी हैं। पुरोहित के कथन का सामान्य जन खंडन कर सकता है कि आदमी अपने तथा जिनकी उससे हानि पहुंचे, उनके प्रति उत्तरदायी है और सभी को सोचने का अधिकार है।

सच्चे धर्म को स्वतंत्र होना चाहिए। दिमाग की सम्पूर्ण मुक्ति के बिना सच्चा धर्म हो ही नहीं सकता। गुलाम झुक सकता है, रेंगकर चल सकता है, किंतु न वह पूजा कर सकता है, न प्रेम कर सकता है।

सच्चा-धर्म एक स्वतंत्र और कृतज्ञ हृदय की सुगंध है। सच्चा-धर्म राग-द्वेषादि वृत्तियों को बुद्धि के अधीन करता है। सच्चा-धर्म कोई सिद्धांत नहीं है, आचरण है। मत नहीं है, जीवन है।

यदि कोई सिद्धांत परीक्षण से डरता है, तो उसके लिउ आदमी के दिमाग में कोई जगह नहीं होनी चाहिए।

मैं सारे के सारे सत्य को बता सकने का झूठा दावा नहीं करता। मैं केवल स्वतंत्रता के पक्ष की वकालत करता हूं। मैं आदमियों की अंतरात्मा के लिए प्रकाश और वायु चाहता हूं। मैं कहता हूं, इन जंजीरों को दूर करो, इन बेड़ियों को कांटों, इन अंगों को मुक्त करो, इस दिमाग को स्वतंत्र करो। मैं सोचने, तर्क करने तथा खोज करने के अधिकार के पक्ष में लड़ता हूं कि भविष्य आदमी के ईमानदाराना-विचारों से धनी हो। मैं हर आदमी से बड़ी विनम्रता से प्रार्थना करता हूं कि वह प्रगति की सेना का सैनिक बने।

मैं किसी दूसरे के अधिकार पर आक्रमण नहीं करूंगा। तुम्हें कोई अधिकार नहीं कि तुम विचार-स्वातंत्र्य के मार्ग पर अपना चुंगीधर बनाओ। तुम जो चाहो, विश्वास करो, जिस बात का चाहो उसका प्रचार करो, जितने धार्मिक रीति-रिवाज चाहो उतने रखो, अपने तरीके पर अपनी स्वतंत्रता का पूरा उपयोग करो, किंतु दूसरों को भी वही अधिकार दो।

मैं न तुम्हारे सिद्धांतों पर आक्रमण करूंगा, न तुम्हारे मतों पर, यदि वे मेरी स्वतंत्रता में बाधक नहीं होते। यदि वे विचार करने को 'खतरनाक' समझते हैं। वे कहते हैं कि संदेह करना ही अपराध है, तो मैं एक सिरे से उन सबका विरोध करता हूं, क्योंकि वे आदमी के दिमाग को गुलाम बनाते हैं।

हम किसी अज्ञात लोक के फेर में पड़कर जो वास्तविक लोक है, उसका बलिदान क्यों करें? हम अपने-आपको गुलाम क्यों बनाएं? हम अपने ही हाथों अपने पांव में बेड़ियां क्यों डालें?

मैं प्रकाश चाहता हूं, खुली वायु चाहता हूं, अवसर चाहता हूं। मैं व्यक्तिगत स्वातंत्र्य के लिए लड़ता हूं। मैं श्रम और स्वतंत्र-चिंतन के अधिकारों के लिए लड़ता हूं। मैं बंधनमुक्त भविष्य के लिए लड़ता हूं।

मनुष्य इन प्रेतों से कहीं बड़ा है। मानवता सभी मतों, सभी पुस्तकों से महान है। महानता एक महान समुद्र है और ये मत, पुस्तकें ओर मन केवल एक दिन की लहरें हैं। मानवता आकाश है और ये धार्मिक-सिद्धांत और मत लगाकर बदलने वाले धुंध और बादल हैं, जो एक दिन निश्चित रूप से हट जाएंगे।

जिसका आधार गुलामी है, भय है, अज्ञान है, वह कभी चिरस्थायी नहीं हो सकता। भविष्य के ध र्म में पुरुष, स्त्री और बच्चे होंगे और होंगी उनकी तमाम कोमल-भावनाएं तथा मानव-हृदय की तमाम आकांक्षाएं।

ये प्रेतात्माएं विदा हों। हम अब उनकी और पूजा नहीं करेंगें वे अपनी खाली जगहों को जिनमें आंखें नहीं हैं, अपने मांस-हीन हाथों से ढक लें और आदमी के कल्पना-जगत से सदा के लिए विलीन हो जाएं।

......*(कर्नल इंगुरसोल की पुस्तक 'स्वतंत्र चिंतन')*

***

धर्म और पहचान

-डा. श्याम सुंदर दीप्ति
098158-08506

धर्म, परमात्मा व कर्मकांडों के तंत्र के पीछे, जो केंद्रीय भाव समझने का है, वह है तर्कशीलता। इस पहलू के तीन संकल्पों को अलग-अलग ढंग से समझते हुए, कर्मकाण्डोंको लेकर समाज में हमेशा ही असमंजस या बेचैनी रहती है। परमात्मा को लेकर भी अधिकतर लोगों के दिमाग में अस्पष्टता रहती है कि, है,....नहीं है,......शायद हो। यह दुनियां चलाने वाला कोई तो जरूर है?

पर जब मुद्दा धर्म को लेकर चर्चा में आता है, अधिकतर लोग इसके हक में आ खड़े होते हैं। वह समझते हैं....। यहां तक भी कहा जाता है कि धर्म की भावना को ठीक तरह न समझने वाले, इसकी व्याख्या ही गलत करते हैं।

⊙ ⊙ ⊙

अगर हम विश्लेषण करके देखें तो धर्म अपने आप में किसी भी तरह स्वतंत्र संकल्प नहीं है। धर्म के संग परमात्मा व कर्मकाण्डोंकी बात कुछ इस तरह जुड़ी है कि इन्हें अलग नहीं किया जा सकता और यह इस तरह नजर आते हैं जैसे एक-दूसरे के बिना इनका अस्तित्व संभव ही न हो।

⊙ ⊙ ⊙

मानवीय विकास श्रृंखला में, समाज के अस्तित्व और आदी मानव की समझ और जरुरत से धर्म और परमात्मा को जोड़ कर रखने की कोशिश करें तो :

समाज का अर्थ है मिल कर रहना, एक-दूसरे का सम्मान करना, बच्चों से स्नेह, बड़ों का कहना मानना, सभी के काम आना....।

एक सहमति व संगठन हासिल करने की जरुरत है और इसे संचालित करने के लिए नियम बनते भी हैं। परिवार बच्चों को अदब, शिष्टाचार सिखाता है। इसे परम्परा, सभ्याचार या नियम आदि कुछ भी कह सकते हैं।

अपने तयशुदा कार्य को करना, अपने कर्त्तव्य को तनदेही से निभाना, दायित्व से न कतराना, धर्म के प्राथमिक कार्यों के रूप में प्रचलित है।

कुछ लोग होते हैं, जो नियमों को नहीं मानते। वह अपनी मनमर्जी करते हैं। कुछ नियमों का गलत इस्तेमाल भी करते हैं और कुछ अपने पदों को व बड़े होने के कर्त्तव्य को भी सही ढंग से नहीं निभाते।

इस स्थिति से जुड़ता है कि यह विशेष नियम, मानवीय मूल्योंसे संबंधित, हमने नहीं बनाए। यह एक अदृश्य ताकत, परमात्मा से आते हैं। वह कोई अपना कोई प्रतिनिधि भेजता है, इन्हें धरती पर प्रसारित करने के लिए। वह परमात्मा, वह सत्ता, जो सबको पैदा करती व चलाती है।

प्रकृति को संचालित करने, कुदरत के सभी रंगों-अंगों के बीच आपसी तालमेल बैठाने के पहलू से, परमात्मा की दलील संतुष्ट करती है। परमात्मा का संकल्प, चाहे नियमों को लागू करवाने में था या कुछ एक लोगों की अकड़ को कायम रखने के लिए, यह समाज की कार्यशैली में पूरी तरह रम गया।

इस प्रकार मानवीय मूल्यों को व्यवहार में लाने के लिए, परमात्मा का रूप गढ़ा गया। परमात्मा को जन्मदाता कहना भी, सबको जंचा क्योंकि तब बच्चे का जन्म भी रहस्य ही था।

⊙ ⊙ ⊙

परमात्मा है। सबका पिता है। उसकी पूजा करनी है, इज्जत।

परमात्मा है। बच्चों से रूठ गया है। बच्चों ने कुछ गलत किया है, उसे मनाया जाए।

परमात्मा है, उसके आदर्शों को न मानना, उसके कहने में न रहना, उसकी मर्जी को अस्वीकार करना, मतलब क्रोध।

ऐसे अनेकों ही भाव जुड़ते गए....।
पूजा, मनाना, क्रोध को टालना और फिर....।
इसी संदर्भ में एक के बाद एक कर्मकाण्ड।

◎ ◎ ◎

इस तरह धर्म, परमात्मा और कर्मकाण्ड इस कार्य प्रणाली के अटूट अंग हैं या यूं यह मिल कर रहते हैं।

इस सारी समझ के बावजूद, धर्म की चर्चा अक्सर मानवीय मूल्यों के इर्द-गिर्द आकर, इसका हाथ थामती है। धर्म को आश्रय देने वाले या उससे आश्रय लेने वाले, जब भी धर्म की आड़ में, कर्म काण्ड के लिबास और परमात्मा की चर्चा होती सुनते हैं तो कहने लगते हैं कि धर्म को कर्मकाण्डों व परमात्मा को एक ही दायरे में नहीं लेना चाहिए।

बात होती है-धर्म और मानवीय मूल्यों की, कदरों-कीमतों की।

वर्तमान संदर्भ में एक टिप्पणी होती है-मानवीय मूल्य नष्ट हो रहे हैं...और फिर साथ ही कहा गया है कि लोग धर्म से मुंह मोड़ रहे हैं, इसलिए ऐसा हो रहा है।

हम यह क्यों नहीं सोचते कि ऐसा क्या घट गया है। धर्म, जो इतना ही बेहतर पहलू है, लोगों को आपस में जोड़कर रखने में नाकाम क्यों हो रहा है?

आज, हम स्थिति के मद्देनजर अपने-आपको किसी भी धर्म से पहचान न करवाने वालों की, धर्म को न मानने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। कहने का तात्पर्य है कि जो नास्तिक है, जो धर्म से बेमुख है।◎ ◎ ◎

धर्म, अगर मानवीय नैतिक मूल्यों को चलाने-बढ़ाने वाला, लोगों में मानवीय मूल्य भरने वाला संकल्प है तो धर्म का पहचान से क्या वास्ता है?

धर्म अगर प्यार मोहब्बत, सद्‌भाव, आपसी सहयोग, सुख-दुख में काम आना, दया सिखाता है, तो इसके लिए किसी पहचान या किसी धर्म विशेष की क्या भूमिका है?

क्यों इस बात से शुरुआत होती है।

-जनाब! आपका का कौन सा धर्म है?

वास्तव में हमें समझना चाहिए कि :

आदी मानव द्वारा धर्म का संकल्प, लोगों को एक अच्छे मार्ग पर डालने के लिए ढूंढा गया होगा, जो हम इससे मानवीय मूल्यों को जोड़ते हैं।

हमने अक्सर विपरीत प्रचार करते देखा है।

धर्म के साथ खड़े होवो। धर्म के प्रति आस्था रखो। अपने धर्म के प्रति डांवाडोल न होवो, आप स्वयं अच्छे इन्यान बन जाओगे।

वास्तव में प्रचार इस तरह होना चाहिए।

इन अच्छे गुणों को अपनाओ, सबसे प्यार करो, सारे मनुष्य, जीव, हवा, पानी भाव सारी प्रकृति से। सबसे मिल कर रहो...। फिर चाहे आप किसी भी राह पर चलो, चाहे जैसी जीवनशैली को अपनाओ, किसी को क्या एतराज है?

अच्छे नैतिक मूल्य धारण किए हुए व्यक्ति में से, धर्म की भूमिका, धर्म की पहचान, खुद-ब-खुद खारिज हो जाती है।

◎ ◎ ◎

अपने धर्म का साथ देते देते, व्यक्ति अपने धर्म के प्रति अड़ने लगता है और उसकी बात मानी न जाए तो मरने-मारने लगता है। यह कोई काल्पनिक बात नहीं है। हमारा सब का जाना-पहचाना अनुभव है।

अपने धर्म का साथ दो....चलो मान लिया, पर किसी और पर जोर-जबर, यह क्या है? किसी को लालच देकर, उसकी गरीबी-मजदूरी को आधार बनाकर धर्म परिवर्तन क्या है? न मानने पर गुस्सा, घृणा, झगड़ा यह सब क्या दर्शाते हैं?

यह व्यवहार, अपनी गिणती बढ़ाने का, धर्म से क्या नाता है? गणती बढ़ाना तो ताकत होती है या दिखावा। तो इन दोनों हालातों में तो मानवीय मूल्यों की कोई भूमिका नहीं रहती है।

अगर धर्म मानवीय मूल्यों का ही राह है तो फिर क्या धर्म परिवर्तन से, लालच या जोर-जबर से, मानवीय मूल्यों में भी बदलाव आ जाता है?

◎ ◎ ◎

धर्म के लिए प्रयोग होता अंग्रेजी का शब्द

रीलेजन का वास्तविक अर्थ है जुड़ना (री+लेजन)। इसमें मानवीय मूल्यों का सीधे तौर पर मुख्य अंश नहीं है। कदरें-कीमतें होती हैं : ऐथिकस।

जुड़ना मानव की केंद्रीय भावना है। जीव विकास में, धीरे-धीरे एक पंक्ति में चलना, एक डार, एक झुण्ड व फिर समाज का संकल्प जुड़ा।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है क्योंकि यह मिल कर रहता है। समाज झुण्ड नहीं है मनुष्य मानसिक स्तर पर भी जुड़ता है। चाहता है कि कोई उसका साथी हो। साथ ही, लोगों की अनुपस्थिति उसको परेशान-बेचैन करती है। मनुष्य अकेला नहीं रह सकता। मनुष्य को मिल कर रहने में ही संतुष्टि मिलती है।

जुड़ने के लिए मानवीय मूल्यों के समझने की जरूरत है और नैतिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए नियम होते हैं।

मानवीय मूल्य सर्वव्यापक, सभी मनुष्यों के लिए एक समान होते हैं। जब हम प्यार, सहयोग, दया, भाईचारे की बात करते हैं, तो यह दुनिया के हर क्षेत्र व भाग में रहते लोगों पर लागू होती है। यह मनुष्य के लिए है, धार्मिक या किसी विशेष वर्ग व क्षेत्र के लिए नहीं है।

पहचान-क्षेत्र की, किसी भूभाग की, वहां की भाषा की, खाने-पीने, पहनने की हो सकती है। प्यार, दया व सहयोग के लिए अलग पहचान क्या होनी है?

⊙ ⊙ ⊙

धर्म को लेकर कई तरह के शीर्षक इस्तेमाल होते हैं। हिन्दू धर्म, सनातन, मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख, गुरमत, बुधमत, कबीर पंथी, गुरु रविदास मार्ग....। यहां धर्म, मत, पंथ, मार्ग....। एक ऐसा भाव सामने आता है कि जैसे यह सभी राहें हैं। अब किस राह पर चलना है, किस तरह की सुविधाओंव साजो-समान के साथ चलना है....। तात्पर्य यह कि जो कर्मकाण्ड, खाना-पीना, पहनना, दिखावा व...। यह सभी किस तरह लेकर जाएंगे मानवीय मूल्यों की तरफ?

कहने का अर्थ है कि मानवीय मूल्य जोकि सभी मानवों के लिए समान हैं, एक सी जरूरत है सबकी, वह प्रमुख नहीं हैं, वासतव में सरा जोर 'राह' पर है।

हमारा रास्ता बेहतर है, अच्छा है, परमात्मा तक ले जाने का एक मात्र मार्ग। गारंटीशुदा। अपना यह जन्म सुध करने का, अगले जन्म में अच्छा पाने का, स्वर्ग में सीट लेने की 'राह'।

इस धरती का, इस धरती के मनुष्य का, आज वर्तमान का, लोगगें से जुड़ने, उन्हें एक आलिंगन में लेने का, मानवता का....यह सब इन राहों की चिंता नहीं है।

धर्म का संकल्प अगर किसी को अच्छा लगता है, किसी के मन को छूता है, तो निश्चित ही हमें मानवता से, बिना किसी पहचान से, बिना किसी दिखावे से, ऊपर रखने की आवश्यकता है।

सवाल केवल, धर्म के संकल्प को तर्कशीलता के दायरे में लेकर आने का है। जबकि हम रोजमर्रा की जिंदगी में देखते हैं कि धर्म, तर्कशीलता को नकारता है या यूं कहें कि धर्म के पास अपनी बात कहने का, अपनी बात रखने और कही हुई बात पर अड़ने की अपनी दलीलें हैं, अपने तर्क हैं, जोकि विज्ञान की कसौटी पर सही नहीं बैठते हैं।

सम्पर्क-98158 08550 6

अनमोल वचन

एक और शताब्दी बीतने दो, पृथ्वी पर एक भी बाईबल नहीं बचेगी।

....

'धर्म का प्रारम्भ उस समय हुआ, जब प्रथम ठग को प्रथम बुद्धू मिला।'

-वाल्टेयर (1694-1778)

(इन्लाईटनमेंट का फ्रांसीसी लेखक एवं दार्शनिक जो अपनी समझबूझ एवं सामाजिक स्वतत्रंता के हक में बोलनेके लिए जाना जाता है।)

....

ईश्वर का बहिष्कार

-राधामोहन गोकुलजी

गतांक का शेष :

टामस पेन ने ज्योतिषशास्त्र का बड़ी निपुणता के साथ वर्णन करने के पश्चात् यह कह दिया कि यह सब ईश्वरीय चातुर्य्य का ही फल है, कोई तर्क नहीं है। जो भद्र पुरूष ईश्वरीय पुस्तकों का आपौरुषेय ग्रन्थ होना अस्वीकार करता हो और उनके खण्डन में तर्क और इतिहास से काम लेता हो वही एक कल्पना मात्र के आधार पर अपनी प्रतिज्ञा की सिद्धिमान ले, यह कितने बड़े आश्चर्य की बात है। इसी तरह महात्मा मटजीनी ने भी, अपने समय के एक अद्वितीय दार्शनिक होते हुए, ईश्वर को सिद्ध करने में जो तर्क सामने रखा है, वह बहुत हास्यास्पद है। आप कहते हैं-सार्वभौम और आदिम विचार, जिनका ग्रहण करना सदा शाश्वत समझा जाता है, सारे संसार के भाव और विश्वास मिथ्या एवं भ्रममूलक नहीं हो सकते। यह तर्क अनेक प्राच्य और पाश्चात्य विद्वानों ने मेरे सामने पेश किया, लेकिन जो इसी का नाम तर्क और लाजिक है तो मैं कहूँगा कि संसार में तर्कशास्त्र का होना ही व्यर्थ है। बेकुनिन' (रूसी विद्वान् प्राउढन का समकालीन) ने ठीक कहा है कि जो तर्क की यही दशा है कि जो बात भूत और वर्तमान के सब लोगों ने ठीक मान ली है और मानते हैं, उसे तुम भी मान लो और कह दो कि खुदा है और तुम नहीं मानते-'किम्, कस्मात, कारणात' से काम लेते हो- ईश्वर के अस्तित्व में सन्देह करते हो- तो तुम्हारा तर्क गया भाड़ में, तुम प्रत्यक्ष राक्षस हो। तब तो हमें भी मूर्खो की तरह बुद्धि को विदाई देकर ठकुरसुहाती करनी पड़ेगी। लेकिन कोई जवाँ मर्द अनी बुद्धि के विरूद्ध किसी के भय से भद्दी बात को ठीक नहीं मान सकता। हाँ, हम यह जरूर मान लेंगे कि जो बातें अनन्त काल से सबने मान रखी हैं उनमें अनेक तर्क और विज्ञान-विरूद्ध कल्पनाएँ हैं। ऐसी कल्पनाओं की जाँच-पड़ताल करना प्रत्येक नवयुवक का धर्म है। अन्धों के अनुगतों का कल्याण इस संसार में असंभव है। बहुत काल तक संसार पृथ्वी को चपटी मानता रहा तो क्या हम उसे आज भी चपटी ही मान लेंगे ? इसी तरह की हजारों बातें हैं, जिन्हें संसार अनादि काल से एक तरह पर मानता चला आता था, विज्ञान ने उन्हें झूठा सिद्ध कर दिया और सच्चाई सामने रख दी, तब हमें सत्य को मानना ही पड़ा।

लोग पहले पानी को एक तत्व समझते थे पर आज यह मानने को तैयार नहीं, क्योंकि हम जान गये हैं कि आक्सीजन और हाइड्रोजन नाम के दो वायव्य पदार्थो के योग से जल बना है। यदि हम आज समझ गये कि खुदा नाम का कोई पदार्थ न तो है और न हो सकता है तो हमारा काम है कि हम इस शब्द को अपने कोषों में से निकाल डालें और धर्म की बेहूदगी से अपना पल्ला पाक करें। संसार में बेहूदगी, अन्याय, अत्याचार से ज्यादा पुरानी चीजें और कोई भी नहीं। पहले लोग स्त्रियों को उनके पिता से छीन कर ले जाते थे। इस रीति का प्रमाण आज भी ब्याहों में पाया जाता है, लेकिन क्या आज भी कोई इस बात को पसन्द करेगा ? फिर ईश्वर को फिजूल पकड़कर बैठना कहाँ की बुद्धिमत्ता है।

'बहुतेरे लोग कहते हैं प्रकृति और पुरूष भिन्न नहीं, एक ही हैं। जैसे द्रव्य में शक्ति, मेंहदी के पत्ते में सुर्खी। इसलिए ईश्वर है और सर्वव्यापी है।' हजरात, बिना गुलाब के गुलाबी रंगत कहाँ ? जो यह कहें कि गुलाब भी है और गुलाबीपन भी, इसी तरह ईश्वर भी है और प्रकृति भी। प्रकृति में जो शक्ति है वही ईश्वर है तो मैं कहूँगा कि ईश्वर द्रव्यगत शक्ति का नाम है, वह कोई पृथक पूज्य पदार्थ नहीं, न वह न्यायशील और ज्ञान का इतना न्यारा गहरा गढ़ा है, जिसे हम नाप न सकें। ईश्वर यदि केवल गति, शक्ति, फोर्स का एक पर्याय मात्र है तो रहने दो। इसके लिए लंबी-लंबी नमाजों और बड़ी-बड़ी उपासनाओं की क्या जरूरत है ? बड़े-बड़े पोथों के पाठ, मंत्रों के जप, तिलक-माला और गद्य-कथाओं से क्या लाभ ?

विज्ञान पढ़ो, द्रव्यगत ईश्वर की उपासना से नये-नये आविष्कारों में लग जाओ। बड़े-बड़े आविष्कर्त्ताओं को ही अवतार, नवी और वली समझो, उन्हीं की खोज की पुस्तकों को धर्म पुस्तक मानों, संसार को अकारण धोका देने से क्या लाभ?

(3) अब हम जरा अल्लाह मियां की पैदाइश की तरफ ध्यान देना चाहते हैं। क्योंकि अजन्मा, निर्विकार आदि नामों से लोग उसे पुकारा करते हैं? जब मेरा मूल मंतव्य यही है कि ईश्वर के लिए जनता के हृदय-पटल से उड़ा दिया जाय तो जैसे कुश की जड़ खोदकर मट्ठा डाला जाता है, उसी तरह ईश्वर की भी जड़ खोदकर उसमें कैरोसिन तेल डालना पड़ेगा। इसलिए ईश्वर की जड़ तलाश करके उसका नाश करना मेरे लिये अत्यन्त आवश्यक काम हो गया। यदि हमने तर्क से लोगों के ऊपरी साधारण विचारों को पलट भी दिया तो क्या फिर लोग दूसरे नाम और रूप से एक नई कल्पना खड़ी न कर लेंगे? जैसे मूर्त्ति-पूजन छोड़ने पर भी मुसलमान संग असबद को बोसा देने लगे, मुहम्मद साहब की कब्र की जियारत और काबे की मस्जिद को सिजदा करने पर उतर पड़े, कुछ लोग ताजिये बनाने लगे, कितने हर किसी कब्र पर फूल-चद्दर चढ़ाना, फातेहा पढ़ना सीख गये, यही हाल हिन्दुओं, ईसाइओं और जैनों का भी है। इसलिए जड़ से ही खुदा परस्ती की कला कमा हो, तभी कुछ काम हो सकता है। अस्तु, हम ईश्वर की पैदाइश की खोज करके अपने ज्ञानवान विचारशील, धीर-वीर पाठकों को बतलातें हैं। हमारे परिश्रम से ईश्वर का नामनिशान ऐसा मिटे कि उसका कोई नाम लेने और पानी देने वाला बाकी न रहे, तो समझिये कि मेहनत सफल हुई। अगर जरा भी चिन्ह बाकी रहा, वट-वृक्ष की तरह फिर ईश्वर नये अंकुर फोड़ने लगा, तो संसार के सामने एक नई जहमत दिखाई देगी। आओ भाई अतिक्रान्ति से प्रेम करो- अपने बुद्धिदाता शैतान को सिंहासनारूढ़ किया, तभी से उसका सारे संसार में बोलबाला है। *अब बाकी यूरोप में खुदा इधर-उधर छिपकर दिन काट रहा है, मगर अभागे एशिया देश में उसकी डकैती बराबर जारी है।* इसलिए एशिया के प्रधान ज्ञान-क्षेत्र भारत से ईश्वर को सबसे पहले देश निकाला देना हम भारतवासियों का प्रधान कर्त्तव्य है। अगर हम सब नौजवान कमर कस लें, तो महात्मा गाँधी सरीखे दस-पाँच आदमियों की मदद से वह कभी स्थिर नहीं रह सकता है। आओ, इसकी जड़ का पता लगावें।

धर्म के भ्रम और ईश्वर की मिथ्या कल्पना के कुछ लोग वाल्टेयर की तरह समर्थक हैं, यह प्रजा में भय उत्पन्न करने की जरूरत बतलाते हैं। *यदि जरूरत के कारण ही ईश्वर और धर्म को माना जाय तो वह चिड़ियों को डराने वाले खेत में खड़े काठ के पुतले के सिवा और कुछ नहीं रह जाता।* जिस तरह प्राचीन एवं सार्वभौम कल्पना के आधार पर ईश्वर या धर्म का मानना विज्ञान और तर्क-शास्त्र के प्रतिकूल है, वैसा ही मूर्खों को डराने के लिए भी यह कल्पना बुरी और अमान्य है। जिनकी अंतरात्माएँ दृढ़ हैं, जो सत्य के अनन्य भक्त हैं, जो मनुष्य के ज्ञान और उसके तर्क को प्रतिष्ठा देते हैं, वे इस प्रकार की कल्पना करने में सर्वथा असमर्थ रहे हैं, और रहेंगे। मनुष्य जो धार्मिक विश्वास और ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किये बैठा है, उसका कारण बेसमझी और अविचार इतना नहीं है, जितना दुःख और हार्दिक असन्तोष। गरीब, फिर बेपढ़े लोगों का जीवन इतना बुरा है, उनको खाने-पहिनने आदि की इतनी तकलीफ है कि जब वे कुड़कुड़ाते और जलते हैं तो सारा दोष किसी ऐसी शक्ति के मत्थे मड़ देते हैं, जो उनसे भिन्न है। यदि वे ईश्वर के बदले अपने कष्टों का दायित्व जबरदस्त, सतानेवाले और अधिकार प्राप्त लोगों पर डालें तथा सामाजिक अतिक्रान्ति के लिए तैयार हों तो ज्यादा अच्छा होय इनका दुःख दूर हो जाय। ईश्वर को मान लेने से दुःखों से छुटकारा मिलता नहीं दीखता। यदि मिलता तो पत्थर को रोटी मान लेने से भी काम चल जाता। सारांश यह कि ईश्वर का जन्म मूर्खता से हुआ और भय, छल तथा संतोष ने इसकी यथा अवसर पुष्टि की।

सृष्टि की प्रारम्भिक अवस्था में मनुष्य का ज्ञान इतना समृद्धशाली नहीं था, जैसा अब है। उनकी योग्यता कम थी। उनके मनोवेग और ज्ञान यथार्थ काम न दे सकते थे जैसे बालक का हाल है। इसलिए उसने

देवी, देव नबी, रसूल, अवतार- जो भी किसी को सूझा, मान लिया। यह सब मनुष्य की ही कल्पना की, अपने ही रूप के अनुरूप की। राजदरबार, जबरदस्तों की तलवार, धनवानों का सुखमय आगार देखकर हमने भी ईश्वर के दूत, जेल के बदले नरक, भोग-विलास के स्थान में स्वर्ग आदि की कल्पना कर ली। पुराण, बाइबिल, कुरान की गाथाओं को देखकर इस कल्पना की निःसारता सहज ही समझ में आ जाती है। जिस तरह बच्चे अपनी मातामही, पितामही से झूठी लम्बी-चौड़ी कथाएँ सुनकर कल्पना किया करते हैं, मनुष्यों ने भी अपने स्वार्थी भाइयों से, जो कुछ अधिक चतुर थे, कथाएँ सुनीं और धर्म के नाम से, भोलेपन के कारण, सत्य मान बैठे। इस गप्प को लोग न मानते तो पोप, खलीफा, गोस्वामी पण्डित-पन्डे, पुजारी प्रभृति लोग जनता के धन से मोटे बनकर न बैठ सकते। एक बार कल्पित ईश्वर को गद्दी पर बिठाकर जैसे मन्दिर में मूर्ति स्थापित करके लोग संसार को ठगने लगते हैं, उसी तरह विद्वानों और बात बनानेवाले लोगों ने यह कह कर ठगना आरम्भ किया कि 'वह बड़ा दयालु, न्यायकारी, सारे जगत् का नियन्ता, विनाशक और बनानेवाला है', इत्यादि। इस तरह कल्पित ईश्वर की वेदी पर भोले-भाले लोगों का बलिदान प्रारम्भ हो गया, और हो रहा है। ईश्वर को स्वामी और मनुष्य को दास मानने से ही संसार में गुलाम और स्वामी की सृष्टि हुई। इस विश्वास को लोगों ने अवतार और नबी आदि बनकर फैलाया, और पुजे। जब तक ईश्वर सबका स्वामी है, मनुष्य दास है। जहाँ ईश्वर का स्वामित्व मिटा कि मनुष्य की दासता का भी अंत हुआ समझो। इसलिए ईश्वर को मिटाना, मनुष्य की दासता को हटाना तथा मनुष्यों में समता और न्याय का प्रचार करना है। ईश्वर को मानना बुद्धि और न्याय को एकदम जलांजलि देना है- मनुष्य की प्राकृत स्वतंत्रता का निश्चय नष्ट करना है। इसलिए यदि हम मनुष्य-जाति का कल्याण चाहते हैं, तो सबसे पहले हमें धर्म और ईश्वर को गद्दी से उतारना चाहिए। आँखों से दिखलाई देनेवाले और बुद्धि-ग्राह्य जगत् को मिथ्या मानकर एक निर्मूल पदार्थ को सर्वश्रेष्ठ मान बैठने से बड़ी और क्या नादानी हो सकती है? धर्म ने मनुष्य को कितना नीचे गिराया, कितना कुकर्मी बनाया, इसको हम स्वंय सोचकर देंखे। ईश्वर का मानना सबसे पहले बुद्धि को सलाम करना है। जैसे शराबी पहला प्याला पीने के समय बुद्धि की विदाई का सलाम करते हैं, वैसे ही खुदा को माननेवाले भी बुद्धि से विदा हो लेते हैं। ईश्वर की कल्पना मनुष्य को निर्बल, निकम्मा, परमुखापेक्षी और गुलाम बना डालता है। धर्म ही हत्या की जड़ है। कितने ही पशु धर्म के नाम पर रक्त के प्यासे ईश्वर के लिए संसार में काटे जाते हैं, इसका पता लगाकर पाठक स्वंय देख लें। कितने झगड़े ईश्वर और धर्म के नाम पर होते हैं। आज हिन्दू मुसलमानों के बीच, भारत में जो परिस्थिति है, उसकी जिम्मेदारी धर्म ही पर है। आज कुरान को हटा दिया जाय, तो आज ही भारत में सुख शान्ति आ सकती है। हिन्दुओं में भी वही दोष है, जो मुसलमानों में किन्तु बहुत कम दर्जे में। दोनों में राई और पर्वत का अन्तर है। फिर भी दोनों ही गलती पर हैं। जितने पादरी, मौलवी, पण्डित, पुजारी और पण्डे धर्म का दम भरते हैं, ऊपर से बड़े भद्र होते हैं, पर इनके दिल बहुत काले होते हैं। इनकी आकांक्षा रहती है कि ईश्वर और धर्म के नाम पर हम ठगें, लोग ठगें जायें, और हमारे पीछे पागल की तरह फिरें।

आज हमारे देश के बड़े-बड़े विद्वान यदि ब्रिटिश गवर्नमेन्ट को निकाल देने के पहले ईश्वर को निकाल देते, धर्म की फाँसी अपने गले से निकाल फेंकते, तो उनमें कभी का इतना बल आ जाता कि अपने देश का शासन आप करते। ज्यों-ज्यों दुनिया में बुद्धि का विकास होता जाता है, त्यों-त्यों ईश्वर की थोथी कल्पना मिटती जाती है। समय आवेगा कि धर्म की बेहूदगी से संसार छुटकारा पाकर सुखी होगा, और आपस की कलह मिट जायेगी। खुदा है क्या वस्तु? कोई वस्तु? कोई व्यक्ति? कोई मनोगत भाव? कुछ नहीं- एकमात्र निर्मूल कल्पना, एक कुविचार जनित शब्द। मनुष्य से अधिक सुन्दर, चतुर, शक्तिशाली, ज्ञानवान भद्र परोपकारी, न्याय और दया को समझनेवाला, न तो कुछ है, न हो सकता है। लेकिन

जब कुछ मनुष्य दूसरों को सतानेवाले देखे जाते हैं, तो लोग एक सर्वश्रेष्ठ की कल्पना करते हैं। यह नहीं समझते कि मनुष्यों में भी भले और बुरे दोनों की पराकाष्ठा के नमूने हैं। इसी को देखकर ईश्वर में क्रोध, बदला, नाशकरी-शक्ति का आरोप किया गया है। मनुष्य का ही मनन करो, प्रकृति का पाठ पढ़ो, इसी में हमारा कल्याण है। एक अत्याचारी, एक मूर्ख शासक, खुद-मुख्तार और रद्दी ईश्वर की कल्पना करना मानों स्वतंत्रता, न्याय और मानव धर्म को तिरस्कार करके दूर फेंक देना है। यदि आप चाहें कि ईश्वर आपका भला करें, तो उसका नाम एकदम भुला दें। फिर संसार मंगलमय हो जायगा।मनुष्य के सरल, साधारण नैसर्गिक ज्ञान के हथौड़े से ही ईश्वर की कल्पना को टुकड़े-टुकड़े कर सकते हैं, लेकिन देखा जाता है कि आध्यात्मिकता के नये-नये जाल, मनुष्य जाति के गले की फाँसी को सुदृढ़ करने के लिए गढ़े जा रहे हैं। साधारण जनसमूह का कल्याण और हमारी मानसिक भलाई इसी में है कि हम ईश्वर की ऐतिहासिक उत्पत्ति को मनोयोग के साथ समझें, वे कौन से लगातार ऐसे कारण हुए, जिनसे मनुष्य ने अपने मन में ईश्वर की कल्पना की, इसका विचार करें। यदि हम लोग पढ़े-लिखे, विचारशील व्यक्ति अच्छी तरह ध्यान देंगे तो निःसन्देह हम थोड़ा-बहुत उस सार्वभौम अंतरात्मा की पुकार से, जिसका भेद हमने अच्छी तरह प्रकट नहीं किया, दब ही जायँगे। कड़े से कड़े दिल के आदमी में एक स्वाभाविक निर्बलता देखी जाती है। वह यह कि सामाजिक बन्धन के दबाव में मनुष्य आ ही जाता है और किसी न किसी प्रकार उसे धार्मिक बेहूदगी के गड्ढे में गिरना पड़ता है। टामस पेन सरीखे विद्वान ने भी ऐसी ही ठोकर खाई है। धर्म की पकड़ साधारण जनसमूह या समुदाय में इतनी बलवती क्यों देखी जाती है? इसका यह अर्थ नहीं है कि यह सब पागल हैं। लेकिन इस अबूझ पहेली में फँसने का कारण उनकी मानसिक चिन्ता और हार्दिक असन्तोष है। इस असन्तोष का निराकरण ईश्वर की कल्पना से नहीं हो सका तो अब सामाजिक अतिक्रान्ति ही इसका अंत करेगी। इसलिए अतिक्रान्ति की बड़ी ही आवश्यकता है। जर्मनी में राजसत्तापोषक (Imperialist) ने एक बार कहा था- we do not only need the soldiers legs but also their brains and their heart -अर्थात हमें सिपाहियों के केवल हाथ-पैरों की ही जरूरत नहीं है, हमें उनके दिल और दिमाग को भी गुलाम बना लेने की जरूरत है। मतलब यह कि गरीबों के दिल और दिमाग-उनकी मानसिक वृत्ति और हृदय, ऐसे बनाये जायें कि वह खुशी से पशुओं की तरह धनिकों, अधिकार प्राप्तों की गुलामी या वज्जीवन करते रहें। यही तो मनु ने भी किया, जो उसने शूद्रों के कर्त्तव्य में यह लिखा कि 'एकमेव तु शूद्राणां प्रभु कर्म समादिशत्ः एतेषां त्रय वर्णानां शुश्रुषामनुसूयया।' यह तो गरीबों को लूटने का एक साधन है कि उन्हें धर्म-याजकों द्वारा ईश्वर या धर्म का भय दिलाया जाता रहे। क्या कोई पण्डित, मौलवी, पादरी या दूसरा धर्म-याजक या राजा-रईस और धनिक ईश्वर को मानता है? उससे डरता है? कभी नहीं। क्योंकि वह जानते हैं कि ईश्वर मात्र हमारे स्वार्थ सिद्धि का एक खघस बहाना है। स्कूल, देवालय, राजसत्ता और छापेखाने सभी कुछ गरीबों को अंधकार में डालने के लिए धनवान और जबरदस्त लोगों ने मिलकर बनाये हैं। स्कूल भी शुद्ध बुद्धि से जनता के हित के लिए नहीं बनते। देवालय और ईश्वर तो प्रत्यक्ष ठगी के जाल ही हैं। एक स्थान पर पण्डित शिरोमणि बुहारिन ने स्पष्ट बतलाया है कि गरीबों के छलने के लिए धर्म (Church) के द्वारा क्या-क्या शरारतें की जाती हैं। हम यहाँ विषयान्तर होने के भय से इस पण्डित की विवेचना को स्थान नहीं दे सकते, अन्य पुस्तक में हम शीघ्र इस प्रकार के विषयों पर अलग विचार करने की इच्छा रखते हैं, यदि समय और शरीर साथ दें। ईश्वर का भ्रम मनुष्यों में कैसे उत्पन्न किया गया, इसी पर अब मैं थोड़ा सा और विचार करके इस लेख को समाप्त करना चाहता हूँ। वेद, पुरान, कुरान, इंजील आदि सभी धर्म पुस्तकों को देखने से प्रकट है कि सारी गाथाएँ वैसी ही कहानियाँ हैं, जैसी कुपढ़ बूढ़ी, दादी, नानी अपने बच्चों को सुनाया करती हैं। गीदड़, चिड़िया और राक्षस की जो कहानियाँ

मैंने अपनी दादी से सुनीं थीं, मुझे आज तक याद हैं। धर्म-ग्रन्थों की बातें कहीं-कहीं इससे बेहूदगी में बहुत आगे बढ़ जाती हैं। इसका कारण मानव बुद्धि का अपूर्ण विकास, बालकाल का मूढ़ विश्वास ही हो सकता है, न कि और कुछ। ईश्वर, देवता, नबी, वली वगैरह-वगैरह की बुद्धि-विरूद्ध कल्पनाएँ मूर्खो के ही सर में पैदा हो सकती हैं और उन्हीं के भाई-बंद उनको सुनकर उन पर विश्वास कर सकते हैं। बिना देखे-सुने, बिना जाने-पहचाने अनहोने लापता ईश्वर या खुदा के नाम पर अपने देश को, जाति को, व्यक्तित्व को और धन-संपत्ति को नष्ट कर डालना एक ऐसी बड़ी मूर्खता है, जिसकी उपमा नहीं मिल सकती। हमारे देश में करोड़ों हरामखोर इसी बेहूदा कल्पना की बदौलत मजे उड़ाते हैं और रात-दिन श्रम करनेवालों को एक टुकड़ा रोटी भी यथासमय नहीं मिलती। बुद्धि-विहीन मस्तक कैसा विचित्र होगा जिसमें 'कुछ नहीं' को सत्य, न्याय, सौंदर्य, बल, धन , जन से सम्पन्न और मनुष्य को नीच, हेय, पतित, निर्बल, निकम्मा, पापी माना तथा मनवाया होगा। आओ आज हम इस बेहूदगी का पर्दा फाड़कर संसार को सुखी बनाने के लिए उसके गले से गुलामी का तौक उतारने के लिए, घोषणा करें कि 'ईश्वर नाम का कोई पदार्थ नहीं है- मनुष्य-बुद्धि की बिडम्बना मात्र है।' जब तक यह कल्पित स्वामी ईश्वर हमारे सर पर रहेगा, हमारी गुलामी का अंत न होगा। ईश्वर गया और गुलामी भी गई। ईश्वर ही सब पापों की जड़ है। सब फसादों का आदि है। इस नाम को भूल जाने में ही हमारा कल्याण है। प्रह्लाद के पिता के चातुर्य्य और प्रह्लाद की अदूरदर्शिता का पता, उन विचारशीलों को लगेगा, जो बात की तह में गहरे घुस कर देखेंगे। खुदा यदि हमारे कल्याण का हेतु हो सकता है तो सिर्फ इसी तरह कि वह हमारे बीच से सदा के लिए अपना सा मुँह लेकर चला जाय। सच तो यह है कि संसार खुदा से तंग आ चुका है।

हमें दुख है कि आज भी हमारे देश के बड़े-बड़े विद्वान यथा महात्मा गाँधी, साधु टी. एल. वासवानी, डाक्टर संजीवी, दार्शनिक-अग्रगण्य श्रीयुक्त भगवनदासजी इत्यादि-इत्यादि उसी भूल को पद-पद पर दृढ़ करने में लगे हुए हैं, जिसे, हमें चाहिए था, संसार के सामने प्रकट करके सर्वदा के लिए उठा देते, अशुद्ध अक्षर की भाँति हरताल से छिपा देते। हमारे कुछ दोस्तों ने प्रकृति की आंतरिक अवच्छिन्न शक्ति को (Inherent force in matter) ही ईश्वर मानकर प्रार्थना की है ईश्वर को इस काम से अलग पड़ा रहने दीजिए, लेकिन मैं कहता हूँ कि इस प्राकृत-शक्ति के लिए प्रकृति काफी है। अधिक विचार के लिए आप चाहें तो दूसरा नाम रख सकते हैं, लेकिन मैं अपने वश पड़ते 'राजा और ईश्वर' शब्दों से संसार के किसी भी कोष को कलंकित नहीं देखना चाहता। ईश्वर ही की कल्पना राजा की कल्पना, गुरुओं और महंतों की कल्पना का प्रधान कारण है। इसलिए संसार की बुराइयों पर कुठाराघात करने के निमित्त ईश्वर की जड़ को काटना सबसे पहले जरूरी जान पड़ता है। आशा है हमारे नवयुवक इस बात पर गहरी, गंभीर और धीरता, वीरतापूर्ण दृष्टि डालकर शीघ्र ईश्वर को निकालने का प्रयत्न करें।

(4) संसार में जितने धर्म-ग्रंथ हैं, सबमें श्रेष्ठ और सुपाठ्य प्रकृति है। इस ग्रंथ के किसी-किसी सूत्र के व्याख्याकार भी हुए हैं। उन्हें भी हम चाहें तो सहायता लेने के विचार से पढ़ें। कितने ही गणितज्ञ, भूगोल-खगोल वेत्ता, नई-नई खोज और आविष्कारों के कर्ता पण्डित हुए हैं। इन्ही के निश्चित सार्वभौम निर्दोष प्राति के नियमों के मानने से हमारी स्वाधीनता, स्वतंत्रता तथा मनुष्यता स्थिर रह सकती है। इसके विरूद्ध जितने नियम हैं, वे सब तिरस्कार के साथ ठुकरा देने योग्य हैं। इन प्रकृत नियमों को जहाँ हमने एक बार समझ कर मान लिया, फिर हमारा मार्ग सीधा, सरल और निष्कंटक हो जायगा। संसार में साधारण जनता से लेकर बड़े-बड़े पण्डित तक सभी इसके विरूद्ध मुँह खोलने में असमर्थ हैं। कौन-सा ऐसा धर्म-याजक, जगद्‌गुरु, महात्मा, पैगम्बर, अवतार, दर्शनकार इस संसार में है, जो गणितशास्त्र-सिद्ध सिद्धान्तों का विरोध करने का साहस करेगा। पगलखाने के बाहर, मैं समझता हूँ, कोई बड़े से बड़ा धर्मान्ध भी ऐसा न मिलेगा, जो एक-एक दो होते हैं, इन बात से इंकार करे। आग जलती है, पानी जलती हुई आग को बुझा देता है।

(समाप्त)

राजनीति से तटस्थ बुद्धिजीवियो!

-ओटो रेने कासियो
ग्वाटेमाला के क्रंतिकारी कवि(1936-67)

राजनीति से तटस्थ बुद्धिजीवियो
एक न एक दिन
मेरे देश के
राजनीति से लटस्थ बुद्धिजीवयों से
आम लोगों द्वारा
जवाब तलब किया जायेगा

पूछा जायेगा
क्या कर रहे थे वे
जब हमारा देश
मर रहा था धीमे-धीमे
पीछे छोड़ दी गई पिछले शाम के डेरे की
छोटी सी बुझती आग की तरह

कोई उनसे उनके लिबास
या लंच के बाद की
लम्बी दोपहरिया नींद
के मुतल्लिक नहीं पूछेगा
कोई नहीं जानना चाहेगा
'शून्य' के खिलाफ़ उनके
अमूर्त, निर्वीर्य विद्रोह के बारे में,
या, उनकी दार्शनिक मीमांसा भरी
धनार्जन पद्धति के बारे में?

उनसे कोई नहीं पूछेगा
ग्रीक मिथकों पर,
न ही उनकी उस आत्म-ग्लानि पर
जो उन्होंने महसूस की थी
जब उनके भी भीतर का जमीर
एक कायराना मौत
मर रहा था

कोई नहीं जानना चाहेगा
खुद की दोषमुक्ति के
झूठ के साये में जन्में
उनके बेजा-बेहुदे तर्क

उस दिन वे साधारण लोग आयेंगे....
जिन्हें इन राजनीति तटस्थ लोगों की
किताबों और कविताओं में
कभी जगह तक नहीं मिली

मगर जो उन्हें हर दिन पहुंचाते थे
उनकी डबलरोटी और दूध
अण्डे औ टॉर्टिला,
उनके कपड़े रफू करते थे
उनकी गाड़ियां चलाते थे,
वे जिन्होंने इनके बगीचे सँवारे,
पालतू कुत्ते टहलाए
और बहुत से काम किए

और वे पूछेंगे,
'क्या किया उस वक्त तुमने
जब गरीब दुख भोग रहे थे?
जब उनके जीवन से
कोमलता और जिजीविषा चुक रहे थे?'

मेरे प्यारे देश के राजनति से तटस्थ बुद्धिजीवियो,
तब तुम्हारे पास कहने के लिए कुछ न होगा

खामोशी के गिद्ध तुम्हारी आंतें निगल जाएंगे
तुम्होरे अपने विषाद
तुम्हारी आत्मा को`चबा जाएंगे
और तुम खुद
अपनी शर्म से गूंगे हो जाओगे!

●●●

धरती की कहानी

डा. प्रदीप

मैं धरती हूं। मेरे कई नाम हैं-पृथ्वी, धरा, भू, वसुंधरा आदि। मेरे ही शरीर पर आपने अपना घर बना रखा है। मेरे शरीर के ऊपरी हिस्से को जोतकर आप अन्न पैदा करते हैं। मेरे शरीर पर उगे पेड़ों पर मीठे फल लगते हैं पीने का साफ तथा मीठा पानी भी आपको देती हूं। मेरी साफ हवा में सांस लेकर आप इतने बड़े हुए हैं।

क्या कभी आपने सोचा है कि मैं कहां से आई? मेरा जन्म कब हुआ? केसे हुआ? शायद आपने कभी नहीं सोचा होगा। आपको तो लगता होगा, धरती तो सदा से ही हैं। ऐसा नहीं है। चलो मैं आज तुम्हें अपनी कहानी सुनाती हूं।

दुनिया की हर निर्जीव तथा सजीव चीजों का जीवन काल होता है। हर चीज जन्म लेती है, बड़ी होती है और एक दिन खत्म हो जाती है। कुछ चीजों का जीवन काल मात्र कुछ क्षणों का होता है जैसे कई प्रकार के बैक्टीरिया। दूसरी ओर कुछ चीजों का जीवन काल अरबों-खरबों वर्षों का होता है जैसे स्वयं मैं।

मेरा जन्म आज से लगभग 5 अरब साल पहले हुआ था। मेरी उम्र के बारे में सुनकर आप अवश्य चौंक गए होंगें लेकिन ब्रह्माण्ड की तुलना में मेरी उम्र कुछ भी नहीं है। ब्रह्माण्ड मेरे से अरबों साल पहले का पैदा हुआ है। आकार-प्रकार में भी मैं छोटी नहीं हूं इसका कुछ अंदाजा तो आपको है ही। भारत देश कितना बड़ा है। अभी भी मेरे कई हिस्से ऐसे हैं जहां यहां तो इंसान पहुंच ही नहीं पाया या पहुंच पाया तो वहां रह नहीं पाया। यूं इंसान इतना साहसी है कि मुझसे काफी दूर के ग्रहों-उपग्रहों की यात्रा पर उसने अपने यान भेज रखे हैं। स्वयं न जाने कितनी बार अंतरिक्ष की सैर कर चुका है।

लेकिन ब्रह्माण्ड के आकार-प्रकार से मेरी तुलना की जाए तो मैं ब्रह्माण्ड के सामने धूल के कण के बराबर भी नहीं ठहरती। ब्रह्माण्ड असीम है, उसकी कोई सीमा नहीं है। वह कितना विशाल है, उसमें कितने तारे, ग्रह-उपग्रह हैं, जो मुझसे तथा सूर्य से भी कई गुणा बढ़े हैं। इसका हिसाब-किताब तथा अनुमान लगाना आसान नहीं है। इसीलिए तो कहती हूं कि ब्रह्माण्ड की तुलना में मैं धूल के कण के बराबर भी नहीं हूं जब ध ूल के कण के बराबर यात्रा करने में इंसान को इतनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है, तो सोचिए पूरे ब्रह्माण्ड की यात्रा करना कितना मुश्किल होगा।

लेकिन इंसान भी क्या चीज है। मुझे अनुमान नहीं था कि अदना सा इंसान इतनी लंबी छलांग लगा सकता है, इतना बुद्धिमान, साहसी व बहादुर हो सकता है कि उसने मेरा चप्पा-चप्पा छान डाला और अब ब्रह्माण्ड में भी दूर-दूर की यात्रा करने लगा। इन यात्राओं में उसे कम कष्ट नहीं उठाने पड़े हैं और कइ बार तो मौत को भी गले लगाया है। इसके बावजूद उसका जोश ठंडा नहीं पड़ा है। आपको याद होगा कुछ साल पहले ऐसी ही एक अंतरिक्ष यात्रा के दौरान मेरी एक बेटी कल्पना चावला और उसके साथ दुर्घटना में मारे गए थे। लेकिन मैं कायल हूं इंसान की कड़ी मेहनत, लगन तथा जुझारूपन की। अभी कुछ हजार साल पहले ही ये आदमी नंग-धड़ंग जंगलों में घूमता था। उसका जीवन जानवरों से बेहतर नहीं था। उसके पास न कपड़े थे, न घर, और न ही वह खेतीबाड़ी जानता था। जंगल के फल खाकर, घास-पत्ते, कंद मूल खाकर किसी तरह जिंदा रह पाता था। शिकार करना भी मुश्किल था, न चीजे जैसा तेज दौड़ सकता था, न उसके पास तीखे दांत और नाखून थे, लेकिन अपनी सामूहिक ताकत तथा बुद्धिमता से उसने न केवल जंगली जानवरों से अपनी रक्षा की बल्कि मुझे, अंतरिक्ष को, दूर-दूर के ग्रहों-उपग्रहों को भी जीत लिया है। वह अब अपनी मर्जी से बरसात करवा सकता है, बर्फ गिरवा सकता है, बरसात रुकवा सकता है। प्रयोगशाला में जीवन पैदा कर सकता है।....अरे मैं तो अपनी कहानी सुनाते-सुनाते आपको कहीं और ही ले गई। चलो, वापिस अपनी कहानी पर चलती हूं।

पुराने जमाने में लोग मेरे बारे में ज्यादा नहीं जानते थे। लेकिन आज लोगों को मेरे बारे में सब कुछ पता है। मेरे वो रहस्य जो किसी वक्त इंसान को विस्मय में डाल देते थे, अब वे रहस्य नहीं रहे। मैं कब पैदा हुई? कहां पैदा हुई? यानि सूरज से कैसे बनी, कैसे सूरज से अलग हुई? क्यों सूरज के चारों और

अंडाकार पथ में चक्कर काटती हूं, कितनी रफ्तार से चक्कर काटती हूं? अपनी कीली (धुरी) पर किस प्रकार नाचती हूं, कितनी झुकी हुई नाचती हूं? मेरे ऊपर गर्मी-सर्दी, बरसात क्यों होती है, बादल क्यों घिरते हैं, हवाएं तेज और मंद क्यों चलती हैं, आंधियां व तूफान क्यों आते हैं? विनाश लीलाएं क्यों देखने को मिलती हैं? बिमारियां क्यों फैलती हैं। ज्वार भाटे क्यों आते हैं? ज्वालामुखी पहाड़ कैसे बने? मेरे ऊपर तमाम महासागर, महाद्वीप, द्वीप केसे बने? गंगा-यमुना जैसी नदियां कहां से आई? प्रलय क्या होती है? क्यों आती है? कैसे लाखों-करोड़ों प्रकार के जीवधारियों का जन्म और विनाश हुआ? मेरे सीने पर कहीं बर्फीले पहाड़ तो कहीं तपते रेगिस्तान क्यों हैं? क्यों कहीं ऐसी जगहें हैं, जहां घास का तिनका तक नहीं उगता और कहीं इतने घने जंगल हैं कि दिन में सूरज की रोशनी धरती पर नहीं पहुंचती। ये सारी जानकारियां आज आदमी के पास हैं। कोई बात उससे छिपी नहीं है।

पहले जब इंसान को ज्ञान नहीं था, लोग मेरे बारे में बहुत अजीब-अजीब ढंग से सोचते थे। वे मुझे चपटा तथा समतल समझते थे। उनके अनुसार मैं एक विशालकाय लकड़ी के तख्ते की तरह हूं जो पानी पर तैर रहा है। वे सोचते थे कि धरती के नीचे, पाताल लोक है, जहां का रास्ता समुद्र से होकर जाता है और ऊपर आकाश में स्वर्ग लोग है। स्वर्ग में देवता रहते हैं।

लेकिन अब आदमी ने सब कुछ जान लिया है। उसे पता चल चुका है कि स्वर्ग और नरक कहीं नहीं हैं जो कुछ है, इसी धरती पर है। और धरती यानि मैं लकड़ी के तख्ते जैसी चपटी नहीं हूं। मेरी आकृति गोल है, लेकिन फुटबाल जैसी गोल नहीं है, बल्कि नारंगी जैसी गोली है यानि ध्रुवों पर थोड़ी पिचकी सी और नीचे को धंसी हुई और बीच में फूली हुई।

चलिए, इसे अच्छी प्रकार से समझते हैं। इसके लिए आपको थोड़ी मेहनत करनी होगी। गीली मिट्टी लो और इसे गेंद जैसी गोल बना लो। अब दोनों हाथों से इसे थोड़ा सा दबा दो। इससे दो विरोधी जगहों से पिचक जाएगी। पिचका हुआ सिरा जो ऊपर की तरफ है, वह उत्तरी ध्रुव है और जो पिचका हुआ सिरा नीचे की तरफ है, वह दक्षिणी ध्ध्रुव है। अब आप इसकी दो-तिहाई सतह पर थोड़ी-थोड़ी मिट्टी हटाकर कहीं कम और कहीं ज्यादा गहरे गड्ढे बना लो औरइस पर नीले रंग से पेंट कर दो। ये समुद्र हैं। बाकी जगह पर कुछ-कुछ स्थानों पर कुछ फालतू मिट्टी लगाकर चोटियां बना दो और इन पर भूरा रंग भर दो। ये पहाड़ हैं। बाकी जगह पर हरा रंग भर दो, ये मैदान हैं।

अब आप समझ गए होंगे कि समुद्र मेरे से अलग नहीं है, बल्कि वह मेरे ऊपर विशाल आकार-प्रकार की जगह है, जो खारे पानी से भरी है। समुद्र मेरे ही शरीर के हिस्से हैं, उसी तरह जैसे मैदान, पहाड़, द्वीप मेरे हिस्से हैं।

मेरे चारों और असीम आकाश है। आप चौंक गए होंगे आकाश तो मेरे सिर्फ ऊपर की ओर दिखता है। फिर चारों और कैसे! आप उसी मिट्टी के गोले को उठाईये जिसे आपने मेरी प्रतिकृति के रूप में बनाया है। आप इस गोले को हवा में लटका दो अब देखो इसके चारों तरफ क्या है! खुली जगह। इस खुली जगह में कुछ किलोमीटर की ऊंचाई तक हवा है जिसे मेरा वायुमंडल कहा जाता है। अपने वायु मंडल के बारे में मैं विस्तार से बताऊंगी।

इस वायु मंडल के बाहर अंतरिक्ष शुरू हो जाता है। अंतरिक्ष जहां हवा नहीं है, पूर्ण शांति, निस्तब्धता, नीरवता है....असीम है इसका ओर छोर मापना बेहद मुश्किल है। इसी में असंख्य तारे हैं। तारों के ग्रह और उपग्रह हैं। इन्हीं अनगिनत तारों में से एक तारा है 'सूरज'।

आप फिर चौंक गए होंगे कि सूरज तारा कैसे हो सकता है? सूरज....सूरज है और तारे....तारे! यही सोच रहे हैं न आप। असल में हमारे ब्रह्माण्ड में जितने भी खगोलीय पिंड हैं, वे दो प्रकार हैं। एक वे जिनकी अपनी रोशनी होती है और दूसरे वे जिनकी अपनी रोशनी नहीं होती। उनकी चमक रोशनी वाले खगोलीय पिंडों की रोशनी के प्रतिबिम्बन से होती है जैसे शीशे पर रोशनी डालने से शीशा रोशनी को उल्टा भेज देता है। मैं और चंद्रमा वे खगोलीय पिंड हैं, जिनकी अपनी रोशनी नहीं है। सोचो तो, मेरी अपनी रोशनी होती तो क्या कभी यहां अंधेरा होता? इसी प्रकार चंदा जो चमकता हुआ इतना खूबसूरत लगता है, असल में वह उसकी अपनी रोशनी नहीं होती। सूरज की रोशनी उस पर पड़ती है और चंद्रमा हमें चमकता दिखाई देता है। लेकिन सूरज और तारे इन सभी की अपनी रोशनी

होती है। इसलिए सूरज भी एक तारा है।

अब आप सोचेंगे कि एक सूरज नाम का तारा इतना बड़ा और चमकीला है कि हमें इतनी अधिक गर्मी, ऊर्जा और रोशनी देता है लेकिन हजारों तारे इतने छोटे-छोटे हैं कि मिलकर भी अंधेरे को चीर नहीं सकते। यहां तक कि हमें दिखते भी टिमटिमाते हुए हैं।

वास्तव में ऐसा दूरी की वजह से है। यह तो आपने देखा ही होगा कि दूर की वस्तुएं हमें छोटी दिखाई देती हैं। इतना बड़ा हवाई जहाज हमें आसमान में इतना छोटा दिखता है कि अपनी मुट्ठी में बंद कर लें। बड़े-बड़े पहाड़ दूर से देखने पर हमारे घर से भी छोटे दिखते हैं। सूरज नाम का तारा बाकी तारों की अपेक्षा हमारे बेहद करीब है।

सूरज से हम तक, यानि मुझ धरती तक रोशनी को आने में लगभग आठ मिनट का समय लगता है जबकि तारों की रोशनी को धरती पर आने में कई साल लग जाते हैं। कुछ तारे तो इतनी दूर हैं कि उनकी रोशनी धरती तक आने में कई हजार या लाख साल लगेंगे।

सूरज मेरे से 14.95 करोड़ किलोमीटर की दूरी पर है। खगोलीय पिण्डों के नजरिए से यह दूरी बहुत कम है। हम विभिन्न तारों, ग्रहों-उपग्रहों की दूरी प्रकाश वर्ष में मापते हैं।

एक प्रकाश वर्ष कितना समय होता है : प्रकाश यानि रोशनी की रफ्तार 3 लाख किलोमीटर प्रति सैकिंड होती है। यानि एक सैकिंड में प्रकाश 3 लाख किलोमीटर की दूरी तय करता है।

1 सैकिंड में प्रकाश चलता है 3 लाख किलोमीटर
60 सैकिंड (1 मिनट) में प्रकाश द्वारा तय की गई दूरी
60 गुना 3-180 लाख किलोमीटर
3600 सैकिंड (1 घंटे) में प्रकाश द्वारा तय की गई दूरी
3600 गुना 3 - 10800 लाख किलोमीटर
1 दिन (24 घंटे) में प्रकाश द्वारा तय की गई दूरी
24 गुना 10800-2,59,200 लाख मिलोमीटर
1 साल (365 दिन) में प्रकाश द्वारा तय की दूरी
365 गुना 2,59,200-946080 करोड़ किलोमीटर

1 साल में प्रकाश 946080 करोड़ किलोमीटर की दूरी तय कर लेता है। इस दूरी को एक प्रकाश वर्ष कहते हैं। अगर यह कहा जाए कि फलां तारा मेरे से दो प्रकाश वर्ष की दूरी पर है, तो इसका अर्थ होगा कि यह तारा यहां से 18,92,160 करोड़ किलोमीटर की दूरी पर है।

इस प्रकार वो तमाम तारे जो आपको रात में टिमटिमाते हुए दिखाई देते हैं वो मेरे से कई प्रकाश वर्ष की दूरी पर है। इतनी दूरी होने की वजह से उन तारों की हम तक न गर्मी पहुंच पाती है और न रोशनी। हम उन्हें केवल टिमटिमाते हुए ही देख पाते हैं और करोड़ों तारे तो हमें दिखाई भी नहीं देते। उन्हें देखने के लिए हमें शक्तिशाली दूरबन की जरूरत पड़ती है।

लेकिन सूरज हमारे बहुत करीब है। इसलिए मात्र 8 मिनट में सूरज की रोशनी व गर्मी हमारे पास पहुंचती है। और सूरज हमें चमकदार तथा गर्म जलते हुए शोले जैसा दिखाई देता है। दिन के समय हमें तारे दिखाई नहीं देते। पुराने जमाने के लोग सोचते थे कि तारे डूब जाते हैं लेकिन तारे नि में भी वहीं रहते हैं जहां वो रात को नजर आते हैं। मगर सूरज की टिमटिमाती रोशनी में हमें वो दिन में नजर नहीं आते।

अगर मैं भी सूरज से मात्र 14.95 करोड़ किलोमीटर की दूरी पर न होती और कई हजार करोड़ किलोमीटर की दूरी पर होती तो सूरज बेहद छोटा और ठंडा दिखाई पड़ता। इतना छोटा और ठंडा कि मुझ तक उसकी रोशनी ही नहीं पहुंच पाती और मेरे तन पर भी अंधेरा रहता।

तब क्या होता? न तो मैं अपनी कहानी किसी को सुना पाती और न ही आप यह कहानी पढ़ रहे होते। जीवन के कोई भी चिन्ह यहां नहीं होते।

सौर परिवार : सूरज, सूरज की सभी संतानें, उन संतानों की संतानें यानि कि सूरज के नाती-पोते, ये सभी जो परिवार बनाते हैं उसे सौर परिवार कहते हैं। इसे सौर मंडल भी कहा जाता है। सूरज का जन्म उसी वक्त हुआ था, जब ब्रह्माण्ड में एक महाविस्फोट से तमाम तारो का जन्म हुआ था। बाद में विभिन्न तारों के अपने-अपने परिवारों का जन्म हुआ था। बाद में विभिन्न तारों के अपने-अपने परिवारों का जन्म अलग-अलग समय में हुआ जैसे अपने सूरज के परिवार का जन्म आज से लगभग 500 करोड़ साल पहले हुआ था।

सूरज सौर परिवार के केंद्र में स्थित है लेकिन यह स्थिर नहीं है। यह अपनी धुरी या अक्ष के चारों ओर तेजी से घूम रहा है। सूरज सिर्फ अपने अक्ष के चारों ओर ही नहीं घूम रहा, बल्कि अपनी आकाशगंगा

के केंद्र के चारों ओर भी चक्कर काट रहा है। इसी का अनुकरण करते हुए सूर्य की हम सभी संतानें और हमारी सभी संतानें भी अपनी-अपनी धूरी के चारों ओर घूमती हैं। मेरी संतान चंद्रमा मेरे चारों ओर चक्कर काटता है। हम सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर भी चक्कर काटते हैं। सूर्य के साथ-साथ हम आकाशगंगा का भी चक्कर लगाते रहते हैं। घूमते हुए सूरज हमेशा केंद्र में रहता है और हम सभी उसकी संतानें सूरज के चारों ओर घूमते हुए सूरज के साथ-साथ चलते रहते हैं। इसी प्रकार चंद्रमा मेरे चारों ओर घूमते हुए मेरे साथ सूर्य के चारों ओर चक्कर काटता रहता है।

उम्मीद करती हूं यह सब पढ़कर आपको चक्कर नहीं आने लगे होंगे।

सूर्य की तमाम संतानें जो सूर्य के चारों ओर चक्कर काटती है ग्रह कहलाती है। सूर्य के इस समय आठ मुख्य ग्रह हैं। इनके नाम हैं बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण, वरुण।

9वें ग्रह कुबेर जिसे 'यम' के नाम से भी जाना जाता है, के बारे में बात करना बड़ा मजेदार है। लेकिन यह बात मैं अभी नहीं करूंगी। पहले कुछ और बातें।

ग्रहों की तमाम संतानें, जो ग्रहों के चारों ओर चक्कर लगाती हैं, उपग्रह कहलाती हैं। मैं सूरज का ग्रह हूं जबकि चंद्रमा मेरा उपग्रह है। ज्योतिष विद्या वाले पाखंडी लोग सूरज, मुझे व चंद्रमा तीनों को ग्रह बताते हैं। इसी प्रकार वे राहु-केतु नाम के दो अन्य ग्रहों का जिक्र भी करते हैं, जिनका वास्तव में कहीं अस्तित्व नहीं है। इंसान ने हजारों की संख्या में ऐसे अंतरिक्ष यान अंतरिक्ष में भेज रखे हैं, जो मेरे चारों ओर चक्कर लगाते रहते हैं इन्हें भी उपग्रह कहा जाता है। लेकिन ये चंद्रमा की तरह प्राकृतिक उपग्रह नहीं हैं, बल्कि मेरी सबसे बुद्धिमान संतान मनुष्य द्वारा बनाए गए कृत्रिम उपग्रह हैं। आपको इन कृत्रिम उपग्रहों की मदद से जरूरी सूचनाएं मिलती हैं। सागरों-महासागरों में उठने वाले चक्रवातीय तूफानों की जानकारी, मौसम की जानकारी, मेरे अंदर की संरचनाओं के बारे में जानकारी आदि इन्हीं अप्राकृतिक उपग्रहों द्वारा उपलब्ध करवाई जाती है। आप अपने घर में बैठकर अपनी टेलीविजन स्क्रीन पर आस्ट्रेलिया या इंग्लैंड मैच देख लेते हैं, यह भी इन्हीं की वजह से संभव हो पाया है।

अब मैं आपको अपने अन्य भाई-बहनों का थोड़ा परिचय दे दूं।

बुध : यह मेरा छोटा भाई है। सूरज के सबसे नजदीक रहता है। इसलिए सूरज की गर्मी इस सबसे ज्यादा इस पर पहुंचती है। यह बेहद गर्म है- एक जलते हुए शोले की तरह। यहां जीवन संभव नहीं है। यह सूरज से लगभग 5.5 करोड़ किलोमीटर की दूरी पर है।

शुक्र : इसे सुबह के तारे के रूप में जाना जाता है। मेरा यह भाई बहुत ही खूबसूरत है। आकाश में सबसे ज्यादा चमकता हुआ। यूरोप वालों ने तो इसके नाम पर अपनी सौंदर्य की देवी का भी नाम रख लिया-वीनस। इसकी दूरी सूरज से लगभग 10 करोड़ किलोमीटर है। यह भी काफी गर्म है तथा जीवन विहीन है।

पृथ्वी : यानि मैं। सूरज से लगभग 14.5 करोड़ किलोमीटर दूर। जैसे यहां से आपको शुक्र ग्रह या मंगल चमकता हुआ दिखता है। वैसे ही मैं भी अंतरिक्ष में खूब चमकती हुई दिखती हूं।

मंगल : इसे आप कुछ-कुछ मेरा जुड़वां भाई जैसा कह सकते हैं। मेरे अलावा मंगल पर ही जीवन के प्रारंभिक रूपों के कुछ संकेत मिले हैं। बाकी किसी भी ग्रह पर जीवन का कोई चिन्ह नहीं है। इसका कारण है कि शेष ग्रहों पर ऐसा वातावरण नहीं है जो जीवन के लिए जरूरी है। जैसे पानी, न ज्यादा सर्दी न ज्यादा गर्म ऐसा मौसम सिर्फ मेरे ऊपर तथा मंगल ग्रह पर पाया जाता है जो सूरज से 21.5 करोड़ किलोमीटर दूर है। बाकी ग्रह या तो बहुत गर्म हैं या बहुत ठंडे। मंगल ग्रह बहुत लाल होता है। इसके रंग की वजह से आप इसे रात के समय पहचान सकते हैं।

क्षुद्र ग्रह : मंगल ग्रह से बाहर हजारों की संख्या में ऐसे छोटे-बड़े पिंड हैं जो सूरज के चारों ओर अपनी निश्चित कक्षा में चक्कर लगाते रहते हैं, लेकिन आकार काफी छोटे होते हैं, इसलिए वे ज्यादा महत्व हासिल नहीं कर पाए। इनके बारे में कहा जाता है कि यह भी एक ग्रह था जो अपने निर्माण की प्रक्रिया में एक पिण्ड के रूप में नहीं रह पाया और बिखर गया। परिणामतः ये क्षुद्र ग्रह अस्तित्व में नहीं आए।

बृहस्पति : सूरज से 72.5 करोड़ किलोमीटर दूर बृहस्पति सौर मंडल का सबसे बड़ा ग्रह है। इसके बारे में कहा जाता है कि अगर इसका आकार कुछ और बड़ा होता तो यह खुद एक तारा बना रहता। लेकिन

ऐसा हुआ नहीं और इसे सूरज का एक ग्रह बनकर संतोष करना पड़ा। सूरज से काफी दूर होने की वजह से यह एकदम ठंडा और जीवन विहीन है। बृहस्पति ग्रह के 12 चंद्रमा हैं। पूर्णिमा की रात कितनी खूबसूरत होती है। हालांकि मेरा एक चांद है। कल्पना कीजिए आसमान में 12 चांद जगमगा रहे हों तो वह रात कितनी खूबसूरत होगी।

शनि : पता नहीं क्यों भारत के ज्योतिषियों को मेरे इस भाई से इतनी खुंदक है? वो इससे इतना डरते क्यों हैं? मेरा यह भाई तो बेहद बेजान तथा ठंडा, विरान ग्रह है, जहां सूरज की रोशनी भी मुश्किल से पहुंच पाती है। शनि सूरज से 132 करोड़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसकी एक खूबसूरती इसके खूबसूरत छल्ले हैं, जो इसके चारों ओर घूमते हैं वास्तव में यह धूल के बादल हैं जो छल्ले के रूप में मौजूद हैं।

अरूण : यह सौरमंडल का 7वां ग्रह है। सूरज से 267 करोड़ किलोमीटर दूर। सूरज इस ग्रह से एक तारे जैसा ही दिखता है, जिसकी रोशनी ग्रह तक नहीं पहुंच पाती। इसलिए यह ग्रह बेहद ठंडा, अंधेरे से भरा तथा बेजान है।

वरूण : यह सूरज से 420 करोड़ किलोमीटर की दूरी पर है। आप स्वयं कल्पना कर सकते हैं। यहां का मौसम कैसा होगा। जीवन के किसी भी लक्षण की कोई संभावना नहीं हो सकती।

कुबेर : इसे हिन्दी में 'यम' नाम भी दिया गया है। यह सूरज से 637 करोड़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। कुछ वर्ष पहले वैज्ञानिकों ने इसे ग्रह मानने से इंकार कर दिया था। आप सोचेंगे कि ऐसा कैसे हो सकता है? दरअसल इसके पीछे मजेदार कहानी है।

कुछ वर्ष पहले वैज्ञानिकों ने यम से दूर एक खगोल पिंड के बारे में पता लगाया जो सूरज के चारों तरफ चक्कर काट रहा था। इसे सूरज का 10वां ग्रह मान लिया गया। फिर एक और ऐसे ही ग्रह का पता चला जो इससे भी दूर था। कुछ वैज्ञानिकों ने इसे 11वां ग्रह घोषित किया। लेकिन कुछ दूसरे वैज्ञानिकों ने इसे ग्रह मानने से इंकार किया। इस पर बहस चल पड़ी कि ग्रह की परिभाषा क्या होती है?

इस पर दुनिया भर के खगोल वैज्ञानिक इक्ट्ठे हुए व उन्होंने अल्पमत-बहुमत से यह तय कर दिया कि 10वां व 11वां खगोलीय पिंड ग्रह नहीं माने जा सकते। इसके साथ उन्होंने यह भी तय किया कि कुबेर भी ग्रह नहीं माना जा सकता। इसलिए इस वक्त 8 ग्रहों को ही स्वीकृति मिली है। बाकियों को क्षुद्र ग्रह कहा जा सकता है।

तमाम ग्रह सूर्य के चारों ओर गोलाकार वृत में न घूमकर अण्डाकार वृत में घूमते हैं। इसलिए सूर्य से दूरी थोड़ा कम या ज्यादा होती रहती है।

सूरज : जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, सूरज एक तारा है। इसकी सतह का तापमान 6000 सैंटीग्रेड है, जबकि इसके केंद्र में तापमान 5 करोड़ सैंटीग्रेड है। सूरज एक विशालकाय आग का गोला है जो धरती से 3,30,000 गुणा ज्यादा पदार्थ से बना है। यह पदार्थ अत्यधिक दबाव में है। आकार के हिसाब से सूरज धरती से एक लाख गुणा बड़ा है।

सूरज की रोशनी तथा गर्मी कैसे पैदा होती है? आपने परमाणु बम के बारे में अवश्य सुना होगा जो अमरीका ने दूसरे विश्व युद्ध के खत्म होने पर जापान पर फैंका था। जब यह बम फटा थ उस वक्त कुछ समय के लिए बम फटने की जगह का तापमान कई हजार डिग्री सैंटीग्रेड हो गया था। परमाणु बम से भी ज्यादा खतरनाक व गर्मी छोड़ने वाला बम हाईड्रोजन बम कहलाता है। इसमें हाईड्रोजन के दो परमाणु मिलते हैं। इस प्रक्रिया में तेज रोशनी तथा उष्मा पैदा होती है।

सूरज पर हाईड्रोजन के विशाल भंडार हैं और वहां प्रति सैकिंड करोड़ों हाईड्रोजन परमाणु हीलियम परमाणुओं में बदल रहे हैं। इसके परिणाम स्वरूप हमें सूरज एक चमकते हुए आग के गोले जैसा दिखता है, जो रोशनी व गर्मी दोनों चीजें हमें देता है।

चंद्रमा : घटता-बढ़ता चंद्रमा इंसान की उत्सुकता का केंद्र रहा है। बच्चों के लिए यह चंदा मामा है तथा कवियों और प्रेमियों का प्रेरणा स्रोत। लेकिन असल मे यह मेरा भाई नहीं, बल्कि मेरी संतान है, क्योकि इसका जन्म सूरज से न होकर मेरे से हुआ है। जिस प्रकार मैं सूरज से छिटक कर बनी, उसी प्रकार चंद्रमा में से छिटक कर बना। इसीलिए चंद्रमा मेरे चारों ओर घूमता ही है। इस तरह देखा जाए तो चंद्रमा को ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। ....**क्रमशः**

****

किस्त-21

• ब्रह्माण्ड यात्रा •

आकाश गंगा (ग्लैक्सी) में कुछ कदम

--डा. अवतार सिंह ढींडसा
094634-89789

दोस्तो, यदि हम अपने गांव अथवा शहर के निवासियों के घरों की छानबीन करने लग जाए तो हमें कुछ बहुत, विशाल, कुछ मध्यम एवं कुछ लघु अथवा अत्यंत छोटे घर मिलेंगे। बिल्कुल इसी भांति यदि हम हमारी आकाश गंगा में सैर करने हेतु निकलें तो हमें अत्यंत विशाल तारे, मध्यम दर्ज के तारे अथवा छोटे तारे दिखाई देते हैं। आओ हम भी हमारी आकाश गंगा का विश्लेषण करें एवं कुछ विचित्र ढूंढें कि ये असंख्य छोटे-छोटे तारे जो हमें रात्रि के समय दिखाई देते हैं, ये आखिर किस प्रकार हैं? साथियो, रात्रि का समय होते ही जितने तारे आप देखते हो, वे सभी हमारी आकाश गंगा के ही तारे हैं-हैरान मत होना इनमें से कुछ देखने में तो तारे ही लगते हैं, परन्तु वास्तव में ये हमारी पड़ौसी ग्लैक्सियां हैं। बस इस बार हम हमारी ग्लैक्सी के तारों की ही सैर करेंगे।

दानव तारेः साथियो, रात्रि का समय होते ही जब आसमान की दक्षिणी दिशा की ओर देखोगे तो तुम्हें तीन तारे एक लाईन में बहुत नजदीक दिखाई देंगे... .इन को तिगड़ अथवा तिक्कड़ भी कहा जाता है। इनके ऊपर की ओर एवं नीचे की ओर देखोगे तो दो तारे ऊपर और दो तारे नीचे नजर आएंगे। यह 'ओरियन' तारा समूह है। भारत में इसको 'काल-पुरुष' अथवा 'शिकारी' भी कहा जाता है। इसमें दो बड़े तारे हैं....बीटेलगीज एवं रीगल।

चलो हम अग्रसर होते हैं इसके बड़े लाल तारे 'बीटेलगीज' की ओर। यदि हमारा अंतरिक्ष यान प्रकाश की गति से चले अर्थात् एक सैकिंड में तीन लाख किलोमीटर तो भी हमें इस तारे तक पहुंचने में लगभग 640 वर्ष लग जाएंगे और मानव की आयु तो तुम जानते ही हो कि अधिक से अधिक 100 वर्ष ही होती है....खैर यह ब्रह्माण्ड जितना विशाल है उतना ही अद्भुत एवं दिलचस्प भी है। यह तारा आकाश में चमक के हिसाब से 10वें नंबर पर आता है। यह हमारे सूर्य से लगभग एक लाख गुना अधिक चमकीला है!! इसका पुंज सूर्य से लगभग 15 गुना अधिक है तथा यह आकार में सूर्य से 1000 गुना बड़ा है तथा इस समय यह एक 'सुपर-दानव' बन चुका है..... परन्तु ऐसे तारों में हो रही न्यूक्लियर क्रियाएं भी अद्भुत....अर्थात् जितना बड़ा पुंज उतनी ही जल्दी तारा अपनी मृत्यु की ओर अग्रसर होगा!!! इसकी आयु अभी केवल 10 करोड़ वर्ष है तथा इसने अपनी मृत्यु की ओर बढ़ना भी शुरू कर दिया है अर्थात् आने वाले 10 करोड़ वर्ष के बाद इसमें बहुत बड़ा धमाका 'सुपरनोवा' होगा तथा अनुमान है कि कई हफ्तों तक इसको आकाश में दिन के समय में भी देखा जा सकेगा तथा रात को इसका आकार हमारे चंद्रमा जितना बड़ा होगा!!! सुपरनोवा को समझने के लिए हमें पहले तारों के पुंज की सीमा के बारे में जानना होगा, इसलिए पहले यह कहानी सुनो।

'तारों की पुंज सीमा' (Chandarashekhar & his limit) ः

दोस्तो, तारों की किस्में जानने के लिए हमें इनके पुंज के बारे में विचार करना पड़ेगा....तारों के आकार अथवा पुंज की सीमा का पता भारत मेंजन्में वैज्ञानिक डा. सुब्रामण्यम चंद्रशेखर ने लगाया था। परन्तु उसने यह खोज अमेरिका के नागरिक एवं अमेरिकी विज्ञानी के तौर पर की, जिस के लिए उन्हें नोबल पुरस्कार भी प्रदान किया गया था। चंद्रशेखर के चाचा सी.वी. रमन स्वयं एक नोबल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक थे।

डा. चंद्रशेखर की मृत्यु 1995 में हुई और उसके चार वर्ष बाद 1999 में नासा (अमेरिका) के द्वारा एक दूरबीन को अंतरिक्ष में छोड़ा गया तथा इसका नाम 'चंद्रा दूरबीन' रखा गया। यह दूरबीन

आज भी अंतरिक्ष की खोजों में लगी हुई है तथा इसके साथ विश्व के हजारों वैज्ञानिक जुड़े हुए हैं। दोस्तो यह बात यहां पर इसलिए की गई है कि भारतीय अत्यंत मेहनती एवं बुद्धिमान हैं, परन्तु यहां की सरकारें विज्ञान के स्थान पर धर्मो को प्रोत्साहन एवं सहायता देने में तत्पर रहती हैं। यदि इसी सहायता राशि का उचित उपयोग वैज्ञानिक खोजों के ऊपर किया जाए तो फिर भारतीय खोजों के डंके पूरे विश्व में गूंजने से कोई रोक नहीं सकता, परन्तु यह सब करने के लिए वैज्ञानिक क्रांति की आवश्यकता है।

हां, तो हम बात कर रहे थे पुंज सीमा की. ...वह है....'तारा भौतिकी चंद्रशेखर सीमा'। अर्थात् तारे के पुंज की वह कम से कम सीमा जिस तक तारा 'सफेद बौना' रहता है। यदि पुंज उस सीमा से अधिक से हो तो तारा मृत्युपरांत न्यूट्रान तारा, प्लसर तारा अथवा 'काला सुराख' बन जाएगा। इस खोज को उन्होंने 1939 में एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करवा दिया। पुस्तक का नाम था 'तारों की बनावट के अध्ययन की जान-पहचान'।

तारों की किस्में उनकी मृत्यु पर भी निर्भर करती हैं। सभी तारों की मृत्यु एक ही प्रकार से नहीं, बल्कि भिन्न-भिन्न होती है। परन्तु वह क्यों? इसका कारण है। तारे का प्रारंभिक पुंज। सूग्र के पुंज को एक सौर इकाई माना गया है। तारा पुंज निम्नलिखित हो सकते हैं :-

1. सूरजी पुंज (इकाई) का 0.4 भाग
2. 0.4 भाग से लेकर 1.4 सौर इकाईयां
3. 1.4 गुना से 3 सौर इकाईयां
4. 3 सौर इकाईयों से बड़े

सफेद बौने : जब कोई तारा सूरजी पुंज का 0.4 भाग हो तो तारे के मरने के समय अर्थात् खत्म होने के समय उसके पास अत्यंत अल्प मात्रा में हाईड्रोजन शेष रहती है। इस प्रकार के तारों में बनी हुई हीलियम गैस आगे संयोजन नहीं करती और तारा 'सफेद बौना' कहलाता है तथा इनका आकार पृत्वी के सामान रह जाता है। अर्थात् सूर्य से छोटा कोई भी तारा सफेद बौने के रूप में मृत हो जाता है। मृत होने से तात्पर्य है कि यह प्रकाश एवं ऊष्मा देना बंद कर देता है तथा इसमें कोई भी क्रिया नहीं होती। ये केवल 'हीलियम राख के ढेर' ही बन जाते हैं।

सफेद बौने तारे : अब आप पूछेंगे कि जिन तारों का पुंज सूरजी पुंज के 0.4 भाग से बड़ा होता है, उनकी मृत्यु किस प्रकार से होती है? पहले यह समझ लें कि 0.4 से लेकर 1.4 सूरजी पुंज तक तारे को 'मध्यम दर्जे' के तारे कहा जाता है। मध्यम दर्जे का तारा अर्थात् 0.4 से 1.4 तक सूरजी पुंज वाले तारे में ही हीलियम गैस कार्बन तत्व में परिवर्तित हो जाती है। परन्तु कार्बन से आगे अन्य तत्व पैदा नहीं होते। तात्पर्य यह कि सफेद बौने तारों में तो हाईड्रोजन एवं हीलियम ही बनती है। परन्तु मध्यम दर्जे के तारों में हीलियम से आगे कार्बन भी बन जाती है। बल्कि इन तारों का आकार अत्यंत विशाल हो जाता है। आकार बढ़ने का क्या कारण हो सकता है? जब तारे का केंद्र बिन्दु सिंकुड़ता है तो बहुत सी गर्मी उत्पन्न होती है। उस गर्मी से तारे ब्राह्या गैसीय खोल अत्यधिक फैल जाता है तथा तारे के इर्द-गिर्द ग्रहों जैसे गैसीय बादल बन जाते हैं। सफेद बौने तारे हल्की सफेद रंग की रोशनी देते रहते हैं।

आओ हम एक सफेद बौने के समीप चलें। दोस्तो, काल पुरुष तारा समूह के तीन तारों को मिलाती एक काल्पनिक रेखा खींचो। यह एक चमकदार तारे 'सीरियस' की ओर संकेत करती है तथा इससे आगे एक और तारा समूह है, जिसका नाम है 'फिक्सिज राशि (तारा समूह)। इसमें एक 'सफेद बौना' तारा है। यह हमारी पृथ्वी से 15,600 प्रकाश वर्ष की दूरी पर है। वास्तव में यह दो जुड़वां तारे हैं.....एक अपने सूर्य जैसा तथा एक सफेद बौना है। सफेद बौने तारे में प्रत्येक 20 वर्ष बाद ताप-न्यूक्ले धमाके होते रहते हैं तथा बहुत ही शक्तिशाली बिजलई-चुम्बकीय तरंगें निकलती हैं। दोस्तो, हमारे ज्योतिषियों को इन रहस्यमयी तारों के बारे में नाममात्र का भी ज्ञान नहीं है..... अन्यथा ये धूर्त हमें इन शक्तिशाली तरंगों का भय दिखा कर प्रत्येक 20 वर्ष पश्चात् 'कुंभ मेले' की भांति एकाग्रता किया करते तथा नए बहाने बना कर लूट करते।

न्यूट्रान तारे : जिन तारों का आकार 1.4 सूरजी पुंज से 3 सूरजी पुंज होता है। इनमें हाईड्रोजन गैस हीलियम गैस में परिवर्तित होती है तथा फिर हीलियम

कार्बन में परिवर्तित हो जाती है। फिर कार्बन से आगे आक्सीजन, नाईट्रोजन बनते-बनते लोहा बन जाता है। बड़े तारों के केंद्रक मृत्यु के पश्चात् लोहे के बन जाते हैं। तारों के केंद्र में लोहा बनने के पश्चात् एक बड़ा धमाका होता है। जिसे 'सुपरनोवा' कहा जाता है। यह सुपरनोवा लाल रंगत का प्रकाश निकलता है तथा इसी कारण इन्हें लाल दानव कहा जाता है। इसके पश्चात् इन तारों में जबरदस्त 'धमाका तरंगें' अथवा 'झटका तरंगें' उत्पन्न होती हैं जोकि आगे चलकर किसी 'ब्रह्माण्डीय बादल' में उथल-पुथल उत्पन्न कर देती हैं तथा नए बादल में, नए तारे के जन्म की कहानी शुरू हो जाती है। सुपरनोवा धमाके पश्चात् तारें में से 'झटका तरंगों' के साथ ही साथ निकलते हैं-न्यूट्रीनों एवं धमाकाखेज उबाल बाहर की ओर उठते हैं।

सुपरनोवा के पश्चात् तारे के केंद्र की ओर इलैक्ट्रान एवं प्रोटोन मिल कर न्यूट्रान बना देते हैं तथ यह अब न्यूट्रान तारा कहलाता है। इसके 'एक चम्मच का पुंज अरबों टन' होता है!!!

पल्सर तारे : जब न्यूट्रान तारे में से तरंगे निकलने लग जाएं तो यह 'पल्सर तारा' कहलाता है। दोस्तो, ओरियन तारा समूह में क्रेब नेबुला एक न्यूट्रान तारे का ही बचा-खुचा मलबा है।

अतः अब तक हमने देखा कि हमारी आकाश गंगा में सफेद बौने तारे, लाल दानव तारे, न्यूट्रान तारे अरबों की संख्या में हैं.......

चलो अब आगे बढ़ते हैं एक और अद्भुत नजारा देखने के लिए......काला सुराख!!!

काला सुराख (Black Hole) : परन्तु अब तुम्हारा प्रश्न यही होगा कि 3 सूरजी इकाई पुंज से बड़े तारों का अन्त किस प्रकार होगा? यह जानने के लिए हम चलते हैं बारह राशियों की राशि धनु (Saggitarius) की ओर। हमारी आकाशगंगा के केंद्र की ओर उड़ान भरने के लिए हमें धनु राशि के केंद्र के बीच में से हो कर गुजरना पड़ेगा और पृथ्वी से हमें इसके केंद्र तक पहुंचने के लिए 27 हजार वर्ष लग जाएंगे, वह भी तब जब हमारा अंतरिक्ष यान एक सैकिंड में तीन लाख किलोमीटर की गति से चले!!!

दोस्तो, इसी दिशा में हमें मिलेगा 'काला सुराख (Black Hole)। मुझे अब तुम्हारे इस सवाल की चिंता है कि यह काला सुराख क्या होता है?.....लो इसकी परख भी कर लें....जब तारे का पुंज 4 सूरजी इकाईयों से अधिक हो तो इसकी मृत्यु के पश्चात्.....अर्थात् सुपरनोवा एवं न्यूट्रान की स्थिति के पश्चात्....इसकी कोर और भी सिंकुड़ती रहती है। तारे का बचा हुआ मलबा इतना अधिक सघन होता है कि इसमें से लिए गए एक चम्मच पदार्थ का वजन खरबों टन होता है!!! इस सघन पुंज में इतना अधिक गुरुत्वाकर्षण उत्पन्न हो जाता है कि इसमें किसी भी प्रकार की विद्युत तरंगें, यहां तक कि प्रकाश की तरंगें भी बच कर बाहर नहीं निकल सकती....अर्थात् हम इस बचे-खुचे मलबे को किसी भी प्रकार की दूरबीन के साथ नहीं देख सकते। अब तुम्हारा अगला जल्दी से सवाल यही होगा कि फिर इसके अस्तित्व का कैसे पता चला। दोस्तो, जब किसी तारे का पुंज लगातार कम हो रहा हो.....ओर तारे का पुंज किसी खास बिंदु के गर्द चक्कर लगाता हुआ खत्म हो रहा हो.....बस यह बिन्दु ही तारे के पुंज को लगातार खा रहा होता है तथा इस अदृश्य बिन्दु को 'स्याह सुराख (Black Hole)' माना जाता है हमारी आकाशगंगा के केंद्र पर एक अत्यंत विशाल स्याह सुराख का अनुमान है। इसका नाम Sagittarius-A रखा गया है....इसका पुंज 4.3 करोड़ सूर्यो के बराबर है और यह स्याह सुराख का गुरुत्वाकर्षण ही है, जिसके साथ हमारी ग्लैक्सी के खरबों तारें बंधे हुए हैं। इसके इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहे हैं.....और हमारी ग्लैक्सी इन सभी कुछ को लेकर एक सैकिंड में 552 किलोमीटर का पथ तय कर रही है।

दोस्तो, ग्लैक्सी अत्यंत विशाल है....हमारी जगह अत्यंत सीमित है.....यात्रा जारी है...हम पहुंचेंगे हमारी आकाशगंगा से बाहर.....ब्रह्माण्ड की अन्य ग्लेक्सियों की ओर.....।

हिन्दी अनुवाद-बलवंत सिंह लेक्चरार

केस रिपोर्ट

डांट फटकार के परिणाम

-बलवंत सिंह लैक्चरार

प्रत्येक माता-पिता की अभिलाषा रहती है कि उनकी संतान पूर्ण अनुशासन में रहे। बच्चों को अनुशासन में रखने के लिए सभी मां-बाप अपना-अपना तरीका अपनाते हैं। जिन्हें बाल-मनोविज्ञान की समझ होती है, वे तो अपने बच्चों के साथ मनोवैज्ञानिक ढंग से व्यवहार करते हैं, परन्तु कुछ लोग बच्चों को अपने नियंत्रण में रखने के लिए बच्चों पर भी अपनी हिटलरशाही चलाने की कोशिश करते हैं। जिन बच्चों को उनके मां-बाप अत्यधिक सख्त अनुशासन में रखने का प्रयत्न करते हैं, ऐसे बच्चों का मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। बड़े हो जाने पर ऐसे बच्चों को अत्यधिक मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसा ही एक मामला मेरे पास लाया गया, जिसे सुधारने के लिए मनोवैज्ञानिक तौर पर एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ा।

योगेश अपने मां-बाप का अत्यंत लाडला लड़का था। योगेश की एक बहन भी थी, जोकि उससे 4-5 वर्ष आयु में बड़ी थी। योगेश बचपन से ही कुछ शर्मीले स्वभाव का था। बचपन में वे दोनों बहन-भाई ही आपस में खेला करते थे। उनका पिता दयाल चंद अत्यंत सख्त स्वभाव का था, वह उन्हें बाहर गली के बच्चों के साथ खेलने से प्रायः टोकता रहता था। दयाल चंद की शहर में काफी प्रतिष्ठित कैमिस्ट की दुकान थी। वैसे तो दयाल चंद का अधिकतर समय अपनी दुकान पर ही व्यतीत होता था, परन्तु उसका पत्नी को सख्त आदेश था कि अपने बच्चों को अपनी सख्त निगरानी में रखे। अपने पति सख्त स्वभाव को जानते हुए वह भी बच्चों को कोई रियायत दे पाने में असमर्थ महसूस करती थी।

पढ़ाई में दोनों बच्चे होशियार थे। वे हर साल अच्छे अंक लेकर पास होते चले गए। बड़े होने पर लड़की ने बीएससी नर्सिंग उत्तीर्ण कर ली और जल्दी ही उसकी शादी हो गई। योगेश ने 12वीं में बहुत अच्छे अंक प्राप्त करके आगे बीएससी में दाखिला ले लिया। स्कूल स्तर तक शिक्षा ग्रहण करते समय तो उसे कोई विशेष परेशानी नहीं आई, परन्तु अब जब उसने कालेज जाना शुरू किया तो उसे कई प्रकार की मानसिक उलझनें आनी शुरू हो गई। घर में आर्थिक सम्पन्नता तो थी ही। अतः दयाल चंद ने योगेश को कालेज जाने के लिए अलग से एक कार लेकर दे दी। योगेश ने काफी समय पहले ही कार ड्राईविंग सीख ली थी। कभी-कभी अपने पिता के साथ कहीं जाते समय वह कार को चला भी लिया करता था।

परन्तु अब योगेश के सामने एक नई समस्या यह आ गई थी कि वह कार को अपनी कोठी के गेट से बाहर नहीं निकाल पाता था। सड़क पर आकर वह कार को बिल्कुल ठीक ड्राईव कर लेता था, परन्तु गेट के अंदर ले जाते समय और गेट से बाहर निकालते समय वह घबरा जाता था तथा उससे कार बंद हो जाती थी। कभी-कभी उसे महसूस होता कि गेट के बाहर कोई औरत खड़ी है और वह उसकी कार के नीचे आ जाएगी। इससे वह एकदम घबरा जाता और झट से कार के बाहर आ जाता। अब उसके मन में बुरे-बुरे ख्याल आने शुरू हो गए। फिर से डर वाले सपने आने शुरू हो गए। सपने में उसे महसूस होता कि उसकी कार से टकरा कर किसी व्यक्ति की मृत्यु हो गई है। इससे वह डर कर उठ बैठता और फिर सारी रात उसे नींद न आती।

उसकी ऐसी हालत देख कर उसके पिता ने शहर के कई डाक्टरों से उसका मुआयना किया। डाक्टरों ने कई टैस्ट किए, सभी टैस्ट सामान्य होने के कारण उन्होंने कह दिया कि यह ठीक-ठाक है, इसे कोई रोग नहीं है।

इसी दौरान योगेश की मां किसी परिचित महिला के कहने पर उसके साथ किसी बाबा की चौकी पर पुच्छा लेने के लिए चली गई। पुच्छा में उस बाबा ने बता दिया कि योगेश पर किसी ने कुछ करवा दिया है। उपाय के तौर पर योगेश के गले में बांधने के लिए एक ताबीज दे दिया। घर आकर योगेश की मां ने उसके गले में वह ताबीज डाल दिया। उसे विश्वास था कि योगेश अब बिल्कुल ठीक हो जाएगा, परन्तु बात

इसके विपरीत हो गई। अब योगेश की हालत और भी खराब होने लग गई। अब उसका आत्मविश्वास बिल्कुल ही खत्म होता चला गया। वह बात-बात पर चिढ़ने लग गय। अब उसके मन मे नकारात्मक विचार और भी अधिक आने लग गए। उसकी ऐसी हालत देख कर घर वाले उसे कई और बाबाओं के पास ले गए। सभी ने उस पर ओपरी-पराई का साया तो बता दिया, परन्तु योगेश की हालत और अधिक खराब होती चली गई।

अंत में एक परिचित ने योगेश की ऐसी दशा को देखकर उन्हें मेरे पास रविवार को लगने वाले मनोरोग परामर्श केंद्र में भेज दिया। मैंने योगेश के साथ अकेले में लंबी बातचीत के द्वारा उसके मन की समस्या का पता लगा लिया और फिर मनोवैज्ञानिक ढंग से काऊंसलिंग द्वारा उसके मन पर पड़े हुए बोझ को उतार दिया। इससे वह काफी राहत महसूस करने लगा। फिर लगातार 8-10 बार उसे परामर्श केंद्र पर बुलाकर मनोवैज्ञानिक ढंग से उसका मनोबल बढ़ाया तथा उसके आत्मविश्वास को और पुख्ता किया। इस प्रकार वह बिल्कुल सामान्य हो गया। जब वह दूसरी बार मेरे पास परामर्श केंद्र में आया तो वह काफी प्रसन्न मुद्रा में था। उसने बताया कि अब वह अपनी गाड़ी स्वयं ही अपनी कोठी के गेट से बाहर निकाल लेता है और फिर कालेज से वापिस आने के पश्चात् खुद ही अंदर ले जा कर पोर्च में लगा देता है।

वास्तव में दयाल चन्द एक पुरातन पंथी सोच वाला व्यक्ति था। उसका मानना था कि बच्चों को शुरू से ही सख्त अनुशासन में रखना आवश्यक है। इसके साथ-साथ उसे अपनी धन-दौलत का भी अभिमान था। इसी कारण उसने अपने बच्चों को बचपन में गली मौहल्ले के अन्य बच्चों के साथ खेलने व घुलने-मिलने नहीं दिया। जब योगेश थोड़ा बड़ा हो गया तो दयाल चन्द को भय था कि योगेश अपनी अमीरी के कारण ऐय्याश न बन जाए। अतः उसने योगेश पर और अधिक नियंत्रण रखना शुरू कर दिया। इस कारण से योगेश मानसिक तौर पर पूर्ण विकसित ही न हो सका। वह आत्मकेंद्रित होता चला गया। उसमें आत्म निर्णय लेने की भावना विकसित न हो सकी।

जब योगेश ने नई-नई ड्राइविंग सीखी थी तो शौक में वह अपने पिता की गाड़ी चला लिया करता था। एक दिन गेट से गाड़ी निकालते समय जल्दबाजी में गेट से लग कर गाड़ी में थोड़ा सा डेण्ट पड़ गया। गाड़ी में डेण्ट पड़ा हुआ देख कर दयाल चन्द ने योगेश को गुस्से में बुरी तरह डांट दिया था। उस घटना के बाद योगेश के मन में अति संवेदनशील होने के कारण हीनता की भावना हावी होती चली गई। उसका आत्मविश्वास डगमगाने लग गया। जब उसके पिता ने उसे कालेज जाने के लिए कार उपहार में दी तो योगेश के अवचेतन मन में बैठी हुई बात उभर कर सामने आ गई। अब जब भी वह अपनी कार को गेट से बाहर निकालने लगता तो उसका मन बेचैन हो जाता और वह कार को गेट से बाहर न निकाल पाता।

जब वे बाबाओं के चक्कर के चक्कर में पड़ गए तो योगेश के मन की उलझन और बढ़ती चली गई, जिससे उसकी परेशानी भी बढ़ती चली गई।
अब लगभग 6 महीने बीत चुके हैं, योगेश को फिर कोई समस्या नहीं आई।

पृष्ठ 3 को शेष .. संपादकीय..

मानवीय मूल्यों का भी ह्रास कर रहा है। शिक्षा को समाज सम्मत बनने का अमल चाहे समुचे सामाजिक परिवर्तन के साथ जुड़ा हुआ है पर सामयिक तौर पर संकट से घिरे विद्याथी वर्ग का रास्ता प्रकाशित करने के लिए आज सचेत अभिभावकों, अध्यापकों और सामाजिक कार्यकताओं को लाज़मी तौर पर विद्या के क्षेत्र में यह बात चर्चा में लाने की जरूरत है-शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य क्या होते हैं, अध्यापकों को बच्चों को मानसिक/बौद्धिक तौर पर सेहतमंद बनाने अर्थात भाव चुनौतियों का सामना करने के योग्य बनाने के लिए क्या-क्या यत्न करने चाहिएं, बच्चों/अभिभावकों की सफलता/असफलता को किस दृष्टिकोण से देखना चाहिए आदि। हर बच्चे के अंदर के प्रतिभा क्षेत्र को पहचानने की अत्यंत जरूरत है। साथ ही जरूरत है शिक्षा संबंधी नीतियों में समाजपक्षीय तबदीलियों की लड़ाई को तेज करने की ।

***

तर्कशील हलचल

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की राज्य कार्यकारिणी की बैठक व सेमिनार सम्पन्न

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की राज्य कार्यकारिणी की बैठक व सेमिनार दिनांक 14-5-2017 को अम्बेडकर भवन, उकलाना में सम्पन्न हुआ। सेमिनार में अंधविश्वासों के विरूद्ध जागरूकता विषय पर विभिन्न वक्ताओं ने अपने वक्तव्य दिये। इस सभा के आयोजन म ेंउकलाना, सनियाना इकाई से फरियाद सिंह, रामप्रसाद, दयानंद, सत्यवान आदि ने अहम् भूमिका निभाई। मंच संचालन राज्य सचिव रोजश पेगा ने किया एवं अध्यक्षता राज्य प्रधान गुरमीत सिंह न ेकी। मुख्य वक्ता के रूप में ेलते हुए डा. महेंद्र विवेक ने ऐतिहासिक तथ्यों में कल्पित कहानियां जोड़ के इतिहास के रूप में प्रचारित करने पर चिंता व्यक्त की। प्रा. बलवंत सिंह, सम्पादक तर्कशील पथ ने मासिक रोगों पर अपना वक्तव्य रखा और राजा राम हंडियाया ने सोसायटी के हरियाणा में स्थापित होने से लेकर आज तक की प्रगति को सराहा। कृष्ण लाल ने आप बीती अंधविश्वाश की घटनाओं से इनसे बचने का संदेश दिया। तर्कशील सोसायटी पंजाब से विशेष रूप से पधारे मा. अजायब जलालआना ने मृतक शरीर मेडकल खोजों के लिए प्रदान करने के सोसायटी के उस ऐतिहासिक संदर्भ को रखा, जब डा. काव्वूर ने इसकी शुरुआत की थी। प्रदेश प्रधान गुरमीत सिंह ने डा. नरेंद्र दाभोलकर, गोविंद पानसरे, डा. कलबुर्गी के बलिदान को याद किया। सभा में कोशाध्यक्ष अनुपम सिंह प्रचार सचिव सुभाष तीतरम आदि व अन्य राज्य कार्यकारिणी सदस्यों ने भाग लिया।

वैज्ञानिक चेतना का प्रचार

27 मई को राजकीय जीएरएक कालांवाली की ओर बच्चों में वैज्ञानिकचेतना के प्रचार और प्रसार के लिए एक प्रोग्राम दिया गया जिसमे बच्चों ने सवाल-जवाब किये। जादू के माध्यम से बच्चों में तार्किक दृष्टिकोण पैदा किया गया । इस कोशिश में मा. शमशेर चोरमारे, मा. अजायब जलालआना ने कार्य किया। इस वर्कशॉप रूपी बातचीत को 3 घंटे तक खासकर लड़कियों ने बड़ी गौर से सुना और समझा। अंत में पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई।

दिनांक 6-5-2017 को तर्कशील सोसायटी कालांवाली के पदाधिकारी साथी अजायब जलालआना और साथी जगदीश सिंहपुरा अपनी जादुई शैक्षणिक किट के साथ राजकीय उच्च विद्यालय, वैदवाला में पहुंचें। दोनों साथियों ने छात्रों के स्तर अनुसार जीवन की घटनाओं को जानने समझने और महसूस करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम को रोचक बनाते हुए जादू के ट्रिक दिखाए जिन्हें छत्रों अध यापकों, अभिभावकों ने उत्सुकता से देखा और बहुत सरहना की। एसएमसी के प्रधान जगदीश कुमार, नंबरदार बलजिंदर सिंह पंचायत प्रतिनिधि अशोक कुमार बठला, नंबरदार जुमन प्रकाश और पंच मदन लाल उपस्थित हुए। इस समय दर्जनों अभिावक भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जानकार अचंभित थे। अंत में विद्यालय की सांस्कृतिक टीम की सभी छात्राओं को सुंदर डिनर सैट भेंट कर सम्मानित किया गया। उपस्थित जनसमूह ने तर्कशील साहित्य खरीदा। विद्यालय प्रभारी मैडम प्रोमिला भंडारी ने आगत अतिथियों सहित उपस्थित जनसमूह का धन्यवाद किया।

पुरूषोत्तम शास्त्री संस्कृताध्यापक
रा.उ.वि.वैदवाला

‘एक सोच नई सोच’ संस्था और तर्कशील सोसायटी द्वारा वैज्ञानिक कार्यक्रम

‘एक सोच नई सोच’ संस्था और तर्कशील सोसायटी द्वारा शहीद नवीन वैद्य सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में जॉयफूल शनिवार एक्टिविटी दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों को ब्रह्मांड की सैर पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य यही था कि विद्यार्थी वैज्ञानिक चिंतन करे और अपने ज्ञान का विस्तार करे। तर्कशील सोसाइटी के संस्थापक श्री आर. पी. गांधी जी ने बताया ब्रह्मांड क्या है, ब्लैक होल क्या है, सूरज कैसे बना, धरती कैसे बनी, ग्रह क्या होते है, मानव जीवन की उत्पत्ति कैसे हुई, धरती पर वायुमण्डल कैसे बना, इन सभी विषयों पर अपने विचार व वैज्ञानिक चिंतन करने से मानव जीवन मे सुख सुविधाएं बढ़ी हंै पहले मनुष्य गुफाओं में रहता था और आज हम घरों में रहते हैं। पहले बैलगाड़ी पर यात्रा करते थे अब हमारे पास मोटरसाईकल ओर कारें हैं। पहले पत्र के द्वारा संदेश पहुंचाते थे अब मोबाइल के माध्यम से हम कुछ सेकेण्ड में अपना संदेश पहुंचा सकते हैं। पहले हमारे पूर्वज अंधेरे में जीवन यापन करते थे लेकिन प्रकाश के आविष्कार ने हमारे जीवन मे नए आयाम जोड़े हैं। वैज्ञानिक चिंतन के द्वारा ही सामाजिक कुरीतियों को खत्म किया जा सकता है

अंत मे बच्चों को उनके प्रश्नों के उत्तर दिए गए इस अवसर पर स्कूल के प्रिंसिपल श्री सुरेंद्र जी, निर्मल सयाल जी, पूजा जी, लक्ष्मण सिंह, लाल सिंह जी के सहयोग से इस कार्यक्रम का सफल समापन हुआ

शशी गुप्ता
यमुनानगर 9215610076

गांव दीवाना में जादू के माध्यम से वैज्ञाानिक प्रचार

गांव दीवाना जिला फतेहाबाद में देर रात 2 बजे तक लोग मेले में बैठे रहे। जिसमें तर्कशील सोसायटी कालांवाली की टीम मा.जगदीशसिंघपुर, मा.दर्शन जलालआना कुलदीप सिंह व मा. अजायब जलालआना शामिल थे। तर्कशीलों ने जादू के माध्यम से लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करने के लिए अपनी बात रखी। विभिन्न स्थानों पर हुए चमत्कारों के पर्दाफाश करने की घटनाओं का उल्लेख करते हुए आग पर चलकर दिखाया गया। वाटर ऑफ इंडिया, कीलों पर लेटना, मुंह में आग, बिना दीया सलाई के आग पैदा करना आदि के पीछे चालाकियों की व्याख्या की गई। और पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई जिसमे बड़ी संख्या में लोगों ने तर्कशील साहत्य खरीदा।

रिपोट मा. बलवंत सिंह, लेक्चरार

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति की प्रशिक्षण कार्यशाला सम्पन्न

दिनांक 24-25 जून 2017 को अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति की ओर से एक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला गांधी पीस फाउंडेशन, नई दिल्ली में करवाई गई जिसमें महाराष्ट्र, हरियाणा, उत्तर प्रदेश से प्रतिभागी पहुंचे। इसमें वक्ताओं ने वैज्ञानिक चेतना, बाबागिरी, चमत्कारों का पर्दाफाश आदि विषयों पर विचार रखे। कार्ययशाला का उद्घाटन स्वामी अग्निवेश ने किया जिसमें पी.एन. वार्ष्णेय, डा. राजेन्द्र कंकरिया ने वैज्ञानिक चिंतन पर अपने विचार रखे। नन्दनी जाधव ने महिलाओं की तर्कशील विषयों में भागीदारी पर ावक्तव्य रखा। डा. सुदेश गोरेराव ने मंच संचालन किया तथा बुआबाजी (बाबगिरी) पर अपना व्याख्यान रखा। चमत्कारों का पर्दाफाश शाह जी भेंसले ने किया। अध्यक्षता कार्यकारी अध्यक्ष अविनाश पाटिल ने की। माधव भागवे ने अपनी संस्था म.अ.नि.स. की रूपरेखा प्रस्तुत की। तर्कशील सोसायटी हरियाणा की तरफ से सोसायटी के प्रधान गुरमीत सिंह, उप-प्रधान फरियाद सिंह एवं एक्टीविस्ट लक्षमी आनंद ने भाग लिया।

आश्रम के बाबा गंगेशानंद तीर्थपाद का छात्रा ने काटा लिंग,

पिछले आठ सालों से लगातार कर रहा था बलात्कार
(पड़ताल ब्यूरो मई 20, 2017)

तिरुवंतपुरम-शुक्रवार की देर रात तिरुवंतपुरम में एक तेईस वर्षीय लड़की ने एक धर्मगुरु का उस वक्त लिंग काट दिया जब वह रेप करने के कोशिश कर रहा था। डेक्कन हेराल्ड की एक रिपोर्ट के मुताबिक अपराधी की पहचान हरि उर्फ गंगेशानंद मूर्तीपाद (54) के रूप में की गई है। उसे राजकीय मेडिकल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अस्पताल के सूत्रों ने बताया कि एक सर्जरी के बाबा की हालत बेहतर है। पुलिस द्वारा दर्ज लड़की के बयान के मुताबिक अपराधी ने उसके साथ पांच साल तक यौन शोषण किया था। यह घटना पेट्रह में लड़की के घर हुई थी। प्राथमिक रिपोर्टस में कहा गया है कि हरि ने उसका यौन उत्पड़न किया जिसके बाद प्रतिशोध में लड़की ने उसे चाकू मारा।

रिपोर्ट के मुताबिक हरिकोल्लम में परमाना आश्रम में रहता है और लड़की के परिवार को पिछलें पांच साल से जानता है और इससे पहले उसने उनके घर में पूजा पाठ किया था। पुलिस ने यौन उत्पीड़न से बच्चों का संरक्षण अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर लिया है। घटना के सिलसिले में पुलिस ने लड़की की मां को हिरासत में ले लिया है।

बाबओं के काले कारनामें

छात्रा की हो रही तारीफ

छात्रा द्वारा ऐसा किए जाने की सब तारीफ कर रहे हैं। केरल के मुख्यमंत्री पी.विजयन ने छात्रा की तारीफ करते हुए कहा कि बहादुर लड़की ने अपने दोषी को जो सजा दी वह बहुत ही सही है। इसके बाद केरल महिला आयोग की सदस्य प्रमीला देवी न ेकहा कि हमें छात्रा पर गर्व है। महिला ने साबित कर दिया कि धर्म की आड़ में कोई भी व्यक्ति किसी महिला के साथ ऐसा कृत्य नहीं कर सकता है।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार पुलिस ने छात्रा की मां को भी हिरासत में ले लिया है । पुलिस का कहना है कि उसकी मां महिला के साथ हुई घटना के बारे में जानती थी लेकिन फिर भी उसने पुलिस में शिकायत दर्ज नहीं कराई। लडकी ने पुलिस को अपने बयान में बताया कि आरोपी ने उसकी मां का शारीरिक शोषण भी किया था।

अंधविश्वास का नतीजा

एक महिला से दस लाख ठगने वाले तीन तांत्रिक गिरफ़्तार

करनाल की एक महिला से तांत्रिक विद्या से बच्चों का ईलाज कराने के नाम पर तीन शाति युवकों ने महिला से दस लाख दस हजार की ठगी कर ली। पुलिस ने तीनों युवकों को गिरफ्तार कर लिया है। महिला से ठगी गई लाखों की राशि बरामद कर ली गई है।

महान वचन

**जो कमजोर होते हैं वे लड़ते नहीं
जो उनसे अधिक मजबूत होते हैं
वे लड़ सकते हैं घंटे भर के लिए।
जो और अधिक मजबूत होते हैं
वे फिर भी लड़ सकते हैं कई वर्षों तक
सबसे अधिक मजबूत लोग लड़ते हैं
अपनी पूरी ज़िंदगी।
वही हैं जो अपरिहार्य होते हें।**

- बेर्टोल्ट ब्रेष्ट

(अवतार अर्श 9814949725 द्वारा प्रेषित)

अंधविश्वास के चलते

सपने में आया शिवलिंग और खोद डाला नैशनल हाइवे

हैदराबाद-सोमवार को जब देश जीएसएलवी मार्क 3 की कामयाब लॉचिंग देख रहा था, वहीं हैदराबाद के पास को शिवलिंग तलाशने के लिए नेशनल हाईवे 163 को खोदा जा रहा था। खुदाई का काम जेसीबी मशीनों से किया गयाा जिसमें स्थानीय लोगों से लेकर नेताओं तक का सपोर्ट था। हैरानी की बात यह थी कि यह सब एक शख्स के कहने पर हो रहा था जिसने सपने में इस जगह पर शिवलिंग देखे जाने का दावा किया था।

यह घटना हैदराबाद से 80 किलोमीटर दूर तेलंगाना के जनगांव की है। इस प्रकरण से नेशनल हाइवे की दोनों ओर से कम से कम एक किलामीटर तक लंबा जाम लग गया। यह हाइवे वारंगल से हैदराबाद को जोड़ता है। इसी हाइवे के बीचों बीच 15 फुट गहरा व 8 फीट चौड़ा गड्ढा खोदा गया है।

एक मीडिया रिपोर्ट में स्थानीय लोगों के हवाले से बताया गया कि लंबे समय से मनोज नाम का शख्स इस जगह खुदाई करने के लिए जोर डाल रहा था। उसने सपने में इस जगह शिवलिंग देखा था। हर बार जब वह सड़क के इस हिस्से में आया वह बुरी तरह हिलने और लौटने लगता। पिछले तीन साल से वह शिवरात्रि के मौके पर इस जगह पर खुदाई के लिए जोर दे रहा था मगर कोई उसका साथ नहीं रहाथा। वह हर सोमवार हाइवे के किनारे पूजा करताथा। आखिरकार गांव वाले स्थानीय नेता और सरपंच राजी हो गए और जेसीबी मशीनों की मदद से इस काम को अंजाम दिया गया। लेकिन शिवलिंग तब भी नहीं मिला। शुरुआत में मनोज ने कहा कि यह 10 फीट गहराईमें है, मगर गड्ढा 15 फीट तक खोद डाला गया फिर भी शिवलिंग नहीं मिला।

तब एक स्थानीय पुलिस वाले को मनोज पर शक हुआ और पुलिस में रिपोर्ट की। पुलिस मनोज और एक लोकल नेता को वहां से पकड़कर ले गई। स्थानीय पुलिस इंस्पेक्टर के मुताबिक अवैध खुदाई का केस दर्ज किया गया है। एफआईआर में किसी का नाम नहीं लिया गया है।

बेटे को जहाज में चढ़ाती चढ़ाती माँ नहर में गिरी

बटाला : 18 मई- गांव पुदर की अमरजीत कौर जिस ने राजनीति विज्ञान की एमए की हुई है, ने अपने बेटे अमनदीप को अमेरिका भेजने के लिए एक तांत्रिक के कहने पर नारियल को बहते पानी में डालने की कोशिश की परंतु ऐसा करते हुए नहर में बह गई। निकट ही पशु चराते कुछ युवकों ने कोशिश करके उसे बचा लिया।

अमरजीत कौर ने बताया कि उसने अपने बेटे को विदेश भेजने के लिए दिल्ली के एक एजेंट के पास 30 लाख रूपया दो साल से फंसा रखा है और उस का बेटा अभी तक विदेश नहीं जा पाया। उस ने अपने एक सहेली की सलाह पर एक तांत्रिक को 3100 रूपये देकर 'मंत्र द्वारा सिद्ध किया हुआ 'नारियल' प्राप्त किया और तांत्रिक के कहे मुताबिक बहते पानी में बहाने का यत्न किया जो उस की जान जाने का कारण बनता-बनता रह गया। महिला ने कह कि भविष्य में वह किसी तांत्रिक या ज्योतिषी की मदद नहीं लेगी।

भगवान को खुश करने के लिए बच्ची की बलि दी

जमशेदपुरः झारखंड के सरायकेला-खर्सवन जिले में एक व्यक्ति ने भगवान को खुश करने के लिए तांत्रिक की मदद से 7 माह की एक बच्ची कथित तौर पर बलि दे दी, ताकि उसे और उसकी पत्नी को संतान प्राप्ति हो सके। उपसंभागीय पुसि अधिकारी (चंदिल) संदीप भगत ने बताया कि भदौई कलिंदी और तांत्रिक, कर्मू कलिंदी को पुलिस ने कल तिरलडीह पुलिस थाना क्षेत्र के अंतर्गत चैदा गांव से गिरफ़्तार कर लिया। उन्होंने बताया कि भदोई एक सपेरा है उसकी षादी करीब 8 साल पहले हुई थी लेकिन उनकी कोई संतान नहीं है।

-दैनिक सवेरा (3-6-2017)

तांत्रिक के कहने पर पिता ने चढ़ाई बेटी की बलि, फरार

संभल (सिटी मीडिया)- एक तरफ तो सरकार बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसे अभियान चलाने की बात कहती है। वहीं दूसरी ओर देश में बेटियों के खिलाफ हो रहे अपराधों में कोई कमी नहीं आ रही है। दिल दहला देने वाल ताजा मामला जनपद संभल का है। जहां एक बेरहम पिता ने ऊपरी हवा के चक्कर में एक तांत्रिक के बहकावे में आकर अपनी ही डेढ़ माह की मासूम बच्ची की बलि चढ़ा दी। सूचना मिलते ही इलाके में एक सनसनी से फैल गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने मामले की जांच की और तांत्रिक व खूनी पिता की तलाश में जुट गई।

घटना के अनुसार जनपद संभल के बनियाढेर थाने क्षेत्र के नरौली में रहने वाले कल्याण की शादी चार पहले रानी से हुई थी जिससे कल्याण की दो बेटियां थीं। तीन साल की संजना और डेढ़ माह की बच्ची। इस कलयुगी बाप ने तांत्रिक के कहने पर अपनी डेढ़ माह की मासूम बच्ची की बलि चढ़ा दी।

-सिटी मीडिया
20-5-2017

अनिद्रा से पीड़ित लोगों में अस्थमा का खतरा ज्यादा

लंदन। एक नए अध्ययन में यह चेतावनी जारी की गई है कि गंभीर अनिद्रा का सामना कर रहे लोगों में विकार से वंचित लोगों की तुलना में अस्थमा का खतरा तीन गुणा से ज्यादा हो सकता है। अस्थमा से पूरी दुनिया में 300 मिलियन लोग प्रभावित हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि इसके लिए धुम्रपान, मोटापा और वायु प्रदूषण समेत कई कारक इसका कारण हैं। हाल ही में अवसाद और चिंता के लक्षण को व्यस्क लोगों में अस्थमा के विकास के एक जोखिम के साथ संबद्ध किया गया है। नार्वे यूनिवर्सिटी आफ साईंस एंड टेक्नोलोजी के लिन बीट स्ट्रैंड ने कहा, 'अनिद्रा अस्थमा रोगियों के बीच आम है। यह शोध यूरोपीय जर्नल में प्रकाशित हुआ।

-अमर उजाला

स्वास्थ्य

नहीं रोकें शारीरिक की सामान्य क्रियाओं को

हमारे शरीर में कुछ सामान्य क्रियाएं स्वतः होती रहती हैं। कई बार हम प्रायः इन्हें बाधित करने का प्रयास करते हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है। इन क्रियाओं को सामन्य रूप से होने देना चाहिए । इनमें से कुछ हैंः

छींक : छींक को रोकना खतरनाक है। छींक से नाक साफ होती और अवांछित वस्तु बाहर निकल जाती है।

जम्हाईः जम्हाई रोकने से मांसपेशियों में अकड़न, नाक आंख, गले और कान की बीमारियां हो सकती हैं। यही नहीं जम्हाई को रोकने हमारे शरीर में कंपन, थरथराहट या फिर मूर्छा की स्थिति भी आ सकती है।

नींदः नींद भोजन से भी ज्यादा जरूरी है। यदि आप एक रात सो न पाएं तो आप दिन में सामन्य नहीं रह सकते। सोने से शरीर को नई ऊर्जा प्राप्त होती है। यदि आपके अंदर चिड़चिड़ापन, याद्दाश्त में कमी, पाचन क्रिया में गड़बड़ी आदि के लक्षण हैं तो हो सकता है कि इसका कारण आपकी अनिद्रा हो।

आंसूः- आंसू में तमाम तरह के रसायन होते हैं। आंखों से जितना पानी निकले, उसे निकलने देना चाहिए। इस प्रवृत्ति को दबाने से आंखों के रोग, मस्तिष्क रोग, सीने व सिर में दर्द, चक्कर आना और पाचन तंत्र में गड़बड़ी जैसे रोग हो सकते हैं।

हिचकी और खांसी और पेट की हवाः इसके रोकने से अथवा पेट में से गुदा मार्ग से निकलने वाली वायु को रोकने से पेट की बीमारियां हो सकती हैं।

बच्चों का कोना

विद्युत से आवेशित गुब्बारे

गुब्बारे को बालों पर रगड़ने से, गुब्बारा विद्युत से आवेशित हो जाता है।

इस तरह से करें :

- गुब्बारा फुलाकर उसे सूखे बालों या ऊनी कपड़े पर रगड़ें और दीवार के पास ले जाएं। वह दीवार पर चिपक जाएगा। गुब्बारे को अपने गाल या हथेली के पास लाएं, वहां भी चिपक जाएगा।

कुछ चर्चा :

- रगड़ते समय बालों से इलैक्ट्रान छलांग लगाकर गुब्बारे पर आ जाते हैं। अतिरिक्त इलैक्ट्रानों के कारण गुब्बारा ऋण आवेशित (negatively charged) हो जाता है।
- ऋण आवेशित गुब्बारे को दीवार के पास लाते हैं तो दीवार से कुछ इलैक्ट्रॉन विकर्षित हो जाते हैं (समान आवेश विकर्ष्ति करते हैं) और दीवार का वह हिस्सा धन आवेशित हो जाता है। इसलिए गुब्बारा उस पर चिपक जाता है (विपरीत आवेश आकर्षित करते हैं)।
- यह प्रयोग ठंड के दिनों में (शुष्क दिनों) बेहतर परिणाम देता है। अगर ज्यादा नमी हो तो, आवेश आसपास की हवा में मौजूद जल कणों में चले जाते हैं।

एक और गतिविधि :

- दो गुब्बारों को फुलाकर, धागों से उन्हें आसपास लटका दें। उन्हें बालों पर रगड़ कर कर छोड़ दें। दोनों एक-दूसरे से दूर हो जाएंगे।

पानी की धार भी आकर्षित होती है।

हर परमाणु में प्रोटॉन, इलैक्ट्रॉन रहते हैं। प्रोटॉन और इलैक्ट्रॉन ये दोनों ही विद्युत से आवेशित (electrically charged) रहते हैं। प्रोटॉन के आवेश को धनात्मक (+) और इलैक्ट्रॉन के आवेश को ऋणात्मक (–) कहते हैं। प्रायः किसी भी परमाणु में प्रोटॉन और इलैक्ट्रॉन समान संख्या में रहते हैं, इसलिए वे एक-दूसरे के आवेश को बेअसर कर देते हैं। अगर इलैक्ट्रान की संख्या कम या ज्यादा हो जाए वस्तु आवेशित हो जाती है।

इस गतिविधि के लिए आपको चाहिए प्लास्टिक की कंघी।

इस तरह से करें :

- सूखे बालों में कई बार कंघी कर लें। इससे कंघी आवेशित हो जाएगी।
- नल की टोंटी को इतना ही खोलें कि एक पतली पानी की धार गिरने लगे। आवेशित कंघी को धार के पास लाएं। कंघी पानी की धार को अपनी ओर खींच लेती है।

कुछ चर्चा :

- जब आप कंघी को बालों में फेरते हैं, तब कुछ इलैक्ट्रॉन बालों से कंघी पर आ जाते हैं। अतिरिक्त इलैक्ट्रॉन आ जाने से कंघी पर ऋण आवेशित हो जाती है।
- जब आवेशित कंघी को पानी की धार के पास लाते हैं तब वहां पानी की धार में मौजूद इलैक्ट्रॉन विकर्षित हो जाते हैं और धार का वह हिस्सा धन आवेशित हो जाता है। चूंकि विपरीत आवेश आकर्षित करते हैं, पानी की धार कंघी की ओर खिंच जाती है।

मनुष्य ने मनुष्य का जितना खून बहाया, किसी और ने नहीं

- आर.पी.गाँधी

जब हम इतिहास के पन्ने पलटते हैं तब हम पाते हैं कि इंसान मानव खून से भरा पड़ा है। अपने-आप को सभ्य कहने वाला पूर्ण रूप से मनुष्य नहीं बन सका। कई जगह पशुओं से भी ज्यादा गिरा हुआ नजर आता है। आदि काल से में जब मनुष्य छोटे-छोटे झुंडों में रहता था। शक्तिशाली झुंड कमजोर झुंड वालों को मारकर खा जाता था। जब इसने सोचा कि वह मेरे एक दिन की खुराक बना, क्यों न इसे अपना दास बनाया जाए और अपने सारे काम मनुष्य द्वारा करवाए जाएं, जिससे मनुष्य का मनुष्य द्वारा शोषण होने लगा। यह बढ़ते-बढ़ते छोटे राज्यों और बड़े महाराजों की शक्ल भी परिवर्तित हुए इसके सथ दास युग शुरू हो गया।

दासों को दास से मुक्ति पाने के लिए एक लंबा संघर्ष करना पड़ा। लाखों की गिनती में शक्तिशाली मनुष्यों ने कमजोर लोगों (दासों) का खून बहायां अमेरिका के पहले प्रधान अब्राहिम लिंकन ने दास प्रथा पर पाबंदी लगाई, जिससे यह नतीजा निकला कि अब्राहिम लिंकन को गोली से मार दिया गया। अफ्रीकन देशों में निग्रो या हब्शियो का कुत्तों द्वारा शिकार होता है। उनका मांस बंद डब्बों में खाने के लिए भेजा जाता है ओर बहुत सारे हब्शियों को दास बनाकर मंडियों मे बेचा जाता था। यह एक लंबी कहानी है।

भारत में राजा हरिश्चंद्र का भरी मंडी में बिकना और उसके बच्चे और पत्नी की निलामी में बिकना दास प्रथा का सबूत मिलता है। आगे भी कई ऐसे सबूत मिलते हैं। जब भरी मंडियों में मनुष्य को बेचा जाता रहा है। यहां तक कि राजा महाराजा अपनी बेटियों की शादी में कितने दास व दासियों को दहेज में दे देते थे। इसके भी इतिहास के पन्नों में सबूत मिलते हैं।

इन सब बातों के पीछे बड़ी-बड़ी लड़ाईयों के कुछ कारण है जिसमें अंधाधुंध आदमियों के कत्ल होते और जो फौजी पकड़े जाते, उन्हें अपना दास बना लेते। अशोक ने जब राज्य के विस्तार के लिए कलिंग पर हमला किया, तो पांच लाख लोगों को जिंदगी से हाथ धोना पड़ा। लड़ाइयों के चार पांच मुख्य कारणथे पहला राज्य का विस्तार, भारत एक रिवाज था अश्वमेघ यज्ञ रचाया जाता और एक घोड़ा छोड़ा जाता, जिस-जिस स्थान से वह घोड़ा निकलता, उस स्थान का राजा अगर घोड़े को पकड़ता, तो युद्ध करना पड़ता और वर्ना एक मोटी रकम जुर्माने के रूप में जिस राजे का घोड़ा होता उसे लगान के रूप में बहुत पैसा देना पड़ता।

धर्म के नाम पर मनुष्य ने मनुष्य का बहुत खून बहाया, जिससे धरती लाल हो गई। यहूदियों औ इसाईयों की लड़ाईयों, इसाईयों और मुसलमान के बीच लड़ाईयां, रोमन व यहूदियों के बीच में लड़ाईयां, शिया और सुन्नी की लड़ाईयां, जिसमें लाखों लोग कुर्बान कर दिए जाते हैं। इसके मुख्य चार कारण थे पहला विस्तारवाद, धर्मान्धता, रंग मतभेद, नस्ल मतभेद जिसका एक लंबा इतिहास है, आज भी ऐसी घटनाएं अक्सर होती रहती हैं।

दूसरा विश्व युद्ध 1938 से 1945 तक चला और उसमें 5 करोड़ लोगों को अपने जीवन से हाथ ध ोना पड़ा। यह लड़ाई जर्मनी के तानाशाह द्वारा विस्तारवाद के लिए लड़ी गई थी। इस लड़ाई में 65 हजार यहूदी गैस चैंबर में डालकर समाप्त कर दिए गए, जिन्हें कुत्ता गाड़ी में भरकर लाया जाता था। उनकी खाल से लैंप शेड बनाया जाता था। उनके खून को निकाल कर खाद के रूप में अंगूर की बेल में दिया जाता था। पूरी दुनिया में त्राहि-त्राहि मची हुई थी। स्वयं को दयालु कहने वाला पुरुष बर्बरता की हर हद को पार कर रहा था। इस लड़ाई में 2 करोड़ केवल रूसी मारे गए थे। लड़ाई के खात्मे पर पांच करोड़ लाशों के ऊपर जीत के जश्न मनाए गए। इतनी मौतों का दर्द का इंसान को अहसास न था। 1947 में भारत में धर्म के नाम पर बंटवारे के कारण 10 लाख लोगों को अपनी जिंदगी से हाथ ध

ोना पड़ा। बुढ़े, महिलाओं और बच्चों की कोई परवाह नहीं की गई। जो हाथ लगा, उसे कत्ल कर दिया गया। हिन्दू या मसुलमान होना भी एक जुर्म था। इधर और उधर दोनों हिस्सों में लाहौर में महिलाओं पर सबसे ज्यादा जुर्म ढाया गया। पाकिस्तान लाहौर शहर में इतनी द्रोपदियां नंगी की गई, उनका जुलूस निकाला गया और वह चीखती एवं चिल्लाती रही, परन्तु कोई कृष्ण साड़ी लेकर नहीं पहुंचा। ऐसे ही अमृतसर शहर में अम्मा-हौवा की बेटियां अल्लाह के कर्म के आगे रहमो कर्म की दुआ मांगती हें पर किसी रहीम ने उसके ऊपर रहमत न की, न किसी करीम ने कोई सहायता की। इस तरह से इंसान द्वारा इंसान पर, मानव द्वारा मानव पर जुल्म होता रहा और मानव ख़ून की नदियां बहती रही। कब यह इंसान खुद को सभ्य कहने वाला सच्चा मनुष्य बनेगा, जो प्रेम अमन दोस्ती की बात करेगां ऐसे ही ईराक ईरान की लड़ाई जो शिया और सुन्नी की जंग थी, उसमें भीी अनुमान के हिसाब से 10 लाख लोगों की मौत हो गई, जबकि दोनों धड़े अल्लाह, कुरान और पैगम्बर पर यकीन रखने वाले वाले थे। फिर भी खून बहाया जाता रहा। अफगानी घरेलू युद्ध तथा तालबानियों के कई किस्से सुनने को मिल जाते हैं, जिसमें 10-15 लाख लोगों के बीच में मासूम और मजलूम लोगों को अपनी जान से हाथ ध ोना पड़ा। इराक और कुवैत की लड़ाई में भी अनगिनत लोगों को बलि देनी पड़ी। जिसके पीछे अमेरिका का तेल का लालच काम करता है। आए दिन फिलिस्तिनियों और इजराईलों की झड़प में कितने लोग मौत के शिकार हो जाते हैं। सीरिया अल्जीरिया, दमस्क आदि में आज भी खून की होलियां खेली जा रही हैं। वो दिन कब आएगा, जब मनुष्य सही मायनों में मनुष्य बनेगा।

दुनिया में शरीफ और नेक इंसान जो शांति की कामना करते हैं। भाईचारे को बढ़ावा देना चाहते हैं। कब तक इस जुल्म को देखते रहेंगे। इस धरती के इंसान ने अपनी इर्द-गिर्द सीमा के नाम बारूद के ढेर लगा रखे हैं। अभी और भी बढ़ौतरी करता जा रहा है।

एटम बम के बाद अब हाईड्रोजन बन कर तैयार हो चुका है। एटम् की खतरनाक होने का अनुमान इस बात से लगा सकते हैं, जापान के दो शहर नागासाकी और हिरोशिमा में 3 लाख 20 हजार लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी और लंबे समय तक रेडियो धर्मिता के कारण लूले, लंगड़े अपंग बच्चे जन्म लेते रहे, परन्तु मनुष्य आज भी नए-नए हथियार बनाने में जुटा है। कई प्रकार के लड़ाकू हवाई जहाज बना रहा है। ऐसे हवाई जहाज भी बन चुके हैं जो बगैर पायलट के उड़ सकते हैं। वह कितने ही हथिया अपने साथ लेकर अपने विरोधी देशों को तबाह करके आ सकते हैं। हर देश हर साल अपने देश की शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए हथियारों का प्रदर्शन करते हैं। जैसे हमारे यहां 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रदर्शित करते हैं, जिसका केवल एक ही मकसद है विरोधी को मारना।

इंदिरा गांधी के समय जब पाकिस्तान के दो टुकड़े हुए, तब जनरल नियाजि ने हजारों फौजियों के साथ आत्मसमर्पण किया था। इस युद्ध में भी कितने लोगों को मौत की नींद सुला दिया गया था। विशेष रूप से नारियों की बहुत ही प्रताड़ना की गई और उनके साथ व्याभिचार किया गया। जब-जब भी कहीं युद्ध होते हैं, उसका सबसे बड़ा शिकार नारी को ही बनना पड़ता है।

जितनी हथियारों पर राशि खर्च करते हैं। अगर इसी राशि को मानव भलाई पर खर्च किया जाए, तो हर व्यक्ति को राजकुमार जैसा जीवन दिया जा सकता है। बच्चों को जवान करने में लिखाने-पढ़ाने में काफी मेहनत चाहिए। मां-बाप को काफी मेहनत करनी पड़ती है। तब जाकर कहीं मानव का बच्चा आत्मनिर्भर हो सकता है। जबकि इसको समाप्त करने के लिए 5 मिनट की जरूरत नहीं पड़ती। एक गोली ही काफी है। बम बरसाने वाले हवाई जहाज पर जितना खर्चा आता है। उतने पैसे से हम 50-50 बैड के स्वास्थ्य केंद्र बना सकते हैं। हम कब तक हम सच्चे मनुष्य बन पाएंगे। जब हम केवल एक-दूसरे के लिए समाज में जीना पसंद करेंगे। बदले की भावना विस्तारवाद, नस्लवाद, रंगमत भेद, क्षेत्रवाद का छुटकारा मिलेगा। मनुष्य-मनुष्य का सच्चा मित्र साबित होगा। इसका दायित्व अमन पसंद शक्तियों पर लागू होता है कि वह दुनिया में युद्धों से

शेष पृष्ठ 49 पर.....

बंद पिंजरे से आजादी

-अजायब जलालआना
मो. 9416724331

बात कुछ समय पहले की है। राजस्थान के पीलीबंगा के पास गांव में एक परिवार में अजीब प्रकार की घटनाएं घटित हो रही थी। ये घटनाएं देखकर अच्छा भला आदमी भी डरकर भाग जाये। इस घटना को जानने वाले और परिवार के हमदर्द ने हमें (तर्कशीलों) उस परिवार की सहायता के लिए आग्रह किया।

उन्होंने हमें फोन पर सारे घटना क्रम की यूं जानकारी दी। वह परिवार आर्थिक तौर पर कमज़ोर है। उस परिवार में कुल पांच मैम्बर हैं, जिनमें मियां बीवी और दो उनके लड़के, एक लड़की जो मकान मालिकन की भतीजी है, वह 8वीं पास करके अब घर ही रहती है। लड़की को बहुत तेज दौरे पड़ते हैं, इसके इलावा उस घर में पशुओं को भी दौरे पड़ते हैं। उनके पशु मर भी रहे हैं। साथ ही घर में शाम को बड़ी बड़ी ईंटों की बरसात भी होती है। जब पशुओं का दूध निकाल कर रखते हैं, तो वह जल्दी ही खून में तबदील हो जाता है। घर में रखे राशन का टोना बन जाता है। खेत से हरा चारा लाते समय लड़के को पीछे से धक्के लगते हैं, देखते देखते लड़की के बाजुओं पर बंधे ताबीज अपने आप टूट कर गिर जाते हैं। और सभी के सामने लड़की की उंगलियों में सुईयां चुभ कर अपने आप चमड़ी में धँसती चली जाती हैं।

इस प्रकार उन्होंने उस परिवार में घटित अनेकों चमत्कारिक घटनाओं का विवरण हमें सुनाया, और आगे बताया कि, इन घटनाओं के कारण वह घर पूरे क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। घर को लूटने के बाद अब टोना-टोटका करने वाले बाबाओं ने भी हाथ खड़े कर लिए हैं।अब समस्या का समाधान नहीं हो पा रहा है, और गांव के लोग उनसे दूरी बनाकर रहने लगे हैं, क्योंकि वे उस घर को भूत-प्रेत आत्माओं का श्विास मानने लगे हैं। हमने उस हमदर्द साथी से अपनी कुछ जरूरी शर्तें रखीं और सहयोग का वादा लिया। तर्कशील सोसाइटी इकाई कालांवाली की तीन मैम्बरी कमेटी जिसमें शमशेर चोरमार, हरदेव अग्रोईया और साथ में मैं भी था।एक निश्चित दिन उस घर पहुंचे। वहां लोगों का हजूम आ जुड़ा। हमने उस भीड़ को वहां से जाने की अपील की और विश्वास दिलाया कि अब ये घटनाएं इस घर में घटित नहीं होंगी।

प्लानिंग के अनुसार परिवारिक सदस्यों से अलग-अलग बातचीत करने का सिलसिला शुरू किया गया। उस घर में पांच की बजाए 6वां मैम्बर जो मालकिन की बहन यानि उन लड़कों की मौसी का लड़का था। अक्सर वह अपनी मौसी के पास आ जाया करता था। इन 6 मैंबरों ने उपरोक्त घटनाओं की पुष्टि करते हुए बताया कि ये सारा कुछ हमारी आँखों के सामने घटित होता है। उनसे अलग-अलग बातचीत के बाद हमने परिवार से दूर बैठकर घटनाओं को जोड़ना चाहा, जिसमें पशुओं को दौरे पड़ने और लड़की को सुईयों का अपने आप चमड़ी में धँसते चले जाना आदि समझ से परे था। हमने यह तो निष्कर्ष निकाल लिया कि लड़की को कोई समस्या है।

अब हमने अपना सारा ध्यान लड़की पर केंद्रित किया, और उनसे पूरी हमदर्दी, तथा प्यार से उनके परिवार और जीवन के बारे में जानना चाहा। उसकी समस्यों का पक्का समाधान करने का आश्वासन देने पर उसने हमें बताना शुरू किया, 'मैं अपनी मामी के पास रहती हूँ, मेरे माता-पिता की बहुत समय पहले मौत हो चुकी है। मेरा एक छोटा भाई है जो मेरी मौसी के पास रहता है। मुझे मेरे भाई की याद बहुत सताती है। मुझे उसकी पढ़ाई का फिक्र है। मैं स्वंय भी पढ़ना चाहती हूँ। मेरा मामा-मामी किसी ऐसे 40 वर्षीय आदमी से मेरी शादी करना चाहते हैं, जो ज्यादा जमीन का मालिक और विधुर है। क्या मैं

शादी के लायक हूँ ? मैंने आठवीं पास की है, अब मेरी मामी मुझे आगे पढ़ाना नहीं चाहती। मैं पढ़ना चाहती हूँ। मेरे आठवीं में बहुत अच्छे अंक आये हैं। मैं अपने भाई को अपने दम पर पढ़ा लिखा कर उसे कामयाब करके ही शादी करवाने का इरादा रखती हूं। क्या आप लोग मेरी मदद कर सकते हो? अब वह लड़की अपनी बातों को बड़े आत्मविश्वास के साथ रख रही थी। उसकी आँखों से निकलते आंसू अब नदी बन चुके थे। हमने उसे हौंसला देते हुए कहा, 'पुत्तर, रो मत। आप हमारी बेटी हो। आप महान हो। आप विश्वास करो हम आपके पूर्ण सहायक होंगे। परन्तु आपको कुछ हमारी बातें माननी पड़ेंगी। वो लड़की हमारी बात को बीच में ही टोक कर गरजकर बोलने लगी, 'आप यहीं पूछना चाहते हो न कि ये सब कौन कर रहा है? हाँ मैं करती हूँ, क्या आप मुझे इस घर के पिंजरे से आजादी दिलवा सकते हो? मैं इस घर में सुरक्षित नहीं हूँ। ये मौसी का लड़का मुझ पर बुरी नीयत रखता है। इस घर की छोटी चारदीवारी होने के कारण, मुझे बस वाले घूर घूर कर देखते हैं। ये सब कोये हैं। मुझे यहां से आते जाते लोग खा जाना चाहते हैं। हम उस निडर लड़की को प्यार से शांत कर रहे थे। परन्तु अब हमारी आँखें भी नम थी। हमने अपने आपको सुचेत रखते हुए इस सारी कहानी को समझ लिया था। लड़की को शांत रहने और अच्छे परिणाम के इंतजार में रहने की सलाह दी। परन्तु अब उसे ऐसे कार्यों से सदैव दूर रहने की चेतावनी भी दी, जिसको उसने शांतमन से स्वीकार कर लिया था।

परिवार का हमदर्द जो प्रभावी भूमिका निभाने में समर्थ था, उसको हमने सुझाव दिए जिसमें अब लड़की इस घर में नहीं रहेगी। वह अपनी इच्छा से अपने भाई और मौसी के पास रहेगी। उसका 9वीं में दाखिला हर हालत में करवाया जाए। अब शादी के बारे में चर्चा न की जाये आदि। बातों को अमली रूप से लागू करने की, जिम्मेवारी परिवार के हमदर्द की लगाई गई।

वो लड़की हमारी बात को बीच में ही टोक कर गरजकर बोलने लगी, 'आप यहीं पूछना चाहते हो न कि ये सब कौन कर रहा है? हाँ मैं करती हूँ, क्या आप मुझे इस घर के पिंजरे से आजादी दिलवा सकते हो? मैं इस घर में सुरक्षित नहीं हूँ।

'पशुओं को दौरे क्यों पड़ते थे? बात की तह में जाने पर हमने पाया कि जब दोपहर गर्मियों में पशु मकान के अंदर बैठे उगाली कर रहे होते, अचानक लड़की एक लट्ठ लेकर किसी बैठे पशु के नाखुन पर लट्ठ की नोक से जोर से वार करती, तो पशु डर के मारे एक दम खड़ा हो जाता। जिससे घर में एक दम जोर की आवाज सुनाई देती। लड़की द्वारा ये कह देने पर कि पशु दौरा पड़ने कारण गिर गया था, अब तो ये ठीक है, इस बात को बाकी परिवार सत्य मान लेता। दो तीन छोटे पशुओं की मौत किसी बीमारी के कारण हुई थी। परन्तु अन्धविशवासी परिवार उसे घटित घटनाओं से जोड़ कर देख रहा था।

सूइयों का धँसनाः

जब कोई चेला बाबा घर में आता, तो घर का माहौल ही डरावना बन जाता। अकेले में लड़की स्वंय अपने नाखुनों के साथ लगती चमड़ी में सुईयों को धीरे धीरे धँसाती रहती।आम लोग इसे समझ नहीं पा रहे थे।

इसी प्रकार ईंटें गिरना, लड़के को धक्का लगना, दूध से खून बनना, टोने का बनना आदि घटनाएं घर के भीतर से भी और बाहर से भी आने वाले बाबाओं व उनके एजेंटों द्वारा डर को बरकरार रखने के लिए की जा रही थी।

दूसरे ही दिन उस लड़की को उसकी मौसी के पास छोड़ दिया गया था, और उसे उसके छोटे भाई के साथ स्कूल में दाखिल भी करवा दिया गया, कई वर्षो बाद वही लड़की मा.शमशेर को कहीं अचानक मिली और पूछा क्या आप मुझे जानते हो? मैं वही लड़की हूँ, राजस्थानवाली वाली जिसको आपने मुझे बन्द पिंजरे से आजाद करवाया था। आपका धन्यवाद! अब मेरी शादी हो चुकी है मैं अब बहुत खुश हूँ।

***

आओ कुछ देर के लिए नास्तिक हो जाएं

– नवीन

ऐसा अक्सर होता है कि मैं जब कहता हूं 'मैं नास्तिक हूँ' तो लोग कहते हैं तुम निराश हो इसीलिये ऐसी बात कर रहे हो। उनके अनुसार सिर्फ असफल और निराश व्यक्ति ही नास्तिक होता है। नास्तिक होने को किसी मुम्बईया फिल्म की तर्ज पर भगवान से गुस्सा हो जाने की तरह लिया जाता है और माना जाता है कि अंत में व्यक्ति को भगवान के पास आना ही होगा। नास्तिकता भगवान के प्रति किसी तरह के गुस्से से नहीं बल्कि एक बहुत लम्बी विचार-प्रक्रिया तथा तर्क पर आधारित होती है। यह असफलता या निराशा से नहीं बल्कि अपने दम पर सफल हो सकने के विश्वास से पैदा होती है। अगर आप नास्तिक हैं तो आप शत-प्रतिशत प्रयास करेंगे ना कि किसी आस्तिक की तरह आधा-अधूरा काम करके भगवान से उम्मीद करेंगे कि वो साथ दे। आस्तिक लोग असफल होने पर भगवान को दोष दे सकते हैं मगर नास्तिक कहता है कि मेरे प्रयास में कमी थी क्योंकि उसके लिये किस्मत कुछ नहीं होती। सब कुछ सिर्फ कर्म और कर्म ही होते हैं।

भगवान इंसान द्वारा ही बनाया हुआ हैं। हम जिन सवालों का उत्तर नहीं जानते उन्हे भगवान पर छोड़ देते हैं। इसी तरह धर्म भी इंसान ने ही खुद को बांधे रखने और डराने के लिये बनाया है। धर्म की बात इसीलिये कर रहा हूं क्योंकि धर्म और भगवान एक दूसरे से जुडे हुए हैं अगर धर्म इंसान ने बनाया है तो ईश्वर भी इंसान ने ही बनाया है। आप ध्यान से सोचेंगे तो हमारी हर धार्मिक प्रथा के पीछे एक वैज्ञानिक कारण पायेंगे।

एक उदाहरण देता हूं – हम कहते हैं कि बारिश के समय देव सो जाते है इसीलिये शादी-ब्याह नहीं किये जा सकते। जब देवउठनी-ग्यारस पर देव उठते हैं तब शुभ कार्य शुरु होते हैं। जब हमारा धर्म बनाया गया तब आवागमन के साधन नहीं थे। बारिश के समय में जब नदी-नाले पूर होते थे, रास्ते बन्द हो जाते थे और लोग एक दूसरे से सम्पर्क भी नहीं कर पाते थे ऐसी स्थिति में कोई विवाह सम्बन्ध होने का सवाल ही नहीं पैदा होता। इसीलिये कहा गया कि देव सो गये है और यह एक नियम बना दिया गया। चूंकि हर समय हर बात को तर्क की सहायता से नहीं समझाया जा सकता है इसीलिये भगवान का डर बता दिया गया और यह निश्चित हो गया कि अमुक समय में कोई शादी नहीं होगी। धर्म इंसान को नियमों में बांधने के लिये बनाया गया। ऐसे नियम जिनके अनुसार चलने पर जीने में सहूलियत हो। अगर नियम होते हैं तो उनके टूटने का खतरा भी होता है। लोग नियमों को ना तोडें यानि धर्म पर चलें इसके लिये कोई डर बताया जाना आवश्यक था इसीलिये भगवान को जन्म दिया गया परंतु समय के साथ जब नियमों में कोई बदलाव नही होता तो वो अप्रासंगिक हो जाते हैं जैसा कि आज हो रहा है।

वास्तव में भगवान का जन्म ही दुर्बलता से हुआ है। यह उन लोगो के लिये है जो कमजोर और भीरू हैं। अगर आप स्वयं अच्छा और बुरा समझते हैंय सही और गलत में भेद कर सकते हैं तो आपको भगवान की कोई जरूरत नहीं। अपनी यह बात एक उदाहरण से समझाने की कोशिश करता हूँ। जब बच्चा छोटा होता है तो उसे सुलाने के लिये माँ कहती है कि बेटा सो जा वरना बाबा आ जायेगा तो बच्चा बाबा के डर से सो जाता है। यहां स्वघोषित मां धर्म है बेटा आस्तिक और बाबा है ईश्वर जो वास्तव में है ही नहीं। हालांकि माँ बेटे के भले के लिये उसे सुला रही है पर गलत तरीके से। अगर बेटा समझदार है तो उसे बाबा से डराने की क्या जरूरत ? कुछ ऐसी ही नास्तिकता है।

नास्तिकता तर्क पर आधारित है, आस्तिकता की तरह झूठी श्रद्धा और विश्वास पर नहीं। आस्तिक स्वयं कहते है कि भगवान आस्था का भूखा है। वास्तव में भगवान आस्था का भूखा नहीं बल्कि उसका अस्तित्व ही आस्था से है। भगवान आस्था के बिना कुछ नहीं। तभी तो सारे चमत्कार और यहां तक की दुआयें भी विश्वास ना होने पर असर नहीं करती। आस्तिक जिसे भगवान की शक्ति कहते हैं वो वास्तव में विश्वास की शक्ति होती है परंतु नास्तिक किसी भगवान नाम की स्वनिर्मित संस्था में विश्वास करने की बजाय खुद में विश्वास करना पसंद करते हैं। आस्तिक कायर होता है जिसे अपने साथ भगवान का साथ चाहिए होता है। मुश्किल पलों का सामना करने में उसे डर लगता है। ऐसी स्थिति में भगवान उसे एक मनोवैज्ञानिक आधार देता है जिससे प्रार्थना करके उसे थोडी राहत मिलती है। नास्तिक भगवान को नहीं मानता इसीलिये खुद ही लड़ता है चाहे वक्त कैसा भी हो ।

अब एक बार फिर से सोचिये। जो नहीं मानता उसके लिये भगवान कुछ नहीं है और जो मानता है उसके लिये भगवान सब कुछ है इसका मतलब हुआ कि भगवान इतना कमज़ोर है कि वो सिर्फ मानने से ही जिन्दा है तब तो यह महज भ्रम से ज्यादा कुछ नहीं!

आखिरी में एक बात फिर कहूंगा कि नास्तिकता निराशा का नहीं बल्कि खुद और सिर्फ खुद पर विश्वास का नाम है। अगर सारे पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर आप खुले दिमाग से सोचेंगे शायद । ***

व्हाटस्एप्प के तर्कशील ग्रुप से

यह समझ में नहीं आता कि साठ-बासठ के बाद लोगों को समाज सेवा, भजन कीर्तन, मंदिर मस्जिद, तीर्थ यात्रा.. की कैसे सूझती है। यह सब थोड़ा बहुत पहले से क्यों नहीं होता? कुछ लोग सेवा निवृत्ति के पश्चात् पेंट-शर्ट छोड़ कर धोती कुरता पहनते हैं, कोई दाढ़ी रखने लगते हैं। परिवर्तन..?

एक शिक्षक अपनी सेवा निवृत्ति के अवसर पर बोले 'मैं अब भागवत शरण में जीवन बिताऊंगा। पता नहीं वे अब तक किसकी शरण में थे?

-एन आर प्रधान 940794259

मजबूर पिता द्वारा कहे गये शब्दः

बोझ ईंटों को और बढ़ा दो साहब
मेरे बच्चे ने आज
एक खिलौने की फरमाईश की है।

-के.कुमार राकेश
(9896705658) द्वारा प्रेषित

पत्रः

तर्कशील पथ पत्रिका में व्हट्सएप के तर्कशील ग्रुप से कॉलम बड़ा अच्छा लगा। कालम के नीचे एक लाइन छापें -तर्कशील ग्रुप में जोड़ने के लिए इस नंबर पर अपना नाम और पता भेजें।

इससे जो लोग तर्कशील पथ पत्रिका दोस्त के यहां पढ़ते हैं वह भी तर्कशील पथ पत्रिका के व्हट्सएप ग्रुप से जुड़ सकें।

- परमदीप (97290 31641)

हमने कभी सोचा है ऐसा क्यों है?

जिन देशों में गाय की पूजा नहीं होती, वहां की गायें ज्यादा दूध देती हैं और प्लास्टिक व सड़कों का कचरा भी नहीं खाती।

जिन देशों में किसी नदी में स्नान करने से पाप धुलने की बात नहीं कही जाती, वहां की नदियां अधिक साफ व शुद्ध पायी जाती हैं।

जिन देशों में धर्म व्यक्तिगत विषय की चीज है वे देश ज्यादा विकसित और ताकतवर हैं और वहां कभी सांप्रदायिक दंगे नहीं होते।

जिन देशों में साधू व मौलवी अधिक नहीं होते उन देशों में में वैज्ञानिक अधिक होते हैं।

केवल बातें करने से बदलाव नहीं आने वाला, ज़रूरत सोच बदलने की है, कमी हमारी मानसिकता में भी है। *-धनी प्रसाद 9417269985*

●●●

नास्तिक न तो बना जा सकता है और न बनाया जा सकता है बल्कि यह एक स्थिति है जब व्यक्ति शैक्षिक, बौद्धिक, तर्क व विचारशील हो जाता है तो उसके अंदर से अंधविश्वास व पाखण्ड समाप्त हो जाता है। इसके बात जो स्थिति बचती है वह है नास्तिकता।-जय विज्ञान। *-रतन लाल गौत्रा*

●●●

विज्ञान सवाल करने वालों को प्रोत्साहित करता है जबकि धर्म दुत्कारता है, क्योंकि यहां सवाल करना निषेध है। *- सुरेश सोनी।*

●●●

आस्था का दीपक अंधविश्वास के तेल से जलता है और तर्क की फूंक से बुझ जाता है।

-सुरेश कटारिया

●●●

दबे-कुचले लोगों का नाटककार-प्रो. अजमेर औलख

-बलबीर चंद लौंगोवाल

प्रसिद्ध पंजाबी कवि प्रो. मोहन सिंह लिखते हैं:

'दो टुकड़ों में भूमि टूटी
एक महलों का एक ढोकों (छप्पर) का
दो धड़ों में खल्कत बंट गई,
एक लोगा का एक जोंगों का।'

जोंगों द्वारा समाज में की जा कर ही लूट के खिलाफ लोगों को वर्ग संघर्ष का संदेश देने वाला नाटककार प्रोत्र अजमेर औलख इस शोषणकारी व्यवस्था की अलामत भयानक बीमारी के साथ संघर्ष करता हुआ 15 जून को अपने सहयोगियों (मजदूरों/किसानों/मेहनतकश लोगों) को अलविदा कह गया। एक नाटककार एवं रंगकर्मी के रूप में उसने अपने लाटकों में इस समाज में हाशिए से बाहर धकेले गए लोगों के दर्द की पेशकारी ही नहीं की, बल्कि 'जम्हूरी अधिकार सभा, पंजाब' के नेतृत्वकर्ता के रूप में इस अन्याय के खिलाफ लड़ाई में शामिल भी रहा। जल, जंगल, जमीन की लड़ाई लड़ रहे आदिवासियों पर सरकार द्वारा थोपे गए अघोषित युद्ध के विरुद्ध 'ऑप्रेशन ग्रीन हंट विरोधी फ्रंट' के कनवीनर बन कर वे, उन पर हो रहे ज़बर-ज़ुल्म को लोगां में ले कर गए। केंद्रीय पंजाबी लेखक सभा के प्रधान बन कर उन्होंने लेखकों को बताया कि 'प्रत्येक साहित्यिक रचना वर्गीय होती है एवं साहित्यकार को हमेशा जन साधारण के पक्ष में खड़े होने चाहिए, न कि शोषक जोंकों के'।

'अपनी मृत्यु के उपरांत कोई भी धार्मिक रस्में न करने एवं सम्मान समागम में किसी भी बुर्जुआ राजनैतिक नेता को समय न देने' की वसीयत करके प्रो. औलख ने स्पष्ट संदेश दिया कि किस प्रकार से स्पष्ट रूप से प्रतयेक लोकपक्षीय लेखक की सोच वैज्ञानिक होनी चाहिए। प्रो. औलख कभी भी पुरस्कारों व सम्मानों के पीछे नहींदौड़े बल्कि अपनी ज़मीर की आवाज़ के आधार पर उन्होंने सम्मानों को समय-समय पर ठोकरें मारी। इस शोषणकारी व्यवस्था ने यद्यपि अपने 'जन पक्षीय' चेहरे के भ्रम लोगों में बनाए रखने के लिए उन्हें साहित्य एकादमी एवं भाषा विभाग के बड़े से बड़े सम्मान प्रदान किए। यहां तक कि गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी ने उनको डी.लिट की ऑनरेरी डिग्री के साथ भी सम्मानित किया। भारत में जब वैज्ञानिक चिंतन की बात करने वाले लेखकों/तर्कशील नेताओं, डा. नरेन्द्र दाभोलकर, का. गोबिन्द पानसरे, प्रो.एम.एम. कुलबर्गी आदि की साम्प्रदायिक शक्तियों के द्वारा हत्याएं होती हैं और भारत की सरकार मूक दर्शक बन कर कातिलों को शह देती है तो इस सरकार को उसके प्रदान किए गए सम्मान रोष स्वरूप वापिस करने वालों में प्रो. अजमेर औलख अग्रणी रहते हैं। जन साधानरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता, कलम की बेबाकी एवं भयरहित प्रस्तुतिकरण से जनता में उनका कद इतना ऊँचा उठ चुका था कि पंजाब सरकार का भी उनके इलाज का खर्च वहन करने, मंत्रियों के द्वारा अस्पताल में जा कर उनका हालचाल पूछने एवं विधान सभा में उनकी मृत्यु पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह भी प्रकार से जानते हुए भी कि उनकी कलम सारी उम्र इन लोगों के खिलाफ ही चली है-यह है लोकशक्ति की ताकत!

औलख ने सैकड़ों नाटक-लोहे का बेटा,अवेसले युद्धों की नायिका, अंधे निशानची, सत्त बेगाने, सलवान, चिनाब का पानी, निक्के सूरजां दी लड़ाई, टूटी बाहें, जब खलियान रोते हैं, अपना-अपना हिस्सा आदि के द्वारा समाज की दुखती रगों पर हाथ रखा तथा कई प्रसिद्ध लेखकों की कहानियों का नाटकी रूपांतरण किया। जिस दौर में औलख का जन्म हुआ, उस समय में जागीरदारों का गुज़ारों पर जबर-ज़ल्म चोटी पर था। मुजारों की एवं मुजारा महिलाओं की जागीरदारों

के गुण्डे खेतों से गांव में प्रवेश करते समय तलाशी लेते थे कि कहीं वे कोई गन्ना अथवा मक्की के भुट्टे घास की गठड़ी में छुपा कर तो नहीं ले जा रहे। इसी तलाशाी के दौरान गांव की एक मुजारा महिला को घास की गठड़ी में से मक्की के भुट्टे निकलने पर इन गुण्डों द्वारा बेतहाशा पीटा गया। इस पर औल्ख लिखते हैं –'वह औरत मेरी मां थी'। शोषणकारी व्यवस्था के विरुद्ध बग़ावत के बीच उसी दिन ही उनके मन में बोये गए थे। अपनी आत्मकथा का नाम उन्होंने 'नंगा पेट' के नाम से विचार किया था जिसके कुछेक काण्ड (अध्याय) उनकी जीवन स्मृतियों की पुस्तक 'भुनी हुई छल्ली' में प्रकाशित हुए हैं। इसी कारण सुरजीत पात्तर लिखते हैंः

'इस तपते हुए थल में
दूसरा कौन खड़ा होगा
इसी ही थल में उगा हुआ
कोई वृक्ष ही होगा।'

लोक नाटककार गुरशरण सिंह (भाअ जी) के पथ का राही इस नाटककारको लाखों लोगों ने 'गुरशरण सिंह लोक कला सलाम काफिला' के द्वारा 'भाई लालो कला सम्मान' के साथ बरनाला की साहित्यक भूमि पर पर 8 मार्च. 2015 को सम्मानित किया। यह था लोगों के द्वारा, लोगों के नाटककार का सम्मान। सामंती चौधर, जाति-पांति एवं पुरुष प्रधानता की अकड़ उसकी जूझारू लेखनी की विशेष चोट के केंद्र थे। कार्पोरेट हमले के खिलाफ वह खुलकर बोलता रहा।

अंतिम समय तक रंगमंच के क्षेत्र में डटे रहने वाले इस योद्धा को तर्कशील साथियों का सलाम! किसी महान् व्यक्तित्व को स्मरण करने का भावार्थ उसकी सोच को आगे बढ़ाना होता है। आओ, इस सोच को और आगे तक ले करक जाएं।

जातियां हमारी नहीं दो, हमारी जाति बस एक।
हमारी जाति है किरत, साझा हैं किरतों के हित।
तोड़ो जातियां एवं जमातें, बनो कमेरों के मित्र।
हो जाओ लालो सभी इकट्ठे, करो भागोओं को चित

-(मो. औलख के नाटक 'ऐसे जनविरले संसार')

-हिन्दी अनुवादः बलवन्त सिंह, लेक्चरार)

पृष्ठ 43 का शेष..(मनुष्य ने मनुष्य का)

परहेज करें और मानव भलाई के लिए कार्य करें।

जिन साधनों को हम मानव को मारने में प्रयोग में लोते हैं, उन्हें सोच बदलने से हम अपनी पूरी शक्ति मानव विकास और सुख-सुविधाओं के लिए प्रयोग में लाएंगे। काल्पनिक स्वर्ग और नरक से बाहर हो वास्तविक रूप में इस धरती को हमने स्वर्ग बनाना है।

धर्म या मजहब के नाम पर जन्नत, दोजख या स्वर्ग-नरक से हर और स्वार्थ से बाहर होकर अपनी पूरी शक्ति को इस पृथ्वी को ही स्वर्ग में बदलें। मानव ने अपने स्वार्थ में आकर चारों और प्रदूषण फैला दिया है। जल और वायु ये सब इंसानी मौत का कारण बन रहे हैं। प्रदूषण के कारण कई प्रकार के रोग पैदा हो रहे हैं जंगल जिससे हमें जीवन मिलता है, विशेष रूप से आक्सीजन जो जीवन की पहली आवश्यकता है, पेड़-पौध ाों की देन है। अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए जंगलों की कटाई की है। इकसे लिए भी हमें संकल्प लेना होगा। हम ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं जो वायुमंडल को शुद्ध करने में सहायक होते हैं। शहरों के कलकारखानों का गंदा जल शुद्धिकरण के बाद नदियों में डाला जाए। नदियां जो हमारे जीवन के लिए लाभदायक हैं, यह आम कहावत है जल ही जीवन है। अगर जल गंदा होता रहा, तो हम कहां बचेंगे।

अगर हमें इस धरती ग्रह को बचाना है और मानव और प्राणी जगत को सुरक्षित रखना है। हमें हर प्रकार के युद्ध से बचना है, ताकि मानव का मानव द्वारा खून न बहाया जा सके। मानव का मानव द्वारा शोषण समाप्त करे, एक समानता का युग लाना है, जिससे इस धरती पर रहने वाले जीव-जंतु सुखमय जीवन बिता सकें।

नोट : खालिस्तान उग्रवादियों ने लगभग 30 हजार हिन्दुओं को मौत के घाट उतार दिया था। ऐसे ही इंदिरा गांधी के वध के बाद सिख दंगों में अनुमान से 2774 सिख सदा के लिए मौत की नींद सुला दिए गए।

***

लेखकों/पाठकों के लिएः-

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor@gmail.com अथवा वट्सएप न. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

हरियाणा तर्कशील केंद्र निर्माण के लिये प्राप्त सहयोग

1. ईश्वर सिंह, गांव सिंघ पुरा, जिला जींद ने 5000 रू० (पांच हजार रूपये) का सहयोग भेजा।

2. डा. राजेन्द्र कुमार, गांव बकाला, जिला कैथल ने 1100 रू० (ग्यारह सौ रूपये) का सहयोग भेजा

तर्कशील सोसायटी हरियाणा उक्त दोनों साथियों से प्राप्त सहयोग के लिये उनका धन्यवाद करती है।

रागनी

मैं पत्थर का शिवलिंग

-रामेश्वर दास 'गुप्त'

दीन धर्म की चाल-ढाल ईब, पहल्यां की भांति न मिलती
मंदिर-मस्जिद सैं गली-गली, पर मन की शांति न मिलती,
धोखेबाजों के हाथ धर्म की, डोर देखल्यो ईब आ गी,
कलयुग वाली सोच दिलों म्हं, घोर देखल्यो इब आ गी
भ्रष्टाचारियों की पीढ़ी पांदी, शो देखल्यो इब आ गी,
रात की गेल गठजोड़ करै, वो भोर देखल्यो इब आ गी
जै धर्म हो ठीक-ठाक तो, न्यू गल म्हां फांसी न मिलती।

हाथ सेक रे स्याणे लोग, ला धर्म की आग देखल्यो,
पहल्यांगोधरा फेरसारे, रच दिया खून फाग देखल्यो,
मैं पत्थर का शिवलिंग सूं,चौगिर्दे लिपटे नाग देखल्यो, शीश
एकाणा शीश कटाणा, होग्या म्हारा भाग्य देखल्यो,
जैसी धर्मा म्हं मिल ज्या, उसी नीत दुभंती न मिलती।

तड़की जिब अखबर पढ़ैं, रोज खबर येमिलीज्या रै,
किसी बाहम की गेल ढेरे म्हा, होया जब ये मिलज्या रै,
चढ़ावा लाखों का ख गे, ना करैं सबर येमिलज्या रै,
म्हारी किस्मत म्हं बाकी सै, बहुत सफर ये मलज्या रै।
भ्रम जाल नै काटण खातिर, कोय ज्ञान-दरांती न मिलती।

रोटी-कपड़े का हल काढया हो, एक मिशाल बता द्यो,
अंधविश्वास तै न्यारा इसका, कोई एक कमल बता दयो,
'रामेश्वर' कोई जल्दी ना सै, कर कै पड़ताल बता दयो,
धर्म के कारण वो आम आदमी, होया खुशहाल बता द्यो,
दीन-धर्म तै खुशहाली की आई, कोई क्रांती ना मिलती।

-लेखक की पुस्तक 'डंगवारा'(2010) में से

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें।

-राज्य कार्यकारिणी

अलविदा! इकबाल रामुवालिया

उम्र भर लोगों को अपनी रचनाओं और भाषणों के द्वारा धार्मिक आडम्बरों, वहम भ्रम और धार्मिक कर्मकांडों पर हल्ला बोलने वाले गम्भीर चिंतक, कवि, लेखक, कविसर (पंजाबी में गायन की एक विद्या) तथा सफल अध्यापक इकबाल रामुवालिया नहीं रहे। पक्के इरादे के साथ उन्होनें कैंसर की बिमारी का सामना किया और 17 जून को अन्तिम श्वास लिया। तर्कशील विचारों के इकबाल की अन्तिम इच्छा अनुसार परिवार द्वारा अन्तिम विदाई समारोह में कोई धार्मिक रस्म नहीं की गई। तर्कशील लहर से जुड़े इकबाल का मानना था कि इस संसार में कोई दैवी शक्ति नहीं है न ही इसे कोई चलाने वाला है, यह स्वचालित है। वे अपने विचारों को रेडियो, टीवी, अखबारों के माध्यम से जारी करते थे। साहित्य के क्षेत्र में उन्होंने अनेक किताबें भी लिखी जिनमें आत्मकथा 'सड़दे साज सरगम' तथा 'बर्फ चौं उगदिया' (पंजाबी) प्रमुख हैं।

लोगों की सहायता के लिए वे हमेशा ही तत्पर रहते थे, उन्होंने अनेक परिवारों और विद्यार्थियों को सही मार्ग दिखलाया। 27 जून को बरैंम्पटन करीमेटोरीयम एंड विजीटेशन सैंटर में धार्मिक रस्मों से मुक्त अंतिम विदाई समारोह में उनकी बेटियां सुक्खी, किन्नु बेटे नवराज गिल, इंदरजीत सिंह बल, मीडिया ग्रुप हमदर्द के अमर सिंह भुल्लर, साहित्यकार वरयाम संधु, इकबाल के नजदीकी मित्र सुरिन्द्र धंजल और तर्कशील सोसायटी कनेडा के चरणजीत बराड़ ने उनकी उपलब्धियों और जीवन यात्रा को नमन किया। तर्कशील सोसायटी अपने इस स्नेही की मृत्यु पर परिवार के दु:ख में सहभागी बनते हुए उनके तर्कशील चेतना के योगदान को सलाम करती है।

धन्यवाद...के साथ सुखद संदेश

तर्कशील लहर के देश-विदेश में बसे हुए मित्रों के प्रयास और सहयोग से तथा साथी भगवंत सिंह (यू.के.) के विशेष प्रयत्नों से तर्कशील भवन बरनाला (पंजाब) का काफी काम संपन्न हो चुका है। सुखद संदेश यह है कि अब भी निर्मल सिंह संघा, यू.के. (गांव संघे खालसा नकोदर) और साथी भगवंत सिंह से मिली आर्थिक सहायता से भवन में बने मुख्य हाल को साउंड प्रूफ करा दिया गया है, इन साथियों का धन्यवाद करते हुए हमें इस बात का भी अहसास है कि समाजिक चेतना और वैज्ञनिक दृष्टिकोण के प्रचार-प्रसार के उद्येश्य से निर्मित आदर्श केन्द्र के बनने वाले तर्कशील भवन का चल रहा कार्य पूरा करने के लिए अभी और आर्थिक सहायता की जरूरत है। समाज का भला चाहने वाले सभी मित्रों तर्कशील कार्यकताओं और अन्य चाहने वालों से प्रयास और त्रीव करने की जरूरत है।

राज्य कार्यकारिणी, तर्कशील सोसायटी पंजाब (रज़ि)

जुलाई 2017 Reg. No. HARHIN/2014/60580 वर्ष 4 अंक 4

जीवन को समानता, प्रगति और आजादी से जीने के उच्च आदर्श को पूरा करने के लिए
भर जवानी में देश कोम के लिए जान निछावर कर गए
ऐसे शहीद आप से कुछ आशा करते है...

13 जुलाई 1929

अंग्रेजी हुकूमत के जबर जुलम के खिलाफ लड़ते हुए, शहीद भगत सिंह के साथी जतिंदर नाथ ने अपनी गिरफतारी के बाद जेल में अमानवीय व्यवहार के खिलाफ ऐतिहासिक भूख हड़ताल शुरू की और ये ही भूख हड़ताल उनकी शहादत में परिवर्तित हो गई।

23 जुलाई 1906

अपने मन और विचारों के मुताबिक जीने वाले और हर वक्त अंग्रेजी साम्राज्य के विरूद्ध लड़ने वाले इंडियन सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के जनरल चंदर शेखर आजाद का जन्म दिन। जिन्होंने अपने अहद के अनुसार अंग्रेजों के हाथ जीवित न लगने के दावे के अनुसार अंग्रेजों से लड़ते हुए शहादत पा गए।

31 जुलाई 1940 शहादत शहीद उधम सिंह

किसी व्यक्ति की जान लेना मेरा उद्धेश्य नहीं, जालिम अंग्रेजों का राज भारतीयों के लिए घातक है। बड़े ज़मीदार और देश के उद्योगों के मालिक बन बैठे यह लोग देश के आम नागरिकों का खून निचोड़ रहे हैं, मजदूरों का जीने का हक छीन रहे है और आप ठाठ का जीवन जी रहे है।

11 अगस्त 1908

बंगाल के महान क्रांतीकारियों के साथ आजादी की अवाज बुलंद करने वाले खुदीराम बोस, जिन्हें मुजफ्फरपुर के मजिस्ट्रेट किग्जफोर्ड के कत्ल के मुकदमें में फांसी की सजा सुनाई। 19 साल का यह नायक 11 अगस्त 1908 को हंसते हंसते फांसी पर चढ़ गया। 12 तारीख के अखबारों ने उन्हें भावभीनी सलाम कहा।

If undelivered please return to :
Tarksheel
Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera ByPass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।